अंक ७

संस्कृत-पाठ-माला।

(संस्कृत भाषाका अध्ययन करनेका सुगम उपाय।)

सप्तम भाग।

लेखक और प्रकाशक।
श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,
स्वाध्याय मंडल, औंध (जि. सातारा.)

प्रथम वार १०००

संवत् १९८२, शके १८४७, सन १९२५

मूल्य ।-) पांच आने।

स्वाध्यायके ग्रंथ ।

[१] यजुर्वेदका स्वाध्याय ।

(१) य. अ. ३० की व्याख्या । नरमेध । मनुष्योंकी सच्ची उन्नतिका सच्चा साधन ।	१)
(२) य. अ. ३२ की व्याख्या । सर्वमेध । " एक ईश्वरकी उपासना । "	मू. ॥)
(३) य. अ. ३६ की व्याख्या । शांतिकरण । " सच्ची शांतिका सच्चा उपाय । "	मू.॥)

[२] देवता-परिचय-ग्रंथमाला ।

(१) रुद्र देवताका परिचय ।	मू. ॥)
(२) ऋग्वेदमें रुद्र देवता ।	मू. ॥=)
(३) ३३ देवताओंका विचार ।	मू. ≡)
(४) देवताविचार ।	मू. ≡)
(५) वैदिक अग्नि विद्या ।	मू. १॥)

[३] योग-साधन-माला ।

(१) संध्योपासना ।	मू. १॥)
(२) संध्याका अनुष्ठान ।	मू. ॥)
(३) वैदिक-प्राण-विद्या ।	मू. १)
(४) ब्रह्मचर्य ।	मू. १।)
(५) योगसाधन की तैयारी ।	मू. १)
(६) योग के आसन ।	मू. २)
(७) सूर्यभेदन व्यायाम ।	मू. ।=)

अंक ७

संस्कृत–पाठ–माला।

[संस्कृत भाषाका अध्ययन करनेका सुगम उपाय।]

सप्तम भाग।

लेखक और प्रकाशक।

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,

स्वाध्यायमंडल, औंध (जि. सातारा.)

प्रथमवार १०००

संवत् १९८२, शक १८४७, सन १९२५.

मूल्य ।-) पांच आने।

नामोंके रूप ।

नामोंके सातों विभक्तियोंके रूप बनानेकी रीति इस पुस्तकमें देनेका प्रारंभ किया है। पाठक इसका ठीक अध्ययन करेंगे तो उनको संस्कृत वाक्य बनानेका उत्तम अभ्यास हो जायगा।

साथ साथ क्रियाओंके रूपभी बताये जाते हैं। इनके अध्ययनसे पाठक क्रियापद स्वयं बनाकर उनका उपयोग कर सकते हैं।

आशा है कि पाठक इसका योग्य अध्ययन करके लाभ प्राप्त करेंगे।

स्वाध्यायमंडल,
औंध (जि. सातारा)
२०।९।२९

लेखक,
श्रीपाद दामोदर सातवळेकर.

मुद्रक—रा. रा. **चिंतामण सखाराम देवळे**, मुंबईवैभव प्रेस, सर्व्हंट्स ऑफ इंडिया सोसायटीज् होम, सँढर्स्ट रोड, गिरगांव-मुंबई.

प्रकाशक—**श्रीपाद दामोदर सातवळेकर**, स्वाध्यायमंडल, औंध (जि. सातारा).

ॐ

संस्कृत-पाठ-माला।

सप्तम भाग।

पाठ १

संस्कृतमें " **वचन** " तीन हैं। भाषामें केवल दो ही हैं। एक संख्याको " **एकवचन** " कहते हैं, और अनेक संख्याको " **अनेक-वचन** " कहते हैं। जैसे–

एकः अश्वः=एक घोडा (एकवचन)

बहवः अश्वाः=बहुत घोडे (अनेकवचन)

परंतु संस्कृतमें इनके बीचमें " **द्विवचन** " भी और एक होता है जैसा–

एकः गजः=एक हाथी (एकवचन)

द्वौ गजौ =दो हाथी (द्विवचन)

बहवः गजाः=बहुत हाथी (बहुवचन)

हिंदी भाषाके व्यवहारमें और संस्कृत भाषाके व्यवहारमें यह वचनोंका भेद ध्यानमें धरने योग्य है।

इस समयतक पाठक एकवचनके रूप बनानेकी योग्यता प्राप्त कर चुके हैं, और वैसे रूप बनाकर कई वाक्यभी पाठक बनाने लगे हैं। इसलिये अब तीनों वचनोंके रूप बनानेकी रीति बतानेका विचार किया है। आशा है कि पाठक इस पाठका योग्य अभ्यास करके शब्दोंके रूप बनानेकी योग्यता प्राप्त करेंगे।

इस पाठमें अकारान्त पुल्लिंग शब्दोंके सातों विभक्तियोंके और तीनों वचनोंके रूप इस प्रकार होते हैं—

गजः (हाथी)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गजः	गजौ	गजाः
संबोधन	(हे) गज !	(हे) गजौ !	(हे) गजाः !
द्वितीया	गजं	गजौ	गजान्
तृतीया	गजेन	गजाभ्यां	गजैः
चतुर्थी	गजाय	गजाभ्यां	गजेभ्यः
पंचमी	गजात्	गजाभ्यां	गजेभ्यः
षष्ठी	गजस्य	गजयोः	गजानां
सप्तमी	गजे	गजयोः	गजेषु

इनके अर्थ निम्नलिखित होते हैं—

प्रथमा {
१ गजः=एक हाथी
२ गजौ=दो हाथी
३ गजाः=बहुत हाथी
}

संबोधन
१ गज=हे एक हाथी !
२ गजौ=हे दो हाथिओ !
३ गजाः=हे बहुत हाथिओ !

द्वितीया
१ गजं=एक हाथीको
२ गजौ=दो हाथियोंको
३ गजान्=बहुत हाथियोंको

तृतीया
१ गजेन=एक हाथीने
२ गजाभ्यां=दो हाथियोंने
३ गजैः=बहुत हाथियोंने

चतुर्थी
१ गजाय=एक हाथीके लिये
२ गजाभ्यां=दो हाथियोंके लिये
३ गजेभ्यः=बहुत हाथियोंके लिये

पंचमी
१ गजात्=एक हाथीसे
२ गजाभ्यां=दो हाथियोंसे
३ गजेभ्यः=बहुत हाथियोंसे

षष्ठी
१ गजस्य=एक हाथीका
२ गजयोः=दो हाथियोंका
३ गजानां=बहुत हाथियोंका

सप्तमी
१ गजे=एक हाथीमें
२ गजयोः=दो हाथियोंमें
३ गजेषु=बहुत हाथियोंमें

पूर्वभागोंमें अकारान्त पुल्लिंग शब्द बहुत आगये हैं। उनके रूप पाठक स्वयं इस रीतिसे बना सकते हैं। एक वचन के रूप तो पाठक स्वयं बना सकते ही हैं।

द्विवचन के रूप=**प्रथमा, संबोधन और द्वितीया** के समान ही हैं। **तृतीया, चतुर्थी और पंचमी के** भी एक जैसे होते हैं। तथा **षष्ठी और सप्तमी** के भी एकसे होते हैं। पाठक इस समता को ध्यानमें धरेंगे तो द्विवचनके रूप बनाना उनके लिये सुगम हो जायगा।

बहुवचनके रूप=**प्रथमा और संबोधन** के परस्पर समान हैं। **चतुर्थी और पंचमी** के भी समान हैं।

यह समानता पाठकों के ध्यानमें आनेके लिये एक और शब्दके रूप बताये जाते हैं—

हस्तः (हाथ)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१	**हस्तः**	**हस्तौ**	**हस्ताः**
सं०	**(हे) हस्त !**	**(हे) "**	**(हे) "**
२	**हस्तं**	"	**हस्तान्**
३	**हस्तेन**	**हस्ताभ्यां**	**हस्तैः**
४	**हस्ताय**	"	**हस्तेभ्यः**
५	**हस्तात्**	"	"
६	**हस्तस्य**	**हस्तयोः**	**हस्तानां**
७	**हस्ते**	"	**हस्तेषु**

जो रूप ऊपरके रूपके समान होते हैं वहां (") यह चिन्ह रखा है।

वाक्य ।

सः मनुष्यः पादाभ्यां गच्छति=वह मनुष्य (दो) पावों से जाता है।

अहं कर्णाभ्यां शृणोमि=मैं (दो) कानोंसे सुनता हूं।

गजेभ्यः जलं देहि=(बहुत) हाथियोंके लिये जल दो ।

तत्र गजानां पंक्तिः अस्ति=वहां (बहुत) हाथियोंकी पंक्ति है ।

सः बालः शब्दानां प्रयोगं जानाति=वह बालक (बहुत) शब्दोंका प्रयोग जानता है ।

अश्वानां शब्दं शृणु=(बहुत) घोडोंका शब्द सुन।

सः नराणां पालकः अस्ति=वह मनुष्योंका पालक है ।

पाठ २

इस पाठमें भी पुनः अकारान्त पुल्लिंग शब्दोंके रूप बनानेकी रीति बताते हैं—

नर (मनुष्य)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१	नरः	.... नरौ	.... नराः
सं०	(हे) नर!	........(हे) ,,	........(हे) ,,
२	नरं	.... ,,	.... नरान्
३	नरेण	...........नराभ्यां	.... नरैः
४	नराय	.... ,,	...........नरेभ्यः

५	नरात्	....	,,	....	,,
६	नरस्य	....	नरयोः	....	नराणां
७	नरे	....	,,	....	नरेषु

जो रूप समान होते हैं उन स्थानपर (") यह चिन्ह रख दिया है। पाठक इनको ठीक मननपूर्वक देखें और ध्यानमें रखें। यह स्मरण रखनेसे पाठक बहुतही आसानीसे विभक्तियोंके रूप बना सकते हैं।

इनका अब उपयोग देखिये—

"प्रथमा"

एकः नरः तत्र अस्ति=एक मनुष्य वहां है।
द्वौ नरौ तत्र न स्तः=दो मनुष्य वहां नहीं हैं।
बहवः नराः अत्र सन्ति=बहुत मनुष्य यहां हैं।

"संबोधन"

हे नर ! त्वं किं करोषि ?=हे एक मनुष्य ! तू क्या करता है ?
हे नरौ ! कुत्र गच्छतः=हे दो मनुष्यो ! आप कहां जाते हैं ?
हे नराः ! मद्वचनं शृणुत=हे बहुत मनुष्यो ! मेरा वचन सुनिये।

"द्वितीया।"

धनं पुरुषार्थिनं नरं आगच्छति=धन पुरुषार्थी मनुष्यके प्रति आता है।

स पुरुषः नरौ प्रति गच्छति=वह मनुष्य (दो) मनुष्योंके प्रति जाता है।

त्वं तान् नरान् अत्र आनय=तू उन (बहुत) मनुष्यों को यहां ला।

"तृतीया"

तेन नरेण इदानीं किं कृतम् ?=उस मनुष्यने अब क्या किया ?

नराभ्यां न किमपि कृतम्=(दो) मनुष्योंने नहीं कुछ भी किया।

सर्वैः नरैः किं उक्तम् ?=सब मनुष्योनें क्या कहा ?

"चतुर्थी"

त्वं तस्मै नराय किं ददासि ?=तू उस मनुष्यके लिये क्या देता है।

नराभ्यां उदकं देहि=(दो) मनुष्यों के लिये जल दो।

सः नरेभ्यः अन्नं ददाति=वह (बहुत) मनुष्यों के लिये अन्न देता है।

"पंचमी"

तस्मात् नरात् मया धनं लब्धं=उस मनुष्यसे मैंने धन प्राप्त किया।

ताभ्यां नराभ्यां त्वं किं इच्छसि=उन (दो) मनुष्योंसे तूं क्या चाहता है ?

नीचेभ्यः नरेभ्यः त्वं अत्र आगच्छ=नीच मनुष्यों से तू यहां आ।

"षष्ठी"

तस्य नरस्य प्रशस्तं रूपं अस्ति=उस मनुष्यका प्रशस्त रूप है।

तयोः नरयोः इदानीं युद्धं जातं=उन (दो) मनुष्यों का अब युद्ध हुआ।

इदानीं तत्र नराणां महान् समूहः संमिलितः=अब वहा (बहुत) मनुष्योंका बडा समूह संमिलित हुआ है।

"सप्तमी"

तस्मिन् नरे कः विशेषः ?=उस मनुष्यमें क्या विशेष है ?

तयोः नरयोः न कः अपि विशेषः=उन (दो) मनुष्योंमें कोई विशेष नहीं है।

नरेषु विद्वान् पुरुषः प्रशस्यते=मनुष्योंमें विद्वान् पुरुष प्रशंसित होता है।

अकारान्त पुल्लिंगी नर शब्दके सातों विभक्तियों के रूप वाक्योंमें इसी प्रकार प्रयुक्त किये जाते हैं। पाठक इसी प्रकार रूप बनाकर उन रूपोंसे अनेक संस्कृत के वाक्य बनानेका अभ्यास करें।

अकारान्त पुल्लिंग शब्द।

स्वाध्यायः=अपना अध्ययन पाठ,

सज्जनः=सत्पुरुष

आर्यः=आर्य

कोविदः=ज्ञानी

त्यागः=दान

जयः=विजय

वर्णः=रंग	बुधः=विद्वान्
आश्रमः=आश्रम	आचार्यः=आचार्य
यागः=यज्ञ	उपवासः=उपवास

वाक्य।

त्वं किं स्वाध्यायं न करोषि ?=तूं क्यों स्वाध्याय नहीं करता है ?

तव गुरुः सज्जनः अस्ति=तेरा अध्यापक सज्जन है।

आर्येण किं अधीतम् ?=आर्यने क्या अध्ययन किया ?

शास्त्रेषु कोविदः अत्र न कः अपि अस्ति=शास्त्रोंमें ज्ञानी यहां कोई भी नहीं है।

यः धनस्य त्यागं करोति स एव त्यागी इति उच्यते=जो धनका दान करता है वही त्यागी कहा जाता है।

अहं जयाय यत्नं करोमि=में जयके लिये यत्न करता हूं।

अद्य अहं उपवासं करोमि=आज मैं उपवास करता हूं।

पाठ ३

पूर्व दो पाठों में शब्दोंके तीनों वचनोंका थोडासा विचार किया है। नामोंके वचनोंके साथ साथ क्रियाओंकाभी विचार होना आवश्यक है इस लिये इस पाठमें क्रियाओंका विचार थोडासा किया जाता है। जिस प्रकार नामोंके विभ-

क्तिरूपोंमें एकवचन द्विवचन और बहुवचन ऐसे तीन वचन होते हैं, ठीक उस प्रकार क्रियाओंमें भी तीन वचन होते हैं। जैसा—

वर्तमान काल।

" वद् " (बोलना)

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	**वदामि**	**वदावः**	**वदामः**
मध्यम पुरुष	**वदसि**	**वदथः**	**वदथ**
तृतीय पुरुष	**वदति**	**वदतः**	**वदन्ति**

१ **वर्तमानकाल** उसको कहते हैं कि जो इस समयका वर्णन करता है। वर्तमान कालके ये रूप हैं। जैसा—" वदामि " का अर्थ " मैं इस समय बोलता हूं। "

२ **भूतकाल** वह होता है जो भूत अर्थात् गत काल की स्थिति बताता है।

३ **भविष्यकाल** वह होता है कि जो आगे आनेवाला होता है। वर्तमान कालके रूप ऊपर दिये हैं, भूत और भविष्य कालके रूप पीछेसे दिये जांयगे।

ऊपर तीन पुरुष दिये हैं, उनका अर्थ यह है—

उत्तम पुरुष=" मैं " यह अर्थ बतानेवाला। इसको भाषामें "**प्रथम पुरुष**" भी कोई कोई कहते हैं।

मध्यम पुरुष="तू" यह अर्थ बतानेवाला। इसको भाषामें "**द्वितीय पुरुष**" भी कहते हैं।

तृतीय पुरुष="वह" अथवा "तीसरा" यह अर्थ बतानेवाला। इसको संस्कृतमें "प्रथम पुरुष" कहते हैं और भाषामें "**तृतीय पुरुष**" कहते हैं।

वाक्य बनानेके पूर्व (अहं) मैं तथा (त्वं) तू के तीनों वचनोंके रूप जाननेकी आवश्यकता है। इस लिये वे रूप यहां देते हैं—

	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
(उत्तम पुरुष)	**अहं**	**आवां**	**वयं**
प्रथमा	(मैं)	(हम दो)	(हम बहुत)
(मध्यम पुरुष)	**त्वं**	**युवां**	**यूयं**
प्रथमा	(तू)	(तुम दो)	(तुम सब)
(तृतीय पुरुष)	**सः**	**तौ**	**ते**
प्रथमा	(वह)	(वे दो)	(वे सब)

तृतीय पुरुषके स्थानपर किसी भी नामका उपयोग किया जाता है, परंतु उत्तम और मध्यम पुरुषोंके स्थानपर उक्त सर्वनामोंके शब्दोंकाही प्रयोग होता है। उक्त क्रियाके रूपोंके साथ एक एक शब्द उत्तम मध्यम और तृतीय पुरुषके लगकर वाक्य बनते हैं। उत्तम पुरुषकी क्रियाओंके साथ क्रमशः वचनोंके अनुसार उत्तम पुरुषके सर्वनाम तथा अन्योंके साथ अन्य लगते हैं। देखिये—

" उत्तम पुरुष । "

१ अहं वदामि=मैं बोलता हूं ।

२ आवां वदावः=हम (दो) बोलते हैं ।

३ वयं वदामः=हम (सब) बोलते हैं ।

" मध्यम पुरुष । "

१ त्वं वदसि तू बोलता है ।

२ युवां वदथः=तुम (दो) बोलते हैं ।

३ यूयं वदथ=तुम (सब) बोलते हैं ।

" तृतीय पुरुष । "

१ सः वदति=वह बोलता है ।

२ तौ वदतः=वे (दो) बोलते हैं ।

३ ते वदन्ति=वे (सब) बोलते हैं ।

—किंवा—

१ रामः वदति=राम बोलता है ।

२ रामलक्ष्मणौ वदतः=राम लक्ष्मण बोलते हैं ।

३ मनुष्याः वदन्ति=(सब) मनुष्य बोलते हैं ।

यही रीति ठीक समझमें आनेके लिये और थोडे वाक्य यहां देते हैं—

१ अहं गच्छामि=मैं जाता हूं ।

२ आवां गच्छावः=हम (दो) जाते हैं।
३ वयं गच्छामः=हम (सब) जाते हैं।

---

१ त्वं गच्छसि=तू जाता है।
२ युवां गच्छथः=तुम (दो) जाते हैं।
३ यूयं गच्छथ=तुम (सब) जाते हैं।

---

१ सः गच्छति=वह जाता है।
२ तौ गच्छतः=वे (दो) जाते हैं।
३ ते गच्छन्ति=वे (सब) जाते हैं।

—किंवा—

१ मनुष्यः गच्छति=मनुष्य जाता है।
२ मनुष्यौ गच्छतः=(दो) मनुष्य जाते हैं।
३ मनुष्याः गच्छंति=(सब) मनुष्य जाते हैं।

प्रत्येक वचन के रूप के साथही क्रियाका उसी वचन का रूप प्रयुक्त होता है। भाषामें क्रियाके भी दो वचन ही केवल हैं, परंतु संस्कृत तीन वचन हैं। पाठक इनका उपयोग विशेष विचार से देखें और स्मरण रखें, ता कि आगे अशुद्धि होने न पावे। यह विषय अत्यंत महत्वका है इसलिये विशेष ख्यालसे स्मरण करना चाहिये।

पाठ ४

अब इस पाठमें कुछ अकारान्त पुल्लिंग शब्द देते हैं उनके रूप पूर्व लिखे नियमके अनुसार ही कीजिये—

शब्द (अकारान्त पुल्लिंग)

ग्रामः=गांव	अपूपः=पूडा, बडा.
आपणः=बाजार	सूपः=दाल
लेखकः=लेखक	ओदनः=(पके) चावल
पर्वतः=पहाड	रथः=रथ, गाडी
मार्गः=मार्ग, रास्ता	अर्भकः=लडका
चरणः=पांव	प्रसादः=कृपा
मूषकः=चूहा	रक्षकः=रखवाला
वत्सः=बछडा	सेवकः=नौकर

अहं ग्रामं गच्छामि=मैं ग्रामको जाता हूं ।

सः ग्रामात् आगच्छति=वह गांवसे आता है ।

तौ ग्रामं गच्छतः=वे (दो) गांवको जाते हैं ।

ते मनुष्याः ग्रामात् आगच्छन्ति=वे मनुष्य ग्रामसे आते हैं ।

सेवकः आपणं गच्छति=नौकर बाजारको जाता है ।

सेवकौ आपणं गच्छतः=(दो) नौकर बाजारको जाते हैं ।

सेवकाः आपणं गच्छन्ति=(सब) नौकर बाजारको जाते हैं ।

तव लेखकः कदा आगमिष्यति=तेरा लेखक कब आवेगा ?

मम लेखकौ अधुना आगमिष्यतः=मेरे (दो) लेखक अब आवेंगे ।

ते सर्वे पुरुषाः श्वः आगमिष्यन्ति=वे सब पुरुष कल आवेंगे ।

हिमपर्वतस्य मार्गं त्वं जानासि किम्=हिमपर्वतका मार्ग तू जानता है क्या ?

तव वत्सः किं करोति=तेरा बछडा क्या करता है ?

मम द्वौ वत्सौ धावतः=मेरे दोनों बछडे दौडते हैं ।

तस्य पुत्रः तत्र धावति=उसका लडका वहां दौडता है ।

मम सर्वे पुत्राः इदानीं धावन्ति=मेरे सब पुत्र अब दौडते हैं ।

वाक्य ।

यदि यह सब वचनोंका पाठ आपके समझमें आगया होगा, तो आपको निम्नलिखित वाक्य बिना आयास समझमें आसकते हैं ।

त्वं कुत्र गच्छसि ? युवां कुत्र गच्छथः ? यूयं कदा अत्र आगच्छथ ? अहं तत्र न गच्छामि । आवां तत्र न गच्छावः । वयं कदापि तत्र न गच्छामः ।

तत्र त्वं किं न गच्छसि ? तत्र युवां किं न गच्छथः ? तत्र यूयं किं न गच्छथ ? यत् अहं पठामि तत् त्वं किं न वदसि ? यत् अहं न पठामि तत् युवां किं वदथः ? यत् अहं पठामि तत् यूयं किं वदथ ?

रामः इदानीं उद्यानं गच्छति । रामलक्ष्मणौ इदानीं उद्यानं गच्छतः । रामलक्ष्मणभरताः इदानीं उद्यानं गच्छन्ति ।

अद्य सः मनुष्यः आपणं गच्छति । अद्य तौ मनुष्यौ आपणं गच्छतः । अद्य ते मनुष्याः आपणं गच्छन्ति ।

श्वः अहं तत्र नैव गमिष्यामि । श्वः आवां तत्र नैव गमिष्यावः । श्वः वयं तत्र नैव गमिष्यामः ।

कदा तौ पाठशालां गच्छतः ? कदा ते ग्रामं गच्छन्ति ? कदा सः नगरं गच्छति ?

स सर्वदा नगरात् नगरं किं गच्छति ? तौ सदा ग्रामात् ग्रामं किं गच्छतः ? ते सर्वदा ग्रामात् ग्रामं किं गच्छन्ति ?

बालकः उद्यानं कदा गच्छति ? द्वौ बालकौ उद्यानं गत्वा पश्चात् आपणं गच्छतः । सर्वे बालकाः अध्ययनस्य पश्चात् भ्रमणाय गच्छन्ति ।

त्वं सायंकाले कुत्र गमिष्यसि ? युवां प्रातःसमये कुत्र गमिष्यथः ? यूयं मध्यान्हसमये अत्र किं न आगच्छथ ?

अहं रात्रौ गुरोः गृहं गच्छामि । आवां दिनसमये पाठशालां गच्छावः । वयं अनध्यायसमये कुत्र अपि न गच्छामः ।

यथा अहं तत्र गच्छामि तथा त्वं अपि तत्र आगच्छसि किम् ? अहं तत्र कथं गन्तुं शक्नोमि ? यदि त्वं आगमिष्यसि तर्हि अहं अपि आगमिष्यामि ।

पाठक इन वाक्योंमें नामों और क्रियाओंके वचनोंका संबंध देखें। एकवचनके नामोंके साथ एकवचनकी क्रिया आती है, द्विवचनके साथ द्विवचनकी और बहुवचनके साथ बहुवचन की आती है। यह स्मरण रखना चाहिये।

पाठ ५.

इस पाठमें अकारान्त नामों के कुछ प्रत्यय देते हैं, इनको नामोंके साथ लगानेसे विभक्ति के रूप सुगमतासे बनाये जा सकते हैं—

विभक्तियों के प्रत्यय।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१	—:	—औ	—अः
सं०	—×	—"	—"
२	—म्	—"	—अन्
३	—इन	—आभ्यां	—ऐः
४	—आय	—"	—इभ्यः
५	—आत्	—"	—"
६	—स्य	—योः	—अनां
७	—इ	—"	—इषु

इन प्रत्ययोंको अकारान्त पुल्लिंग नामों के साथ लगाकर विभक्तियों-के रूप कीजिये—

१	मोदकः	मोदकौ	मोदकाः
सं०	(हे) मोदक	(हे)"	(हे)"
२	मोदकं	"	मोदकान्
३	मोदकेन	मोदकाभ्यां	मोदकैः
४	मोदकाय	"	मोदकेभ्यः
५	मोदकात्	"	"
६	मोदकस्य	मोदकयोः	मोदकानां
७	मोदके	"	मोदकेषु

पाठक इन नामों में प्रत्ययोंका अनुभव करें और इसप्रकार प्रत्ययोंका स्मरण रख के नामों के रूप बनानेका प्रयत्न करें ॥ एक वार यह विधि ठीक समझमें आगई तो फिर कोई कठिनता नहीं रहेगी ।

अब कुछ अकारान्त पुल्लिंग शब्द कंठ कीजिये और उनके रूप पूर्ववत् बनाइये—

अकारान्त पुल्लिंग शब्द ।

आम्रः=आम
वेदः=वेद
दण्डः=सोटी
लोभः=लोभ
वासः=रहना
स्वरः=आवाज
जनः=मनुष्य

वृक्षः=वृक्ष
मंत्रः=मंत्र
धूम्रः=धूंआं
कुमारः=लडका
समुद्रः=सागर
रसः=रस
इन्द्रः=राजा, प्रमुख

वाक्य ।

अहं आम्रं खादामि=मैं आम खाता हूं ।

आवां आम्रान् खादावः=हम (दो) आमोंको खाते हैं ।

वयं आम्रौ खादामः=हम (सब) दो आम खाते हैं ।

पाठक इसमें एक विशेष बात देखें । प्रत्येक वाक्य में " **कर्ता** " होता है ।क्रिया का करनेवाला कर्ता होता है । उक्त वाक्यों में खानेकी क्रिया करनेवाला शब्द कर्ता है । प्रथम वाक्यमें " **अहं** " यह कर्ता है । कर्ताके वचनके अनुसारही क्रियाके वचन होते हैं । प्रथम वाक्यमें कर्ताका एकवचन है इसकारण क्रियाभी एकवचनी होगई । द्वितीय वाक्यमें कर्ताका द्विवचन है इसलिये क्रिया द्विवचनी होगई और तृतीय वाक्यमें कर्ता बहुवचनी है इसलिये क्रिया भी बहुवचनी होगई है । इसी प्रकार कर्ताके वचनके अनुसार क्रियाका वचन होना चाहिये ।

कर्ता और क्रिया इन दो पदोंको छोडनेसे जो उक्त वाक्योंमें तीसरा शब्द है उसको " **कर्म** " कहते हैं । कर्ता जो कार्य करता है, उस कार्यका परिणाम जिस पदार्थपर होता है उसका नाम कर्म होता है ।

कई क्रियाएं कर्मके साथ होती हैं उनको " **सकर्म क्रियापद** " कहते हैं तथा कई क्रियाएं कर्मके विना होती हैं उनको " **अकर्म क्रियापद** " कहते हैं । इन दोनोंके उदाहरण देखिये—

सकर्मक्रियापद ।

रामः आम्रं भक्षयति=राम आम खाता है ।

विष्णुः विश्वं धारयति=विष्णु विश्व धारण करता है ।

कृष्णः युद्धं करोति=कृष्ण युद्ध करता है ।

मनुष्यः जलं पिबति=मनुष्य जल पीता है ।

सः पुस्तकं नयति=वह पुस्तक ले जाता है ।

त्वं पाठं पठसि=तू पाठ पढता है ।

ये क्रियापद सकर्मक हैं क्यों कि इन क्रियाओंको कर्मकी अपेक्षा रहती है । यदि केवल " **सः पठति** " इतनाही कहा जाय तो प्रश्न हो सकता है कि " क्या पढता है " इस प्रश्नके उत्तर आने अर्थात् " कर्म " बताने तक समाधानही नहीं होता । इस लिये ये क्रियापद सकर्मक कहलाते हैं अब " अकर्मक क्रियापद " देखिये ।

अकर्मक क्रियापद ।

सः अस्ति=वह है ।

अहं धावामि=मैं दोडता हूं ।

सः तिष्ठति=वह ठहरता है ।

सः भवति=वह होता है ।

ये क्रियापद अकर्मक हैं क्यों कि किसी भी अन्य कर्मकी अपेक्षा इन क्रियाओंको नहीं है । " **धावति** " कहने मात्रसे क्रियाका पूर्ण अर्थ ज्ञात होता है । उस प्रकार " खादति " नहीं है क्योंकि

इस क्रियाके उच्चारके साथ खानेका पदार्थभी कहना आवश्यक होता है। पाठक इस बातका विचार करें और समझें कि ये क्रियाओंके भेद कैसे हैं। आगे इस विषयकी गलती न हो।

पाठ ६

इस पाठमें क्रियापदोंके प्रत्यय देते हैं उनको लगाकर क्रियापदोंके रूप पाठक बना सकते हैं—

वर्तमान काल।

पुरुष	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
उत्तम०	—मि	—वः	—मः
मध्यम०	—सि	—थः	—थ
तृतीय०	—ति	—तः	—अन्ति

जिन प्रत्ययोंके प्रारंभमें "म अथवा व" होते हैं उनके पूर्वके अकार का आ होता है। जैसा—

१	गच्छामि	गच्छावः	गच्छामः
२	गच्छसि	गच्छथः	गच्छथ
३	गच्छति	गच्छतः	गच्छन्ति

वाक्य।

अहं गच्छामि। आवां गच्छावः। वयं गच्छामः।
त्वं गच्छसि। युवां गच्छथः। यूयं गच्छथ।

सः गच्छति । तौ गच्छतः । ते गच्छान्तिं ।
पुरुषः गच्छति । मनुष्यौ गच्छतः । देवाः गच्छंति ।
अहं वदामि । आवां न वदावः । वयं कथं वदामः ?
त्वं वदसि किं ? युवां किं वदथः ? यूयं शब्दान् वदथ ।
जनः मुखेन वदति । अश्वौ न वदतः । मयूराः वदन्ति ।

अब कुछ क्रियाएं दी जाती हैं, उनके रूप पूर्ववत् कीजिये—

धातु	अर्थ	रूप
१ गम् (गच्छ्)	जाना	गच्छति
२ भक्ष्	खाना	भक्षयति
३ दृश् (पश्य)	देखना	पश्यति
४ नी (नय)	लेजाना	नयति
५ पठ्	पढना	पठति
६ स्था (तिष्ठ्)	ठहरना	तिष्ठति
७ धाव्	दौडना	धावति
८ पा (पिब्)	पीना	पिबति
९ वद्	बोलना	वदति
१० क्रीड्	खेलना	क्रीडति

इन धातुओंके वर्तमानकालके रूप बनानेके प्रत्यय इस पाठमें दिये हैं । मूल धातुके जो भिन्न रूप बनते हैं वे कंसमें ( ) दिये हैं ।

वाक्य ।

अहं पुस्तकं पठामि=मैं पुस्तक पढता हूं ।

वाक्य ।

आवां पुस्तकं न पठावः=हम (दो) पुस्तक नहीं पढते हैं ।
वयं ग्रंथं पठामः=हम (सब) ग्रंथ पढते हैं ।
रामः लेखं नैव पठति=राम लेख नहीं पढता ।
बालकौ पुस्तकं किं न पठतः ?=(दो) बालक पुस्तक क्यों नहीं पढते ?
बालकाः ग्रंथं इदानीं पठन्ति=(बहुत) बालक ग्रंथ अब पढते हैं ।
अहं अत्र क्रीडामि=मैं यहां खेलता हूं ।
आवां अत्र न क्रीडावः=हम (दोनों) यहां नहीं खेलते ।
वयं अत्र एव क्रीडामः=हम (सब) यहां ही खेलते हैं ।
त्वं कुत्र क्रीडसि ?=तू कहां खेलता है ?
युवां स्वगृहे क्रीडथः=तुम (दोनों) अपने घरमें खेलते हैं ।
यूयं मम गृहे न क्रीडथ=तुम (सब) मेरे घरमें नहीं खेलते हैं ।
सः पुस्तकं कुत्र नयति ?=वह पुस्तक कहां ले जाता है ।
तौ वस्त्रं अत्र आनयतः=वे (दोनों) कपडा यहां लाते हैं ।
ते अन्नं न नयन्ति=वे (सब) अन्न नहीं ले जाते ।
मनुष्यः मार्गे तिष्ठति=मनुष्य मार्गमें ठहरता है ।
नरौ मंदिरे तिष्ठतः=(दो) मनुष्य मंदिरमें ठहरते हैं ।
जनाः वने न तिष्ठन्ति=(सब) मनुष्य वनमें नहीं ठहरते ।
एकः जनः जलं पिबति=एक मनुष्य पानी पीता है ।

द्वौ पुरुषौ दुग्धं पिबतः=दो पुरुष दूध पीते हैं।

सर्वे मानवाः रसं न पिबन्ति=सब मनुष्य रस नहीं पीते हैं।

यथा त्वं वदसि तथा तौ न वदतः=जैसा तू बोलता है वैसे वे (दो) नहीं बोलते।

यथा तौ धावतः तथा अहं न धावामि=जैसा वे (दो) दौडते हैं वैसा मैं नहीं दौडता हूं।

तौ किं भक्षयतः=वे (दो) क्या खाते हैं ?

युवां कुत्र क्रीडथः ?=तुम (दो) कहां खेलते हैं ?

आवां अत्र पठावः=हम (दो) यहां पढते हैं।

वयं रूपं पश्यामः=हम (सब) रूप देखते हैं।

पाठक इसप्रकार नामोंके वचन तथा क्रियाओंके वचन इनका ठीक प्रकार संबंध देखें और समझें। ताकि इसमें कोई गलती न होने पावे। इतने उदाहरण दिये हैं, इनको विचारपूर्वक देखनेसे सब बातका पता लग जायगा।

पाठ ७

१ **राजा दशरथः उवाच-हे कैकेयि ! रामात् अन्यः मे त्वत्तः प्रियतरः कः अपि नास्ति** ।=राजा दशरथ बोला-हे कैकेयि ! रामसे भिन्न मेरा तेरेसे अधिक प्रिय कोईभी नहीं है।

२ **तेन राघवेण एव शपे**=उस रामचंद्रकीही शपथ लेता हूं।

३ अतः इदानीं तव मनसेप्सितं ब्रूहि तत् अधुना करिष्यामि=तेरे मनका (ईप्सितं) इष्ट कह, वह अब करूंगा।

४ तेन हृष्टा कैकेयी महाघोरं स्वाभिप्रायं व्याजहार=उससे संतुष्ट हुई कैकेयी बडा क्रूर अपना अभिप्राय बोलने लगी।

५ अत्र अयं सत्यसंधः सत्यवाक् राजा दशरथः मे वरं ददाति=यहां यह सत्यप्रातिज्ञ सत्यभाषणी राजा दशरथ मुझे वर देता है।

६ अनेन एव रामस्य अभिषेकसमारंभेण मे भरतः राज्यं अभिषिच्यताम्=इसी रामके अभिषेक समारंभसे मेरा भरत राज्यमें अभिषिक्त कीजिये।

७ रामः च चीराजिनधरः चतुर्दशवर्षाणि दंडकारण्यं आश्रितः तापसो भवतु=और राम वल्कल और चर्म धारण कर चौदह वर्ष दंडक अरण्यका आश्रय कर तापसी होवे।

८ एष मे परमः कामः। त्वया दत्तं एव वरं वृणे। अद्य एव रामं वने प्रयान्तं पश्यामि=यह मेरी परम इच्छा है। तूने दिया हुआ ही वर (वृणे) स्वीकार करती हूं। आज ही राम वनमें चला हुआ देखूंगी।

९ इति एवं दारुणं वचः श्रुत्वा महाराजः दशरथः सद्यः निःसंज्ञः इव बभूव=इस प्रकार यह भयानक भाषण सुनकर महाराज दशरथ (सद्यः) तत्क्षण (निःसंज्ञः) मूर्छित सा होगया।

१० पुनः संज्ञां प्राप्य, असंवृतायां एव भूम्यां आसीनः,

दीर्घं उष्णं च निश्वस्य, भूयः अपि मोहं आपेदिवान्=पुनः (संज्ञां) चेतना प्राप्तकर, (अ-संवृतायां) न आच्छादित भूमीपर ही बैठा हुआ, दीर्घ और उष्ण श्वास छोडकर, वारंवार ही मोह को प्राप्त हुआ।

११ **चिरेण तु संज्ञां प्रतिलभ्य क्रुद्धः राजा कैकेयीं इदं अब्रवीत्**=देरसे फिर चेतना प्राप्तकर क्रुद्ध राजा कैकेयीसे यह बोला।

१२ **पापे ! किं ते रामेण अपकृतं ?**=हे पापी स्त्री ! क्या तेरा रामने अपराध किया ?

१३ **सदा तव विषये जननीतुल्यां वृत्तिं रामः वहति**= हमेशा तेरे विषयमें माताके समान वृत्ति राम धारण करता है।

१४ **तीक्ष्णविषा सर्पिणी इव मया त्वं आत्मविनाशाय एव स्वभवनं निवेशिता**=तीखे विषवाली सांपिनीके समान मैंने तुमको अपने विनाशके लिये ही अपने घरमें प्रविष्ट कराई।

१५ **रामं अपश्यतः तु मम चेतनं नष्टं भवति**=रामको न देखनेपर तो मेरी चेतना ही नष्ट होती है।

१६ **तद् अलं। त्यज्यतां एष निश्चयः। अपि एषः अहं ते चरणौ मूर्ध्ना स्पृशामि, प्रसीद।**=तो बस। छोडा जाय यह निश्चय। अब यह मैं तेरे चरणोंको सिरसे स्पर्श करता हूं, प्रसन्न हो।

१७ **अथ कैकेयी रौद्राद् रौद्रं प्रत्युवाच।**=अब कैकेयी भयानकसे भयानक बोलने लगी।

१८ **हे राजन्! यदि वरौ दत्वा पुनः अनुतप्यसे तर्हि पृथिव्यां धार्मिकत्वं कथं कथयिष्यसि ?**=हे राजा ! यदि (दो)

वर देकर फिर पश्चात्ताप करता है, तो पृथ्वीपर धार्मिक कैसा कहलायगा ?

१९ अहं तव अग्रतः अद्य एव मरिष्यामि विषं पीत्वा यदि रामः अभिषिच्यते ।=मैं तेरे सामने आज ही मरूंगी विष पीकर यदि रामका अभिषेक होगा ।

२०ऋते रामविवासनात् अहं न तुष्येयम्=राम के वनवास के (ऋते) विना मैं नहीं संतुष्ट होऊंगी।

समास ।

१ रामविवासनं=रामस्य विवासनं (रामका वनवास)

२ स्वाभिप्रायः=स्वस्य अभिप्रायः (अपना अभिप्राय)

३ सत्यसंधः=सत्या संधा प्रतिज्ञा यस्य (सत्य है प्रतिज्ञा जिसकी ।)

४ सत्यवाक्=सत्या वाक् वाणी यस्य (सत्य है वचन जिसका।)

५ अभिषेकसमारंभः=अभिषेकस्य समारंभः (अभिषेकका समारंभ)

६ चीराजिनधरः=चीरं च अजिनं च चीराजिने । चीराजिने धरति इति चीराजिनधरः (वल्कल और चर्म धारण करनेवाला ।)

पाठक इन समासोंका अच्छा अभ्यास करें । तथा इस पाठके वाक्योंका भी उत्तम अध्ययन करें । और यदि हो सके तो इन वाक्यों के संधि बनाकर सरल संस्कृत वाक्य बनाकर लिखकर रखें ।

पाठ ८

तथा तान्दुःखितान्दृष्ट्वा पाण्डवान्धृतराष्ट्रजः ।
क्लिश्यमानां च पाञ्चालीं विकर्ण इदमब्रवीत् ॥ ११॥

म. भा. सभा. ६८

(तथा) एवं प्रकारेण तान् पांडवान् दुःखितान् दृष्ट्वा (धृतराष्ट्रजः) धृतराष्ट्रात् जातः पुत्रः विकर्णः (क्लिश्यमानां) क्लेशैः पीडितां दुःखितां (पांचालीं) द्रौपदीं च दृष्ट्वा इदं (अब्रवीत्) अवदत् ।

याज्ञसेन्या यदुक्तं तद्वाक्यं विब्रूत पार्थिवाः ।
अविवेकेन वाक्यस्य नरकः सद्य एव नः ॥ १२ ॥

हे (पार्थिवाः) नृपाः ! (याज्ञसेन्या) द्रौपद्या यत् (उक्तं) कथितं (वाक्यं) वचनं तत् (विब्रूत) विशेषेण ब्रूत कथयत । तस्य द्रौपद्या प्रश्नस्य उत्तरं दातव्यं इति अर्थः । वाक्यस्य (अविवेकेन) अविचारेण (नः) अस्माकं सर्वेषां (सद्यः) तत्क्षणं एव नरकः भविष्यति ।

भीष्मश्च धृतराष्ट्रश्च कुरुवृद्धतमावुभौ ।
समेत्य नाहतुः किंचिद्विदुरश्च महामतिः ॥ १३ ॥

भीष्मः च धृतराष्ट्रः च (उभौ) द्वौ अपि (कुरुवृद्धतमौ) सर्वेषु कुरुषु अत्यंतवृद्धौ । तौ द्वौ अपि (समेत्य) संगत्य किंचित् न (आहतुः) न उक्तवन्तौ । (महामतिः) महाबुद्धिमान् विदुरः च किंचित् अपि न आह ।

भारद्वाजश्च सर्वेषामाचार्यः कृप एव च ।
कुत एतावपि प्रश्नं नाहतुर्द्विजसत्तमौ ॥ १४ ॥

(भारद्वाजः) द्रोणः सर्वेषां कुरूणां आचार्यः (कृपः) कृप-नामकः एव च सर्वेषां कुरूणां आचार्यः । एतौ द्वौ अपि आचार्यौ (द्विजसत्तमौ) द्विजश्रेष्ठौ (कुतः) किमर्थं प्रश्नं न आहतुः ?

ये त्वन्ये पृथिवीपालाः समेताः सर्वतो दिशम् ।
कामक्रोधौ समुत्सृज्य ते ब्रुवन्तु यथामति ॥ १५ ॥

ये तु अन्ये (पृथिवीपालाः) भूपाः सर्वतः दिशं (समेताः) संगताः प्राप्ताः ते कामक्रोधौ (समुत्सृज्य) त्यक्त्वा परित्यज्य यथामति (ब्रुवन्तु) कथयन्तु ।

यदिदं द्रौपदी वाक्यमुक्तवत्यसकृच्छुभा ।
विमृश्य कस्य कः पक्षः पार्थिवा वदतोत्तरम् ॥ १६ ॥

शुभा द्रौपदी (असकृत्) अनेकवारं यद् इदं वाक्यं उक्त-वती । हे (पार्थिवाः) नृपाः ! (विमृश्य) विचार्य कस्य कः पक्षः इति उत्तरं (वदत) कथयत ।

इस पाठमें संस्कृत श्लोकोंका अर्थ सुगम संस्कृतमें ही दिया है । पाठक ध्यानपूर्वक इसको वारंवार पढेंगे तो उनके समझमें सब अर्थ आ जायगा । श्लोकके कठिन शब्द (   ) ऐसे कंसमें रखे हैं और आगे उनका अर्थ दिया है । यदि यह अर्थ विना आयास पाठकोंके मनमें आगया, तो समझिये कि अच्छी प्रगति हो चुकी है । अब यहां श्लोकोंके समास देते हैं—

समास ।

१ धृतराष्ट्रजः=धृतराष्ट्रात् जातः ।(धृतराष्ट्रसे उत्पन्न हुआ)

२ कुरुवृद्धतमौ=कुरुषु वृद्धः कुरुवृद्धः । अत्यंतं कुरुवृद्धः कुरुवृद्धतमः तौ कुरुवृद्धतमौ । (कौरवोंमें अतिवृद्ध)

३ महामतिः=महती विशाला मतिः बुद्धिः यस्य । (विशाल बुद्धिवाला)

४ द्विजसत्तमः=द्विजेषु ब्राह्मणक्षत्रियवैश्येषु सत्तमः श्रेष्टः द्विजसत्तमः । (द्विजोंमें श्रेष्ठ)

५ पृथिवीपालः=पृथिव्याः पालः पालकः । (पृथिवीका पालनकर्ता)

६ कामक्रोधौ=कामः च क्रोधः च कामक्रोधौ (काम और क्रोध)

७ असकृत=न सकृत् असकृत् (नहीं एकवार=अनेकवार)

पाठक इन समासोंका ठीक अध्ययन करें। इस अध्ययनसे समासोंका उत्तम ज्ञान हो सकता है ।

संधि ।

१ विकर्ण इदं=विकर्णः इदं ।

२ यदुक्तं=यत् उक्तं ।

३ तद्वाक्यं=तत् वाक्यं ।

४ सद्य एव=सद्यः एव ।

५ भीष्मश्च=भीष्मः च ।

६ कूप एव=कूपः एव ।

७ एतावपि=एतौ अपि ।

८ नाहतुर्द्विज०=न आहतुः द्विज० ।

९ त्वन्ये=तु अन्ये ।

१० सर्वतो दिशं=सर्वतः दिशं ।

११ उक्तवत्यसकृच्छुभा=उक्तवती अ-सकृत् शुभा ।

पाठक इन संधियोंको ध्यानसे देखें ।

पाठ ९.

पूर्व दो पाठोंमें जो संस्कृत वाक्य दिये हैं उनके संधि बना कर सरल संस्कृत इस पाठमें दिया जाता है—

राजा दशरथ उवाच–हे कैकेयि! रामादन्यः मे त्वत्तः प्रियतरः कोऽपि नास्ति । तेन राघवेणैव शपे । अत इदानीं मनसेप्सितं ब्रूहि, तदधुना करिष्यामि । तेन हृष्टा कैकेयी महाघोरं स्वाभिप्रायं व्याजहार ।

अत्रायं सत्यसंधः सत्यवाग्राजा दशरथो मे वरं ददाति । अनेनैव रामस्याभिषेकसमारंभेण मे भरतो राज्येऽभिषिच्यताम् । रामश्च चीराजिनधरश्चतुर्दशवर्षाणि दंडकारण्यमाश्रितस्तापसो भवतु ।

एष मे परमः कामः । त्वया दत्तमेव वरं वृणे । अद्यैव रामं वने प्रयान्तं पश्यामि ।

इत्येवं दारुणं वचः श्रुत्वा महाराजो दशरथः सद्यो निःसंज्ञ इव बभूव। पुनः संज्ञां प्राप्य असंवृतायामेव भूम्यामासीनो, दीर्घमुष्णं च निश्वस्य भूयोऽपि मोहमापेदिवान्।

चिरेण तु संज्ञां प्रतिलभ्य क्रुद्धो राजा कैकेयीमिदमब्रवीत्।

पापे ! किं ते रामेणापकृतं ? सदा तव विषये जननीतुल्यां वृत्तिं रामो वहति। तीक्ष्णविषा सर्पिणीव मया त्वमात्मविनाशायैव स्वभवनं निवेशिता। राममपश्यतस्तु मम चेतनं नष्टं भवति। तदलं, त्यजतामेष निश्चयः। अप्येषोऽहं ते चरणौ मूर्ध्ना स्पृशामि, प्रसीद।

अथ कैकेयी रौद्राद्रौद्रं प्रत्युवाच। —हे राजन् ! यदि वरौ दत्वा पुनरनुतप्यसे तर्हि पृथिव्यां धार्मिकत्वं कथं कथयिष्यसि। अहं तवाग्रतोऽद्यैव मरिष्यामि विषं पीत्वा यदि रामोऽभिषिच्यते। ऋते रामविवासनादहं न तुष्येयम्।

पाठ सप्तमके संस्कृत वाक्योंका यह संधियुक्त संस्कृत है। यदि इसमें कोई कठिनता प्रतीत हो गई तो सप्तम पाठ देखनेसे निवृत्त हो सकती है।

अब पूर्व पाठमें दिये श्लोकोंका सरल संस्कृत यह है देखिये—

तथा तान्पांडवान्दुःखितान्दृष्ट्वा धृतराष्ट्रजो विकर्णः क्लिश्यमानां पांचालीं च दृष्ट्वेदमब्रवीत्।

हे पार्थिवाः ! याज्ञसेन्या यद्वाक्यमुक्तं तद्विब्रूत। वाक्यस्य अविवेकेन सद्य एव नरकः।

भीष्मश्च धृतराष्ट्रश्चोभौ कुरुवृद्धतमौ समेत्य किंचिन्नाहतुः महामतिः विदुरश्च किंचिन् नाह ?

भारद्वाजः सर्वेषामाचार्यः कृपः एव चैतावपि द्विजसत्तमौ कृतं प्रश्नं नाहतुः ?

ये त्वन्ये पृथिवीपालाः सर्वतो दिशं समेतास्ते कामक्रोधौ समुत्सृज्य यथामति ब्रुवन्तु ।

शुभा द्रौपद्यसकृद्यदिदं वाक्यमुक्तवती । हे पार्थिवाः ! विमृश्य कस्य कः पक्ष इत्युत्तरं वदत ।

संधियुक्त वाक्य ये हैं । इनके मूल श्लोक पूर्व पाठमें है । संदेहके स्थानपर वहां ही पाठक देखें और संदेह निवृत्त करें ।

सूचना—इन वाक्योंसे पूर्व श्लोकोंकी अपेक्षा किसी स्थानपर कुछ शब्द अधिक भी रखे हैं । अर्थका ज्ञान सुगमतासे होने के लिये ऐसा करना आवश्यक हुआ है ।

संधि ।

१ **दशरथ उवाच**=दशरथः उवाच ।

२ **रामादन्यः**=रामात् अन्यः ।

३ **कोऽपि**=कः अपि ।

४ **राघवेणैव**=राघवेण एव ।

५ **तदधुना**=तत् अधुना ।

६ **स्वाभिप्रायं**=स्व अभिप्रायं ।

७ **सत्यवाग्राजा**=सत्यवाक् राजा ।

८ अद्यैव=अद्य एव।

९ इत्येवं=इति एवं।

१० क्रुद्धो राजा=क्रुद्धः राजा।

११ सर्पिणीव=सर्पिणी इव।

इन संधियोंका अभ्यास पाठक करें और अन्य संधि खोलनेका भी अभ्यास करें।

पाठ १०.

इस पाठमें निम्नलिखित अकारान्त पुल्लिंग शब्द याद कीजिये—

अर्थः=पैसा, धन
वानरः=बंदर
छात्रः=शिष्य
दण्डः=सोटा
मृगः=हिरन
स्तेनः=चोर
द्विरेफः=भ्रमर
व्याधः=शिकारी
लेखः=लेख
करः=हाथ
प्रवाहः=प्रवाह
उद्यमः=उद्योग
कुक्कुरः=कुत्ता
समाजः=समाज
दैत्यः=राक्षस
पाठः=पाठ
ब्राह्मणः=ब्राह्मण
शक्रः=इंद्र
पान्थः=मुसाफिर
अलंकारः=जेवर
स्नेहः=मित्रता
विचारः=विचार

वाक्य ।

सः अर्थं वांच्छति=वह धनकी इच्छा करता है ।

वानरौ वृक्षस्य उपरि भवतः=(दो) वानर वृक्षके ऊपर होते हैं ।

छात्राः गुरोः समीपं पठन्ति=(सब) शिष्य गुरुके समीप पढते हैं ।

दण्डं धरति इति दंडधरः=दंड धरनेवाला दंडधर (होता है) ।

तौ द्वौ दंडौ अत्र आनय=वे दो सोटियां यहां ला ।

व्याधः दंडेन एव मृगान् ताडयति=शिकारी दंडेसे ही (सब) मृगोंको ताडन करता है ।

स्तेनाय दंडं देहि=चोरको दंड दो ।

सः हस्ताभ्यां भारं नयति=वह (दो) हाथोंसे बोझ ले जाता है ।

व्याधः बाणैः मृगं विध्यति=शिकारी बाणोंसे हिरनको विंधता है ।

द्विरेफः शब्दं करोति=भ्रमर शब्द करता है ।

लेखकः लेखं न लिखति=लेखक लेख लिखता नहीं ।

यः न लिखति स लेखकः भवितुं न योग्यः=जो नहीं लिखता वह लेखक होने योग्य नहीं ।

अहं कराभ्यां मुखं आच्छादयामि=मैं (दो) हाथोंसे मुख आच्छादित करता हूं ।

इदानीं अत्र जलस्य महान् प्रवाहः अस्ति=अब यहां जलका बडा प्रवाह है ।

उद्यमेन हि कार्याणि सिद्ध्यन्ति न मनोरथैः=उद्योगसेही कार्य सिद्ध होते हैं, मनोरथसे नहीं।

व्याधः कुक्कुरैः व्याघ्रं अन्वेषति=शिकारी कुत्तों से शेर को ढूंढता है।

यदा मनुष्याणां महान् समाजः भवति तदा तस्मिन् बहु बलं भवति=जब मनुष्योंका बडा समाज होता है तब उसमें बडा बल होता है।

दैत्यः मनुष्यं भक्षयति=राक्षस मनुष्यको खाता है।

अद्य त्वं कं पाठं पठसि ?=आज तू किस पाठको पढता है ?

प्राज्ञः ब्राह्मणः वेदं पठति=ज्ञानी ब्राह्मण वेद पढता है।

स्वर्गे शक्रः राज्यं करोति=स्वर्गमें इंद्र राज्य करता है।

पान्थाय जलं देहि=मुसाफिरके लिये जल दो।

मूर्खः अलंकारैः देहं भूषयति=मूढ मनुष्य जेवरोंसे देहको सजाता है।

स्नेहेन सुखं लभते=मित्रतासे सुख प्राप्त होता है।

वाचनपाठः।

यदा त्वं जलं पिबसि तदा एव अहं दुग्धं पिबामि। यदा त्वं तत्र आगमिष्यसि तदा अहं एतत्पुस्तकं पठिष्यामि। अहं रात्रौ बहिः न गमिष्यामि। अहं इदानीमेव गृहं गत्वा आम्रं भक्षयामि। दुग्धेन सह आम्रस्य भक्षणं अतीव मधुरं भवति। आकाशात् द्विरेफः पतति। सः पुरुषः किमर्थं पुस्तकं आनयति ? अहं यदा तत्र

गतः तदा सः तत्र नासीत् । अहं वनं गत्वा पुष्पमालां शीघ्रं कृत्वा अत्र आनयिष्यामि । त्वं उद्यानपुष्पाणां मालां इच्छसि वा वनपुष्पाणां मालां वांछसि ? यत्र यज्ञदत्तः गच्छति तत्र देवदत्तः न गच्छति । परंतु यज्ञदत्तदेवदत्तौ सदा अत्र भवतः । त्वं मम वस्त्रं गृहीत्वा शीघ्रं अत्र आगच्छ, मम रक्तं वस्त्रं एव अत्र आनय न श्वेतं वस्त्रं ।

पाठक इसप्रकार अनेकानेक वाक्य बनाकर अपना अभ्यास बढावें । वाक्य बनानेके समय एकवचन द्विवचन और बहुवचनका ख्याल अवश्य करें नहीं तो वाक्य अशुद्ध बनेंगे । ऊपर जो वाक्य दिये हैं उनका मनन करनेसे यह अभ्यास सुगमतासे हो जायगा ।

पाठ ११

इस पाठमें निम्नलिखित धातु कंठ करके उसके रूप पूर्ववत् बनाइये—

धातु	अर्थ	रूप
१ आगच्छ्	आना	आगच्छति
२ आनी (आनय्)	लाना	आनयति
३ भू (भव्)	होना	भवति
४ पत्	गिरना	पतति
५ चल्	चलना	चलति
६ चर्	घूमना	चरति

७ लिख्	लिखना	लिखति
८ स्था (तिष्ठ्)	ठहरना	तिष्ठति
९ उपविश्	बैठना	उपविशति
१० पच्	पकाना	पचति
११ वस्	रहना	वसति
१२ वह्	उठाना	वहति
१३ वप्	बोना	वपति
१४ रट्	बोलना	रटति
१५ रण्	शब्द करना	रणति
१६ भण्	बोलना	भणति

पाठक इन धातुओंके रूप पूर्व बतायी हुई रीतिके अनुसार करके वाक्य करें—

वाक्य ।

पुरुषः आगच्छति=पुरुष आता है ।

मनुष्यौ आनयतः=(दो) मनुष्य लाते हैं ।

बालकाः तत्र भवन्ति=बालक वहां होते हैं ।

हे मनुष्य ! त्वं पतसि=हे मनुष्य ! तू गिरता है ।

हे वीरौ ! युवां चलथः=हे वीरो ! तुम (दो) चलते हैं ।

हे मानवाः ! यूयं चरथ=हे मानवो ! तुम (सब) घूमते हैं ।

अत्र अहं लेखं लिखामि=यहां मैं लेख लिखता हूं ।

आवां अत्र तिष्ठावः=हम (दो) यहां ठहरते हैं ।

वयं तत्र उपविशामः=हम (सब) वहां बैठते हैं ।

सूदः अन्नं पचति=रसोइया अन्न पकाता है।

परिचारकौ तत्र वसतः=(दो) सेवक वहां रहते हैं।

अश्वाः रथं वहन्ति=घोडे रथको चलाते हैं।

कृषीवलः बीजं वपति=किसान बीज बोता है।

बालकौ तत्र किमपि रटतः=(दो) बालक वहां कुछभी बोलते हैं।

घंटाः रणन्ति=घण्टाएं शब्द करती हैं।

त्वं किं इदानीं भणसि ?=तू क्या अब बोलता है।

वाक्य।

अहं आगच्छामि । त्वं आगच्छसि । स आगच्छति । आवां आगच्छावः । युवां आगच्छथः । तौ आगच्छतः । वयं आगच्छामः । यूयं आगच्छथ । ते आगच्छन्ति ।

अहं फलं आनयामि । आवां जलं आनयावः । वयं धान्यं आनयामः । त्वं पात्रं आनयसि । युवां वस्त्रं आनयथः । यूयं पुस्तकं आनयथ । सः अश्वं आनयति । तौ अश्वं आनयतः । ते अश्वं आनयन्ति ।

वृक्षः भवति । वृक्षौः भवत ! वक्षाः भवन्ति । त्वं भवसि । युवां भवथः । यूयं भवथ । अहं भवामि । आवां भवावः । वयं भवामः ।

बालकः पतति । बालकौ पततः । बालकाः पतन्ति । त्वं

पतासि । युवां पतथः । यूयं पतथ । अहं पतामि । आवां पतावः । वयं पतामः ।

अहं ग्रामं चलामि । आवां नगरं चलावः । वयं देशान्तरं चलामः । त्वं कदा चलसि ? युवां कुत्र चलथः ? यूयं किं न चलथ ? सः इदानीं न चलति । तौ इदानीं न चलतः । ते इदानीं एव चलन्ति ।

अश्वः वने चरति । अश्वौ वने चरतः । अश्वाः वने चरन्ति । त्वं कुत्र चरसि । युवां कुत्र चरथः । यूयं कुत्र चरथ । सः न चरति । तौ तत्र चरतः । ते न चरन्ति ।

गंगाधरः लिखति । विश्वामित्रभरद्वाजौ लिखतः । छात्राः लिखन्ति । त्वं किं न लिखसि ? युवां लिखथः किं ? यूयं किं लिखथ ? अहं अत्र लिखामि । आवां अत्र लिखामः । वयं अत्र न लिखामः ।

धातुओंके रूप बनानेका अभ्यास इस पद्धतिसे पाठक करें । कर्ता का वचन और क्रियाका वचन एक होना चाहिये । थोडेही शब्दोंसे प्रत्येक धातुके रूप जोडकर इस प्रकार अनंत वाक्य हो सकते हैं । यदि पाठक इस रीति से प्रतिदिन अभ्यास करेंगे तो उनको संस्कृत वाक्य बनाना सुगम हो जायगा ।

पाठ १२

इस पाठमें आप निम्नलिखित शब्द स्मरण कीजिये——

अकारान्त पुल्लिंग शब्द ।

कूपः=कूआ
दुर्जनः=दुष्ट मनुष्य
विनयः=नम्रता
शुकः=तोता
मार्जनलेपः=साबून
देहः=शरीर
ओदनः=पके चावल
प्रश्नः=प्रश्न, सवाल
जडः=जड, मूढ
नागः=सांप, हाथी
यवः=जौ
लोभः=लोभ
ओष्ठः=होंठ
मयूरः=मोर
सुजनः=सज्जन
कामः=काम, इच्छा
पेटकः=पेटी, संदूक
प्रकाशः=प्रकाश, उजाला
काचः=शीशा.
जनकः=पिता

इदानीं तव कूपस्य जलं पिबामि=अब तेरे कुवेका जल पीता हूं ।

दुर्जनं दूरतः परित्यज=दुष्ट मनुष्यका दूर परित्याग कर ।

विद्वान् विनयेन शोभते=विद्वान नम्रतासे शोभता है ।

शुकः वृक्षस्य उपरि वसति=तोता वृक्षके ऊपर वसता है ।

मार्जनलेपेन जलेन च शरीरं निर्मलं कुरु=साबुनसे तथा जलसे शरीर निर्मल स्वच्छ कर ।

अश्वस्य देहः मनुष्यस्य शरीरात् बलिष्ठतरः अस्ति=घोडेका शरीर मनुष्यके देहसे अधिक बलिष्ठ है।

त्वं कथं ओदनं पचसि=तू कैसे चावल पकाता है?

सः इदानीं प्रश्नं पृच्छति=वह अब प्रश्न पूछता है।

जडः ज्ञानेन हीनः भवति=मूढ ज्ञानसे हीन होता है।

नागः विषयुक्तः भवति=सांप विषयुक्त होता है।

तव जनकः किं लिखति ?=तेरा पिता क्या लिखता है?

काचः त्वया दृष्टः किं ?=शीशा तुमने देखा है क्या?

इदानीं शुभ्रः सूर्यस्य प्रकाशः अस्ति=अब सूर्यका शुभ्र प्रकाश है।

तव पेटके मम पुस्तकं अस्ति=तेरी संदूकमें मेरा पुस्तक है।

यथा कामः तथा एव लोभः=जैसा काम वैसा ही लोभ है।

सुजनं नमस्करोमि=सुजनको नमस्कार करता हूं।

मयूरः अतीव शोभनः भवति=मोर अति सुंदर होता है।

ओष्ठः कथं रक्तवर्णः न भवति=होंठ कैसे लालवर्णवाला नहीं होता है?

वाक्य।

त्वं मुद्गं किं न पचसि? मुद्गमिश्रितः ओदनः मधुरः भवति। मुद्गानां अन्नं मधुरं भवति। तस्य हिमपर्वतस्य शिखरं अतीव रमणीयं अस्ति। एकस्य बालकस्य पुस्तकं अन्यः नयति। तदा द्वौ अपि बालकौ युद्धं कुरुतः। यस्य बालकस्य मुखं मलिनं भवति सः मूढः भवति।

स बालकः इदानीं किं भक्षयति ? सः इदानीं आम्रं भक्षयति दुग्धं च पिबति । आम्रस्य भक्षणानंतरं जलं न पिब । तस्मै मार्गं देहि । सः अंधः बधिरः च अस्ति ।

आचार्यः धर्मस्य वचनं उपदिशति । त्वया तत् किं न श्रुतम् ? उपदेशकः धर्मवचनस्य अमृतं ददाति । तत् यथा इच्छसि तथा पिब ।

नृपतिः चोरं ताडयति । राजा यदा नगरात् बहिः गच्छति तदा एव चोरः अत्र आगच्छति ।

त्वं अत्र कुमारं किमर्थं ताडयसि ? किं तेन कृतं ? सः शोभनः छात्रः अस्ति । तं न ताडय । सः इदानीं स्वपाठं करोति ।

स्वादु दुग्धं मिष्टं भवति । तथा फलानां रसः अपि मिष्टः अस्ति । अस्य कूपस्य जलं मधुरं नास्ति, तत् अतीव क्षारं अस्ति ? अस्य कारणं किम् अस्ति ?

विष्णुमित्रः कदा स्नानं करोति ? त्वं कदा भोजनं करोषि ? तव पुत्रः कदा पठति ? त्वं कुत्र वससि ? युवां कुत्र वसतः ? अहं प्रातः वनं गतः इदानीं एव गृहं आगतः ।

पाठक इस प्रकार छोटे छोटे वाक्य बनाकर बोलनेका यत्न करें । जो जो शब्द इस समयतक पाठकोंको कंठ हो चुके हैं, उनका उपयोग करके अनेकानेक वाक्य पाठक बोल सकते हैं ।

इस प्रकार छोटे छोटे वाक्य बनानेका अभ्यास समय समयपर पाठक करेंगे तो उनको सैंकडों वाक्य बनानेका अवसर मिलेगा । और उनको विश्वास भी हो जायगा कि अपनी प्रगति संस्कृतमें इतनी हो गई है ।

पाठ १३

१ **श्रुत्वा तत् कैकेयीवचनं राजा दशरथः निःश्वस्य छिन्नः तरुः इव अपतत्** ।=सुन कर वह कैकेयीका भाषण राजा दशरथ श्वास छोडकर काटे हुए वृक्षके समान गिर पडा ।

२ **दीनया वाचा च कैकेयीं अपृच्छत्**=दीन वाणीसे कैकेयीसे पूछने लगा ।

३ **केन त्वं एवं उपदिष्टा** ?=किसने तुझे इस प्रकार उपदेश किया ?

४ **नानादिग्भ्यः समागता राजानः किं मां वक्ष्यन्ति**=नाना दिशाओंसे आये राजालोग क्या मुझे कहेंगे ।

५ **रामं वनं गच्छन्तं, सीतां च रुदतीं, दृष्ट्वा चिरं जीवितुं न आशंसे**=राम वनको जाते, और सीताको रोते, देखकर देरतक जीनेकी आशा नहीं है ।

६ **हे कैकेयि ! सर्वान् अस्मान् नरके प्रक्षिप्य सुखिता भव**= हे कैकेयी ! सब हमको नरकमें फेंककर सुखी हो जाओ ।

७ **मयि मृते, रामे वनं गते च, त्वं विधवा भूत्वा एव राज्यं करिष्यसि**=मेरे मरनेपर और रामके वनको जानेपर, तू विधवा होकर ही राज्य करेगी ।

८ **तथा विलपतः दशरथस्य, सूर्यः अस्तं गतः । रजनी च अभ्यावर्तत । प्रभातकालः अपि जातः**=उस प्रकार विलाप करते हुए दशरथके, सूर्य अस्तको गया । रात्री भी होगई । प्रातःकाल भी हुआ ।

९ **प्रभाते एव आशु वसिष्ठः संभारान् उपगृह्य राजमंदिरं प्रविवेश** ।=सवेरेही शीघ्र वसिष्ठ सामुग्री लेकर राजमंदिरमें प्रविष्ट हुआ।

१० **सचिवं सुमंत्रं आहूय प्रोवाच**=मंत्री सुमंत्रको बुलाकर बोला ।

११ **मां आगतं नृपतेः क्षिप्रं आचक्ष्व**=मैं आया हूं, यह राजाको शीघ्र कह दो ।

१२ **तथा त्वरस्व, यथा पुष्यनक्षत्रे रामः राज्यं अवाप्नुयात्**=वैसी त्वरा कर कि जिससे पुष्यनक्षत्रमें राम राज्यको प्राप्त होवे ।

१३ **एवं श्रुत्वा सः अपि प्रविवेश अन्तःपुरम्**=यह सुनकर वह भी प्रविष्ट हुआ अंतःपुरमें ।

१३ **राज्ञः अवस्थां अज्ञात्वा एव तं अभिष्टोतुं प्रचक्रमे**=राजाकी अवस्था न जानकर ही उसकी स्तुति करना प्रारंभ किया ।

१४ **धार्मिकः राजा दशरथः रामं प्रति भग्नहृदयः शोकररक्तेक्षणः तं उवाच**=धार्मिक राजा दशरथ रामके प्रति छिन्नहृदय होकर शोकसे लाल (ईक्षण) नेत्र होकर उसे बोला।

१५ **एतैः वाक्यैः खलु त्वं मम मर्माणि कृंतसि**=इन वाक्यों से तो तू मेरे मर्मही काट रहा है !

१६ **सुमन्त्रः अस्य वाक्यस्य अर्थं न अन्वबुध्यत**=सुमन्त्र इस वाक्य का अर्थ नहीं समझा ।

१७ **यदा दशरथः दैन्यात् न शशाक वक्तुं तदा मंत्रज्ञा कैकेयी सुमंत्रं प्रत्युवाच**=जब दशरथ दीनताके कारण नहीं समर्थ हुआ बोलनेके लिये, तब विचार का भाव समझनेवाली कैकेयी सुमंत्रसे बोली ।

१८ हे सुमंत्र ! राजा रजनौ प्रजागरपरिश्रान्तः निद्रां गतः तत् त्वरितं रामं अत्र आनय ।=हे सुमंत्र ! राजा रात्रीमें जागरणके कारण थका हुआ निद्रित हुआ है। इसलिये शीघ्र रामकोही यहां ला।

समास ।

१ कैकेयीवचनं=कैकेय्याः वचनं कैकेयीवचनं (कैकेयीका भाषण)

२ विधवा=विगतः मृतः धवः पतिः यस्याः सा विधवा पतिहीना मृतपतिका स्त्री। (जिसका पति मर चुका है)

३ राजमंदिरं=राज्ञः मंदिरं राजमंदिरं (राजाका भवन)

४ भग्नहृदयः= भग्नं हृदयं यस्य सः भग्नहृदयः (जिसका हृदय छिन्नभिन्न हुआ है)

५ मंत्रज्ञा=मंत्रं जानाति इति मंत्रज्ञा (विचारका भाव जाननेवाली)

६ प्रजागरपरिश्रान्तः=प्रकर्षेण अतिशयेन जागरः जागरणं प्रजागरः। परितः सर्वतः श्रांतः पतिश्रांतः। प्रजागरेण परिश्रांतः प्रजागरपरिश्रांतः। (जागरण करनेके कारण थका हुआ)

पाठक समासोंका अभ्यास अच्छा करें। तथा इस पाठके वाक्योंकाभी अभ्यास अच्छा करें। और जब संपूर्ण पाठ हो जाय तब केवल वाक्यही वारंवार अनेक समय पढते रहें।

---

[४] धर्म-शिक्षाके ग्रंथ ।

(१) बालकोंकी धर्मशिक्षा । प्रथमभाग । —)
(२) बालकोंकी धर्मशिक्षा । द्वितीयभाग । =)
(३) वैदिक पाठ माला । प्रथमपुस्तक । ≡)

[५] स्वयंशिक्षकमाला ।

(१) वेदका स्वयंशिक्षक । प्रथमभाग । १॥)
(२) वेदका स्वयंशिक्षक । द्वितीय भाग । १॥)

[६] आगम-निबंध-माला ।

(१) वैदिक राज्य पद्धति । मू. ।-)
(२) मानवी आयुष्य । मू. ।)
(३) वैदिक सभ्यता । मू. ॥।)
(४) वैदिक चिकित्सा-शास्त्र । मू. ।)
(५) वैदिक स्वराज्यकी महिमा । मू. ॥)
(६) वैदिक सर्प-विद्या । मू. ॥)
(७) मृत्युको दूर करनेका उपाय । मू. ॥)
(८) वेदमें चर्खा । मू. ॥)
(९) शिव संकल्पका विजय । मू. ॥।)
(१०) वैदिक धर्मकी विशेषता । मू. ॥)
(११) तर्कसे वेदका अर्थ । मू. ॥)
(१२) वेदमें रोगजंतुशास्त्र । मू. ।≡)
(१३) ब्रह्मचर्यका विघ्न । मू. =)
(१४) वेदमें लोहेके कारखाने । मू. —)
(१५) वेदमें कृषिविद्या । मू. ≡)
(१६) वैदिक जलविद्या । मू. =)
(१७) आत्मशक्ति का विकास । मू. ।-)

मंत्री-स्वाध्याय-मंडल,
औंध, (जि. सातारा).

अंक ८

संस्कृत-पाठ-माला।

(संस्कृत भाषाका अध्ययन करनेका सुगम उपाय।)
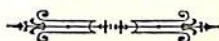
अष्टम भाग।

लेखक और प्रकाशक।

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,

स्वाध्याय मंडल, औंध (जि. सातारा.)

प्रथम वार १०००

संवत् १९८२, शके १८४७, सन १९२५

मूल्य ।=) पांच आने।

अंक ८

संस्कृत-पाठ-माला।

[संस्कृत भाषाका अध्ययन करनेका सुगम उपाय।]

अष्टम भाग।

लेखक और प्रकाशक।

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,

स्वाध्यायमंडल, औंध (जि. सातारा.)

प्रथमवार १०००

संवत् १९८२, शक १८४७, सन १९२५.

मूल्य ।-) पांच आने।

विभक्तियोंके रूप ।

इस पुस्तक में विभक्तियोंके रूपोंपर विशेष बल दिया है । पाठक इस पुस्तक के अध्ययन करनेके समय इस विषय पर अधिक ध्यान देंगे तो उनको आगे का पाठविधि अति सुगम होगा ।

आशा है कि पाठक इस ओर विशेष ध्यान देंगे ।

स्वाध्याय मंडल,
औंध (जि. सातारा)
२९ । ७ । २९

लेखक
श्रीपाद दामोदर सातवळेकर.

मुद्रक—रा. रा. **चिंतामण सखाराम देवळे,** मुंबईवैभव प्रेस, सर्व्हंट्स ऑफ इंडिया सोसायटीज़् होम, सँढर्स्ट रोड, गिरगांव–मुंबई.

प्रकाशक—**श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,** स्वाध्यायमंडल, औंध (जि. सातारा).

ॐ

संस्कृत–पाठ–माला।

अष्टम भाग।

पाठ १

अकारान्त पुल्लिंग शब्दोंके रूप पाठक जानतेही हैं तथापि फिर स्मरण दिलाने के लिये यहां पुनः दिये जाते हैं–

जनः (मनुष्य)

(१) जनः, जनौ, जनाः। (सं०) हे जन, हे जनौ, हे जनाः! (२) जनं, जनौ, जनान्। (३) जनेन, जनाभ्यां जनैः। (४) जनाय, जनाभ्यां, जनेभ्यः। (५) जनात्, जनाभ्यां, जनेभ्यः। (६) जनस्य, जनयोः, जनानां (७) जने, जनयोः, जनेषु॥

रामः।

(१) रामः, रामौ, रामाः। (सं०) हे राम, हे रामौ, हे रामाः! (२) रामं, रामौ, रामान्। (३) रामेण, रामाभ्यां रामैः। (४) रामाय, रामाभ्यां, रामेभ्यः। (५) रामात्,

रामाभ्यां, रामेभ्यः । (६) रामस्य, रामयोः, रामाणां ।
(७) रामे, रामयोः, रामेषु ॥

पाठक ये दोनों शब्दोंके रूप देखें। इनके रूपोंमें थोडासा भेद है।

	जनः	रामः
तृतीया एकवचन—	जनेन	रामेण
षष्ठी बहुवचन—	जनानां	रामाणां

" जन " शब्दके रूपमें प्रत्ययका " न " जहां रहा है वहां " राम " शब्दके रूपमें " ण " हुआ है।

इसका नियम यह है—

१८ नियम.

" र अथवा ष " के सामने आनेवाले " न " कार का " ण " होता है। तथा इनके बीचमें स्वर, क वर्ग, प वर्ग, ह य व र आनेसे भी न का ण होता है। देखिये—

" राम " शब्द " र+आ+म्+अ " इतने वर्णों से बना है। इसके सामने तृतीया का " इन " प्रत्यय आगया तो=[राम +इन]=हो कर—

र+[आ+म्+अ+इ]+न

ऐसी स्थिति होती है, अर्थात् " र " और " न " के बीचमें " आ+म्+अ+इ " इतने वर्ण आनेपर भी उक्त नियमके अनुसार न का ण होता है।

इसी प्रकार " रामाणां " के स्थानपर इसी नियमसे न कार का ण कार होता है। ऐसे ही अन्यत्र समझना चाहिये।

" जनेन, जनानां " इन शब्दोंमें " र अथवा ष " नहीं है, अतः यहां नकार का ण नहीं बना।

शब्द।

पटः=वस्त्र
पाकः=पका अन्न
दीपः=दिया
योधः=वीर
तरंगः=लहर
आतपः=धूप
ग्रंथः=पुस्तक
पार्थिवः=राजा
ज्वरः=ज्वर, बुखार
भृत्यः=नौकर
बुधः=ज्ञानी
कपोतः=कबूतर
आश्रमः=आश्रम
पायसः=पायस, खीर
वायसः=कौवा
वैद्यः=वैद्य

वाक्य।

हे मित्र! तं पटं अत्र आनय! सः पटः कस्य अस्ति? केन तत्र स्थापितः? केन सः कृतः?

इदानीं भोजनस्य समयः जातः। किं पाकः सिद्धः वा न? यदि पाकः सिद्धः अस्ति तर्हि इदानीं एव भोजनाय अहं आगन्तुं इच्छामि।

अस्मिन् स्थाने दीपः नास्ति। त्वया अत्र दीपः किं न स्थापितः? शीघ्रं त्वं तत्र गच्छ दीपं च अत्र आनय।

सः मनुष्यः ज्वरेण पीडितः अस्ति । इदानीं तस्य शरीरे अतीव ज्वरः अस्ति । अतः एतत् औषधं तस्मै देहि । अधुना एव देहि ।

तव भृत्यः इदानीं अत्र नास्ति किम् ? तेन ह्यः किं कृतम् ? येन त्वं कुपितः असि ।

बुधः सदा योग्यं वचनं एव उपदिशति । कदा अपि अयोग्यं भाषणं न वदति । अतः बुधस्य एव मित्रता संपादनीया ।

यथा योधः संग्रामं इच्छति तथा त्वं अपि इच्छसि किं ? योधे धैर्यं भवति । शौर्यं अपि तत्रैव भवति ।

बुधः इदानीं शोभनं ग्रंथं लिखति । तस्य ग्रंथस्य पठनं कः करिष्यति ?

यदि तव गृहे पायसः अस्ति तर्हि मह्यं देहि । अहं पातुं इच्छामि ।

वायसः कठोरं शब्दं करोति न तथा कोकिलः । कोकिलः मधुरं शब्दं करोति ।

मम आश्रमे उत्तमः कोकिलः अस्ति । सः प्रतिदिनं मधुरं गायनं करोति । सायं काले तस्य मधुरं शब्दं श्रुत्वा मम हृदयं संतोषं प्राप्नोति ।

पाठ २

अब निम्न लिखित शब्द कंठ कीजिये—

अकारान्त पुल्लिंग शब्द ।

शब्दः=शब्द	दुर्जनः=दुष्ट मनुष्य
द्वेषः=द्वेष, शत्रुता	पाठः=पाठ
प्रयत्नः=यत्न	होमः, यज्ञः =यज्ञ
वर्णः=रंग, वर्ण	आश्रमः=आश्रम
आर्यः=आर्य	यागः=यज्ञ
बुधः=ज्ञानी	धीरः=धैर्यवान्
अध्यापकः=गुरु	आचार्यः=आचार्य
दमः=इंद्रियदमन	उपवासः=उपवास करना
शमः=मनका शमन	जयः=विजय

अकारान्त पुल्लिंग नामों के समान ही इनके रूप होते हैं, पाठक इनके रूप बनाकर अनेक वाक्य अब बना सकते हैं—

यथा गर्दभस्य शब्दः तथा एव उष्ट्रस्य रूपं=जैसा गधेका शब्द वैसाही ऊंटका रूप ।

उष्ट्रस्य विवाहे गर्दभः गायकः भवति=ऊंटके विवाहमें गधा गायक होता है ।

गर्दभस्य विवाहे उष्ट्रः नर्तकः भवितुं अर्हति=गधेकी शादीमें ऊंट नाचनेवाला होना योग्य है ।

शब्दे नित्यः अर्थः विद्यते=शब्दमें नित्य अर्थ होता है ।

यथा मूषकस्य मार्जारेण सह स्वाभाविकः द्वेषः अस्ति तथैव सिंहस्य गजेन सह वैरं अस्ति=जैसा चूहेका बिल्लीके साथ स्वाभाविक द्वेष है उसी प्रकार सिंहका हाथीके साथ वैर है ।

प्रयत्नेन सर्वं सिद्धं भवति=यत्नसे सब सिद्ध होता है ।

यत्ने कृते यदि न सिध्यति तत्र कः दोषः ?=यत्न करनेपर यदि न सिद्धी हुई तो वहां क्या दोष ?

आर्यः सर्वदा प्रयत्नं करोति=आर्य सदा प्रयत्न करता है ।

तव कः वर्णः, तस्य किं कर्तव्यं ?=तेरा वर्ण क्या है, उसका क्या कर्तव्य है ?

बुधः सर्वं जानाति न तथा मूढः=ज्ञानी सब जानता है, नहीं वैसा मूढ (जानता है) ।

दुर्जनं प्रथमं वंदेत् सज्जनं तदनंतरं=दुष्ट मनुष्यको प्रथम वंदन करना, सज्जनको तत्पश्चात् ।

अद्य तव अध्यापकेन कः पाठः पाठितः ?=आज तेरे अध्यापकने कौनसा पाठ पढाया ?

ब्राह्मणः यज्ञं करोति=ब्राह्मण यज्ञ करता है ।

धीरः आचार्यः यथा उपदिशति तथा एव स्वयं आचरति=धैर्यशाली आचार्य जैसा उपदेश देता है वैसा ही स्वयं आचरण करता है ।

शिष्यः नमस्कृत्य आचार्यात् विद्यां गृह्णाति=शिष्य नमस्कार करके आचार्यसे विद्या ग्रहण करता है ।

आचार्येण सह शिष्यः वनं गत्वा तत्र पठति=आचार्यके साथ शिष्य वनको जाकर वहां पढता है ।

वाक्य ।

प्राणेन एव शरीरे बलं भवति । अन्नं अपि शरीरस्य बलं वर्धयति । तृषाशमनार्थं जलस्य पानं अवश्यं कर्तव्यम् । प्राणायामेन प्राणस्य बलस्य वर्धनं भवति । ध्यानेन मनःशक्ति-संवर्धनं भवति ।

रावणस्य राज्यं लंकायां आसीत् । तस्य रावणस्य हननं रामेण कृतम् । लंकाराज्यं राक्षसानां आसीत् । दुर्गं आश्रित्य राक्षसः युद्धं कर्तुं न शक्तः ।

वृक्षस्य पत्रं पुष्पं फलं च सर्वं उत्तमं अस्ति । पुष्पस्य उत्तमः गंधः, फलस्य शोभनः रसः, पत्रस्य वर्णः च आनंद-करः भवति ।

सः एव वीर्यवान् भवति यः मरणात् न भीतः । यः मरणात् भीतः सः भीरुः इति उच्यते । राज्यस्य हेतोः क्षत्रियेण किं पातकं न क्रियते ?

युद्धे शत्रुं निहत्य पापं न भवति । युद्धात् यदि पलायनं क्रियते तर्हि पातकं भवति । यदि क्षत्रियः युद्धे मृतः भवति, तर्हि सः स्वर्गं आप्नोति । यदि विजयं प्राप्तः तर्हि सः राज्यं प्राप्नोति ।

इदानीं सर्वः स्वकीयां रक्षां करोति । ज्ञानेन रक्षणं भवति । यथा बुधः स्वकीयं रक्षणं कर्तुं समर्थः अस्ति न तथा अज्ञः मूढः मनुष्यः । अतः ज्ञानं अवश्यं प्राप्तव्यम् ।

आदौ इंद्रियाणि नियम्य ज्ञाननाशनं क्रोधं कामं च जहि । तेन एव नरः सुखी भवति ।

पाठ ३

इस पाठमें इकारान्त पुल्लिंग शब्दोंके रूप बताये जाते हैं—

रविः (सूर्य)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१	रविः	रवी	रवयः
सं.	हे रवे	हे ,,	हे ,,
२	रविं	,,	रवीन्
३	रविणा	रविभ्यां	रविभिः
४	रवये	,,	रविभ्यः
५	रवेः	,,	,,
६	,,	रव्योः	रवीणां
७	रवौ	,,	रविषु

इस शब्दमें भी “ रविणा और रवीणां ” इन रूपोंमें न कार काण कार पूर्वपाठमें कहे नियमानुसार हुआ है।

कविः (ज्ञानी, काव्यकर्ता)

(१) कविः, कवी, कवयः । (सं.) हे कवे, हे कवी, हे

कवयः (२) कविं, कवी, कवीन्। (३) कविना, कविभ्यां कविभिः। (४) कवये, कविभ्यां, कविभ्यः। (५) कवेः, कविभ्यां, कविभ्यः। (६) कवेः, कव्योः, कवीनां। (७) कवौ, कव्योः, कविषु।

इस शब्दके रूपोंमें नकारका णकार नहीं हुआ इसका कारण इसमें र नहीं है अथवा षभी नहीं है।

अस्तु अब इकारान्त पुल्लिंग शब्द पढिये—

शब्द।

पाणिः=हाथ
मुष्टिः=मुक्का
मणिः=मणि
रविः=सूर्य
उदधिः=समुद्र
इषुधिः=बाणोंका कोश
ऋषिः=ऋषि
मुनिः=मुनि

रश्मिः=किरण
कविः=कवि
नृपतिः=राजा
भूपतिः= ,,
ग्रंथिः=ग्रंथी
कपिः=बंदर
दुंदुभिः=ढोल
प्रजापतिः=प्रजापालक

वाक्य।

त्वं एकेन पाणिना इदानीं किं करोषि? अहं पाणिभ्यां वस्त्रं आनयामि। सः पाणौ धनं गृह्णाति। इदानीं मम पाणिः मलिनः अस्ति।

सः मुष्टिना युद्धं करोति। त्वं मुष्टियुद्धं जानासि किम्? तेन सः मुष्टिभिः ताडितः। पुरुषेण मुष्टियुद्धं अवश्यं कर्तव्यम्।

अहं मणिं कंठे धारयामि । सः मणीनां मालां पुत्रस्य कंठे स्थापयति। यदा मणिषु सूत्रं प्रविष्टं भवति तदा तेषां माला भवति।

रविः प्रातःसमये आगच्छति । सः तस्य उदयः इति उच्यते। सः सायं काले अस्तं गच्छति । सायंकालानंतरं रात्रिः भवति । रात्रिसमये अंधकारः भवति । प्रकाशस्य अभावः एव अंधकारः ।

त्वया उदधिः दृष्टः वा न ? मया उदधिः दृष्टः । यदा अहं मुंबापुरीप्रदेशे गतः तदा तत्र उदधिः मया दृष्टः। उदधेः जलं क्षारं भवति । उदधिजलात् एव लवणं प्राप्नोति । यदा उदधेः जलं सूर्यस्य रश्मिभिः शुष्यति तदा लवणं भवति।

इषुधौ बाणाः भवंति । वीरः इषुधेः बाणं गृह्णाति ।

ऋषिः आश्रमे स्थित्वा किं करोति ? सः स्वशिष्यान् किं उपदिशति । स वेदमंत्रान् उपदिशति । शिष्याः वेदमंत्रान् पठन्ति । तेषां मननं च कुर्वन्ति ।

यः मननं करोति सः एव मनुष्यः भवति । मुनिः मौनं साधयति । मननाय मौनं एव आवश्यकं अस्ति ।

सूर्यस्य रश्मिः अद्य शोभनः अस्ति। यदा मेघाः भवंति तदा एवं सूर्यस्य रश्मिः न भवति ।

नृपतिः नरान् पालयति । भूपतिः भूमिं रक्षति । प्रजापतिः प्रजानां पालनं करोति ।

कपिः वृक्षे भवति । यदा सः ग्रामं आगच्छति तदा कुमाराः तं दंडैः ताडयन्ति ।

त्वया दुंदुभेः शब्दः श्रुतः वा न ? इदानीं दुंदुभेः महान् शब्दः भवति ।

पाठक पूर्वोक्त शब्दोंके रूप बनाकर विविध प्रकारके वाक्य बनावें ।

पाठ ४

इस पाठमें आप निम्नलिखित शब्द स्मरण कीजिये—

पठितुं=पढनेके लिये
पुनः=फिर
विमानः=विमान
काष्ठं=लकडी
निर्माणं=बनावट
मृत्तिका=मिट्टी
सुवर्णं=सोना
माला=माला
रथांगं=रथके भाग
श्रोता=सुननेवाला
पूजकः=पूजा करनेवाला
विचारणा=विचार
मननं=मनन
मनोबलं=मनका बल
कंदुकः=गेंद

मह्यं=मेरे लिये
तुभ्यं=तेरे लिये
वस्त्रकारः=जोलाहा
रथकारः=तर्खाण
कुंभकारः=कुंम्हार
सुवर्णकारः=सुनार
लोहकारः=लुहार
मालाकारः=माली
लेखकः=लिखनेवाला
याजकः=यज्ञकर्ता
शिक्षकः=अध्यापक
धारयित्वा=धारण करके
योगाचारः=योगका आचार
यशोवर्धकः=यश बढानेवाला
अनध्यायः=छुट्टी

ये शब्द कंठस्थ करनेसे पाठक निम्नलिखित वाक्य बिना आयास समझ सकते हैं ।—

वाचनपाठः ।

हे मित्र ! तव पुस्तकं अहं पठितुं इच्छामि । कुत्र अस्ति तव पुस्तकं ? यदि त्वं अधुना तत् न पठसि तर्हि मह्यं देहि । अहं तत् श्वः वा परश्वः वा तुभ्यं पुनः दास्यामि ।

रामः रथेन अन्यं ग्रामं गच्छति । विष्णुमित्रः जलरथेन अन्यं देशं गंतुं इच्छति । गोपालः आकाशस्थेन विमानेन अन्यं प्रदेशं गच्छति ।

वस्त्रकारः सूत्रेण वस्त्रं करोति । रथकारः काष्ठात् रथस्य निर्माणं करोति । कुंभकारः मृत्तिकापात्रं करोति । सुवर्णकारः सुवर्णस्य आभूषणं करोति । मालाकारः पुष्पाणां मालाः करोति । लोहकारः लोहस्य रथांगानि करोति ।

लेखकः पुस्तकं लिखति । पाठकः लेखं पुस्तकं च पठति । उपदेशकः धर्मस्य उपदेशं करोति । श्रोता तस्य श्रवणं मननं च करोति ।

याजकः यजनं करोति । पूजकः पूजां करोति । शिक्षकः शिष्यं पाठयति ।

योद्धा युद्धं करोति । सैनिकः शस्त्रं गृहीत्वा धावति । वीरः अश्वं आरोहति । राजा सैनिकान् प्रेरयति । मंत्री युद्धस्य विचारणां करोति ।

ऋषिः वने आश्रमस्थाने तपः तपति । मुनिः मौनं धारयित्वा

मननं करोति । योगी योगाचारं आश्रित्य स्वकीयं मनोबलं वर्धयति ।

ये मनुष्याः भिन्नाः वर्तन्ते तेषां योगक्षेमं नैव कल्पते । भिन्नानां मनुष्याणां विनाशः एव शीघ्रं भवति । तेषां कः अपि तरणोपायः नैव अस्ति ।

कुलस्य यशोवधनाय सदाचारसंपन्नः पुत्रः आवश्यकः अस्ति । एकः अपि सत्पुत्रः यशोवर्धकः भवति ।

अहं अद्य सायंकाले तव गृहं प्रति आगमिष्यामि । त्वं तदा तत्र भविष्यसि किम् ? यदि त्वं तत्रैव स्थास्यसि तर्हि अहं आगमिष्यामि नो चेत् नैव आगमिष्यामि ।

अस्मिन् गृहे एकः बालकः दुग्धं पिबति । अन्यः पुत्रः जलं पिबति । तत्र वृद्धमनुष्यः फलस्य रसं पिबति । कश्चित् तरुणः पुरुषः मोदकं भक्षयति ।

अत्र बालः कंदुकेन क्रीडति । सः तत्र जले क्रीडति । अन्यः कश्चित् पुरुषः शीघ्रं धावति ।

इदानीं तस्मिन् कूपे किंचित् अपि जलं नास्ति, परंतु अस्मिन तडागे शोभनं सलिलं अस्ति ।

अत्र गुरुः इदानीं पर्यंतं न आगतः तथा च शिष्यः अपि न आगतः । इदानीं अद्य कः अपि नैव आगमिष्यति, अद्य अनध्यायः अस्ति ।

पश्य तस्य वीरस्य पराक्रमं । सः शस्त्रस्य उपयोगं कर्तुं जानाति ।

पाठक ये वाक्य वारंवार पढें और इसका अच्छा अभ्यास करें ।

पाठ ५

१ सुमंत्रः गत्वा रामं ददर्श। ववन्दे च तं। उवाच च।= सुमंत्रने जाकर रामको देखा। नमस्कार किया उसको। और बोला।

२ हे राम! पिता त्वां द्रष्टुं इच्छति। राज्ञी कैकेयी अपि त्वां द्रष्टुं इच्छति। गम्यतां तत्र। मा चिरं इति।=हे राम! पिता तुझे देखनेकी इच्छा करता है। रानी कैकेयी भी तुझे देखना चाहती है जाओ वहां। देर न हो।

३ एवं उक्तः नरसिंहः रामः सीतां संमान्य अंतःपुरं अत्यगात्। अभिवाद्य च पितुः चरणौ सुसमाहितः कैकेय्या अपि चरणौ ववन्दे।=इस प्रकार कहा जानेपर नरश्रेष्ठ राम सीताका संमान करके अंतःपुरमें गया। पिताके चरणोंको नमस्कार करके उसने सावधान होकर कैकेयीके चरणोंको भी वंदना की।

४ नृपतिः तु दीनः न शशाक ईक्षितुं किं पुनः अभिभाषितुम्? तच्च नरपतेः रूपं भयावहं दृष्ट्वा भयं आपन्नः रामः।= राजा तो दीन होकर देखनेके लिये भी समर्थ न हुआ, तो क्या फिर बोलनेके लिये? वह राजाका रूप भयावना देखकर राम भय को प्राप्त हुआ।

५ कैकेयीं अभिवाद्य एव अब्रवीत् कच्चित् मया न अपराद्धं येन मे कुपितः पिता। कच्चित् न भरते शत्रुघ्ने मातॄणां वा मे अशुभम्?=कैकेयीका अभिवादन करके ही बोला कि क्या मैंने तो कोई अपराध नहीं किया जिससे मेरा पिता क्रोधित हुआ?

भरत शत्रुघ्न वा माताओंके विषयमें मैंने कोई अशुभ तो नहीं किया होगा ?

६ नृपे तु कुपिते मुहूर्तमपि जीवितुं न उत्सहे ।=राजा क्रोधित होनेपर घडीभर भी जीनेको मैं उत्साहित नहीं हूं ।

७ कैकेयी तु निर्लज्जा तदा आत्महितं वचः उवाच । राम ! राजा न कुपितः । न अस्य किंचन व्यसनं । मनोगतं तु किंचित् त्वद्भयात् न अनुभाषते ।=निर्लज्ज कैकेयी तब अपने हितका भाषण बोली । हे राम ! राजा क्रोधित नहीं है । नहीं इसको कोई कष्ट है । मनके विचार कुछ तेरे भयके कारण नहीं बोलता है ।

८ त्वां अप्रियं वक्तुं न प्रवर्तते अस्य वाणी । एष हि पुरा मां अभिपूज्य वरं च दत्वा पश्चात् तप्यते राजा, यथा अन्यः प्राकृतः ।=तेरे लिये अप्रिय बोलनेको इसकी वाणी प्रवृत्त नहीं होती । यह तो पहिले मुझे पूजकर और वर देकर पश्चात् संतप्त हो रहा है यह राजा, जैसा अन्य (प्राकृतः) साधारण मनुष्य होवे ।

९ एतत् श्रुत्वा रामः व्यथितः उवाच । अहो धिक् । हे देवि ! मां एवं वक्तुं न अर्हसि । राज्ञः वचनात् पावके अपि पतेयं । तत् राज्ञः यत् अभिकांक्षितं तत् ब्रूहि ।=यह सुनकर राम दुखी होकर बोला । अहो धिक्कार है । हे देवि ! मुझे ऐसा बोलने के लिये तू योग्य नहीं है । राजाके वचनसे अग्निमें भी गिरूंगा । इसलिये राजाका जो इष्ट है वह बोल ।

३

१० रामः द्विः न अभिभाषते=राम दो बार नहीं बोलता है।

११ ततः कैकेयी तं दारुणं वचः उवाच=कैकेयी उसे कठोर वचन बोली।

१२ हे राम! ते पित्रा मे वरौ दत्तौ। तत्र मे याचितः अधुना राजा भरतस्य अभिषेचनं तव च अद्य एव दंडकारण्ये गमनं। यदि पितरं आत्मानं च सत्यप्रतिज्ञं कर्तुं इच्छसि तद् पितुः सन्निदेशे तिष्ठ।=हे राम! तेरे पिताने मुझे दो वर दिये थे। उसमें मैंने राजाकी याचना की कि अब भरतका राज्याभिषेक और तेरा आजही दंडकारण्यमें गमन। यदि पिता को और अपनेको सत्यप्रतिज्ञ करने की इच्छा है तो पिताकी आज्ञामें रह।

१३ नव पंच च वर्षाणि त्वया अरण्यं प्रवेष्टव्यम्। त्यक्त्वा अभिषेकं जटाचीरधारी भव। भरतः तु इमां पृथिवीं प्रशास्तु।=नौ और पांच वर्ष तूने वनमें प्रवेश करना। राज्याभिषेक छोडकर जटा-वल्कल धारण करनेवाला हो। भरत इस पृथिवीका शासन करे।

१४ मरणोपमं वचनं श्रुत्वा रामः विव्यथे। कैकेयीं च अब्रवीत्।=मरणके समान वचन सुनकर रामको दुःख हुआ। और कैकेयीसे बोला।

पाठक इन वाक्योंका उत्तम अभ्यास करें। संस्कृत वाक्योंमें शब्द आगेपीछे होते हैं। उनका अर्थ पूर्वापर संबंधसे देखें और समझनेका यत्न करें।

पाठ ६.

इस पाठमें उकारान्त पुल्लिंग शब्दों के रूप बताये जाते हैं—

सूनुः (पुत्र, लडका)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१	सूनुः	सूनू	सूनवः
सं.	हे सूनो	हे ,,	हे ,,
२	सूनुं	,,	सूनून्
३	सूनुना	सूनुभ्यां	सूनुभिः
४	सूनवे	,,	सूनुभ्यः
५	सूनोः	,,	,,
६	,,	सून्वोः	सूनूनां
७	सूनौ	,,	सूनुषु

इसी रीतिसे उकारान्त पुल्लिंग शब्दोंके रूप बनते हैं—

गुरुः (अध्यापक)

(१) गुरुः, गुरू, गुरवः । (सं.) हे गुरो, हे गुरू, हे गुरवः । (२) गुरुं, गुरू, गुरून् (३) गुरुणा, गुरुभ्यां, गुरुभिः । (४) गुरवे, गुरुभ्यां, गुरुभ्यः । (५) गुरोः, गुरुभ्यां, गुरुभ्यः । (६) गुरोः, गुर्वोः, गुरूणां । (७) गुरौ, गुर्वोः, गुरुषु ॥

इस गुरु शब्दके रूपोंमें " गुरुणा और गुरूणां " के स्थानपर तृतीय पाठमें उक्त नियमसे ही न के स्थानपर ण हुआ है ।

उकारान्त पुंल्लिंग शब्द—

मृत्युः=मृत्यु	ऋतुः=दो मासका अवधि
गुरुः=अध्यायक	क्रतुः=यज्ञ
इक्षुः=ईख	साधुः=साधु
मेरुः=मेरु पर्वत	तंतुः=धागा
वायुः=वायु	इषुः=बाण
सेतुः=पूल	स्तनयित्नुः=मेघ
प्रभुः=स्वामि	बाहुः=बाहु
भिक्षुः=भिक्षु	पशुः=पशु
शिशुः=बालक	जन्तुः=प्राणी

वाक्य।

यदा गुरुः पाठशालां आगच्छति तदा पठनं भवति। यथा गुरुः वदति तथा एव त्वं पठ।

मृत्युः सर्वस्य ईशः अस्ति। मृत्युना सर्वं व्याप्तम्। मृत्यवे त्वं किं दास्यसि ? मृत्योः आत्मानं रक्ष।

इक्षोः रसः अतिमधुरः भवति। इक्षुरसात् एव गुडः भवति। इक्षुं भक्षय इदानीम्।

स भृत्यान् इक्षुभिः ताडयति। इक्षूणां रसं तस्मिन् भांडे स्थापय।

मेरुः नामकः एकः पर्वतः अस्ति। उत्तरदेशे मेरोः स्थानं अस्ति। मेरौ देवानां एका सभा आसीत्।

इदानीं वायुः वाति । यथा इदानीं वायुः वाति तथा रात्रौ न वाति तेन अतीव कष्टः भवति । वायुना एव सर्वे जन्तवः जीवन्ति । वायौ एव प्राणः अस्ति ।

सेतुं कृत्वा नदीपारं गच्छ । यत्र सेतवः भवन्ति तत्र सुखेन मनुष्याः गंतुं समर्थाः भवन्ति ।

ईश्वरः सर्वस्य प्रभुः अस्ति । राजा राष्ट्रस्य प्रभुः भवति । एष सज्जनः अस्य ग्रामस्य प्रभुः अस्ति । प्रभुणा मह्यं धनं दत्तम् । त्वं प्रभवे किं दास्यसि ? अहं प्रभोः चरणौ वंदे । प्रभुं एव शरणं गच्छ ।

भिक्षुः ग्रामात् ग्रामं भ्रमति । धर्मस्य प्रचाराय एव स नगरात् नगरं अटति । भिक्षवे अन्नं वस्त्रं च देहि ।

तत्र मम शिशुः क्रीडति । तं शिशुं पश्य । तेन शिशुना पात्रं तत्र एव स्थापितम् । शिशवे दुग्धं देहि ।

एष वसंतः ऋतुः अस्ति । द्वितीये ग्रीष्मे ऋतौ त्वं कुत्र गमिष्यसि ?

पाठक इस प्रकार पूर्वोक्त शब्दोंके रूप बनाकर वाक्य करें और वाक्य बनानेका अभ्यास बढ़ावें ! इस पाठमें आये कुछ शब्दोंका अर्थ यह है—

व्याप्तं=व्यापक
आत्मानं=अपनेको
गुडः=गुर
ताडयति=पीटता है
भांडं=पात्र, बर्तन
आसीत्=थी
क्रीडति=खेलता है
वसंतः=वसंत ऋतु
वाति=चलता है ।
अतीव=अत्यंत
जीवति=जीवित रहता है
पारं=पैलतीर
वंदे=वंदन करता हूं ।
अटति=घूमता है ।
ग्रीष्मः=उष्ण ऋतु

पाठ ७

१ **रामः उवाच मातः ! एवं अस्तु । अहं इतः वनं गमिष्यामि । राज्ञः प्रतिज्ञां अनुपालयन् जटाचीरधरः च भवामि । हे देवि ! मन्युः न कार्यः ।**=राम बोले—माता ! ऐसा ही हो । मैं अब वनको जाऊंगा । राजाकी प्रतिज्ञाको पालन करता हुआ जटा और वल्कलधारी होऊंगा । हे देवि ! क्रोध न करना ।

२ **इदं तु ज्ञातुमिच्छामि, किमर्थं महीपतिः यथापूर्वं मां इदानीं न अभिनंदति ? हितन, गुरुणा, कृतज्ञेन, नृपेण, पित्रा नियुज्यमानः अहं किं प्रियं न कुर्याम् ?**=यह मैं जाननेकी इच्छा करता हूं, कि क्यों राजा पूर्वके समान अब मेरा अभिनंदन नहीं करता ? हितकारक, गुरु, कृतज्ञ, राजा, पिताके द्वारा नियुक्त हुआ मैं कौनसा प्रिय कार्य न करूंगा ?

३ एतत् एकं एव मे हृदयं दहति यद् राजा मां स्वयं एव भरतस्य अभिषेचनं न आह=यह एकही मेरे हृदयको जलाता है कि राजाने मुझे स्वयंही भरतके राज्याभिषेक के विषय में नहीं कहा।

४ तथापि राजानं आश्वासय। दूताः गच्छन्तु, भरतं मातुलकुलात् आनयितुम्। एष अहं अपि गच्छामि दण्डकारण्यं चतुर्दश समाः वस्तुम्।= तथापि राजाका समाधान कर। नौकर चले जांय, भरतको मामाके घरसे लानेके लिये। यह मैं भी जाता हूं दंडकारण्यमें चौदह वर्ष वसने के लिये।

५ एतत् श्रुत्वा हृष्टा कैकेयी। त्वरयामास राघवं प्रस्थानार्थम्।= यह सुनके संतुष्ट हुई कैकयी। शीघ्रता करने लगी रामको चले जानेके लिये।

६ कैकेयी उवाच—व्रीडान्वितः नृपः स्वयं न अभिभाषते त्वाम्। यावत् त्वं न यातः असि न तावत् तव पिता स्नास्यते भोक्ष्यते अपि।= कैकेयी बोली लज्जायुक्त राजा स्वयं तुझे नहीं बोलता। जबतक तू नहीं जाता है तब तक न तेरा पिता स्नान करेगा, और न भोजन भी करेगा।

७ राजा दशरथः एतत् वचनं श्रुत्वा दीर्घं निःश्वस्य धिक् कष्टं इति उक्त्वा मूर्च्छितः न्यपतत्।=राजा दशरथ यह वचन सुनकर दीर्घ श्वास लेकर 'धिक्कार ! दुःख !' ऐसा बोलकर मूर्छित होकर गिर पडा।

८ कशया हतः वाजी इव रामः अपि वनं गन्तुं कृतत्वरः बभूव। सः राजानं उत्थाप्य उवाच।=चाबूकसे ताडित घोडे के

समान राम भी वनको जानेके लिये शीघ्रता करने लगा। वह राजा को उठाकर बोला।

९ देवि ! न अहं अर्थपरः। मां धर्मं आस्थितं विद्धि। पितृशुश्रूषायाः महत्तरं किंचित् धर्माचरणं नास्ति।=हे देवी ! मैं धन का लोभी नहीं हूं। मैं धर्मपर स्थित हूं यह जान लो। पिताकी सेवा करनेसे अधिक बडा कोई धर्मका आचरण नहीं है।

१० भवतु ! मातरं आपृच्छे तावत्। सीतां च अनुनयामि। ततः अद्य एव महत् वनं गमिष्यामि।=अस्तु। मातासे पूछूंगा अब। सीताको साथ ले जाऊंगा। तब आजही बडे वनको जाऊंगा।

११ भवत्या तथा कर्तव्यं यथा भरतः राज्यं पालयेत् पितरं च शुश्रूषेत्; हि नः सः एव धर्मः=आपने वैसा करना जिससे भरत राज्यकी पालना करे और पिताकी शुश्रूषा करे क्यों कि हमारा वही धर्म है।

१२ विसंज्ञस्य अपि राज्ञः तथा कैकेय्या अपि चरणौ रामः निष्पपात। निष्क्रम्य च अंतःपुरात् स्वं सुहृज्जनं च ददर्श=मूर्च्छित पडे राजाके भी तथा कैकेयीके चरणोंपर रामने नमन किया। वापस होकर अंतःपुर से अपने मित्रजनोंको देखा।

१३ क्रुद्धः लक्ष्मणः बाष्पपूरितलोचनः तं अनुजगाम=क्रुद्ध लक्ष्मण आसूओंसे नेत्र भरकर उसके पीछे चला।

१४ तदा माता कौसल्या तं आह—हे राम ! राजर्षीणां धर्मशीलानां कुलोचितं धर्मं कीर्तिं आयुः च प्राप्नुहि।= तब माता

कौसल्या उसे बोली कि हे राम ! राजर्षी वृद्ध धार्मिकों के कुलको उचित धर्मको तथा कीर्ति और आयुको प्राप्त हो ।

पाठक इन वाक्योंका अच्छी प्रकार अभ्यास करें और संस्कृत वाक्योंका पाठ वारंवार करें । कमसे कम बीस पचीस वार इनका पाठ करें ।

पाठ ८

इस पाठमें ऋकारान्त पुल्लिंग शब्दोंके रूप बताते हैं ।

कर्तृ (करनेवाला, कर्ता)

वि.	एक०	द्वि०	बहु०
१	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः
सं.	हे कर्तः	हे ,,	हे ,,
२	कर्तारं	,,	कर्तॄन्
३	कर्त्रा	कर्तृभ्यां	कर्तृभिः
४	कर्त्रे	,,	कर्तृभ्यः
५	कर्तुः	,,	,,
६	,,	कर्त्रोः	कर्तॄणाम्
७	कर्तरि	,,	कर्तृषु

इसी प्रकार ऋकारान्त पुल्लिंग शब्दोंके रूप बनते हैं । ऋका-रान्त शब्दोंमें रकार होनेके कारण इन शब्दोंके नकार का ण होता

है जैसा " कर्तॄणां " षष्ठीका बहुवचन हुआ है। " पितृ " शब्दके रूपोंमें थोडी भिन्नता है, देखिये इसके रूप—

१	पिता	पितरौ	पितरः
सं.	हे पितः	हे ,,	हे ,,
२	पितरं	,,	पितॄन्
३	पित्रा	पितृभ्यां	पितृभिः
४	पित्रे	,,	पितृभ्यः
५	पितुः	,,	,,
६	,,	पित्रोः	पितॄणाम्
७	पितरि	,,	पितृषु

इनमें भिन्नता जो है वह भी देखिये—

प्रथमा	कर्ता	कर्तारौ	कर्तारः
,,	पिता	पितरौ	पितरः

यहां " कर्तारौ " के समान " पितारौ " नहीं हुआ। " कर्तारः " के समान " पितारः " नहीं हुआ। यह भेद पाठक स्मरणमें रखे।

वक्तृ (बोलनेवाला, वक्ता)

(१) वक्ता, वक्तारौ, वक्तारः। (सं.) हे वक्तः, हे वक्तारौ, हे वक्तारः। (२) वक्तारं, वक्तारौ, वक्तॄन्। (३) वक्त्रा, वक्तृभ्यां, वक्तृभिः। (४) वक्त्रे, वक्तृभ्यां, वक्तृभ्यः। (५) वक्तुः, वक्तृभ्यां, वक्तृभ्यः। (६) वक्तुः, वक्त्रोः, वक्तॄणां, (७) वक्तरि, वक्त्रोः, वक्तृषु।

इस प्रकार पाठक ऋकारान्त शब्दोंके रूप बना सकते हैं। पाठकोंकी सुविधाके लिये अब नीचे ऋकारान्त शब्द दिये जाते हैं, उनके पूर्वोक्त प्रकार रूप पाठक बनाकर वाक्य करें—

शब्द

कर्तृ=करनेवाला	स्रष्टृ=उत्पन्न करनेवाला
स्तोतृ=स्तुति करनेवाला	भर्तृ=भरण करनेवाला
धातृ=धारण करनेवाला	निर्मातृ=निर्माण करनेवाला
विधातृ= "	* नृ=मनुष्य
वक्तृ=बोलनेवाला	* भ्रातृ=भाई
क्षत्तृ=सारथी	* जामातृ=दामाद
त्वष्टृ=तर्खाण	* देवृ=देवर

[* इन शब्दोंके " पितृ " शब्दके समान रूप होते हैं।]

इन शब्दोंके रूप बनाकर पाठक पूर्ववत् वाक्य बनानेका यत्न करें—

अस्य विश्वस्य कः कर्ता अस्ति ?=इस विश्वका कर्ता कौन है ?

जगत्स्रष्टारं अहं पूजयामि=जगत्स्रष्टाकी मैं पूजा करता हूं।

स्तोता इदानीं किं वदति ?=स्तुति करनेवाला अब क्या बोलता है ?

धात्रा इदं विश्वं रचितं=धाताने यह विश्व रचा है।

अस्य विश्वस्य ईश्वरः एव विधाता अस्ति=इस विश्वका ईश्वर ही विधाता है।

तव जामाता कुत्र गतः ?= तेरा दामाद कहां गया है ?

त्वं जामात्रे किं दातुं इच्छसि ?=तू दामादके लिये क्या देना चाहता है ?

तव जामातुः गृहं अत्र नास्ति=तेरे दामादका घर यहां नहीं है ।

मम पंच भ्रातृभिः एतत् निर्मितम् ।=मेरे पांच भाइयोंने यह निर्माण किया ।

त्वष्टारं अत्र आनय=तर्खाणको यहां ला ।

क्षत्तारं तत्र इदानीं एव नय=सारथी को वहां अभी ले जा।

तव गृहस्य निर्माता इदानीं एव अत्र आगतः=तेरे घरका निर्माण करनेवाला अभी यहां आया था ।

धातुः इच्छा बलीयसी=धाता (ईश्वर) की इच्छा बलवती है ।

इस रीतिसे छोटे छोटे वाक्य बनानेका अभ्यास पाठकोंको करना चाहिये । सातों विभक्तियोंके रूप बनानेसे उनका वाक्यों में प्रयोग करना सुगम है । इस लिये इस पाठमें इन शब्दोंके रूप बनाना पाठक सीखें ।

पाठ ९

पूर्व पाठों में दिये हुए रामायण के वाक्य इस पाठमें संधि बना कर दिये जाते हैं । इसके पठनसे संधियोंका ज्ञान पाठकोंको हो सकता है ।–

सुमंत्रो गत्वा रामं ददर्श । ववन्दे च तं चोवाच च । हे

राम! पिता त्वां द्रष्टुमिच्छति। गम्यतां तत्र मा चिरमिति। एवमुक्तो नरसिंहो रामः सीतां संमान्यान्तःपुरमत्यगात्। अभिवाद्य च पितुश्चरणौ सुसमाहितः कैकेय्या अपि चरणौ ववन्दे। नृपतिस्तु दीनो न शशाकेक्षितुं किं पुनराभिभाषितुम्। तच्च नरपते रूपं भयावहं दृष्ट्वा भयमापन्नो रामः।

कैकेयीमभिवाद्यैवाब्रवीत् कच्चिन्मया नापराद्धं येन मे कुपितः पिता? कच्चिन्न भरते शत्रुघ्ने मातॄणां वा मेऽशुभम्? नृपे तु कुपिते मुहूर्तमपि जीवितुं नोत्सहे।

कैकेयी तु निर्लज्जा तदाऽऽत्महितं वच उवाच। राम! राजा न कुपितः। नास्य किंचन व्यसनं मनोगतं तु किंचित्त्वद्भया-न्नानुभाषते। त्वामप्रियं वक्तुं न प्रवर्ततेऽस्य वाणी। एष हि पुरा मामभिपूज्य वरं च दत्वा पश्चात्तप्यते राजा यथाऽन्यः प्राकृतः।

एतच्छ्रुत्वा रामो व्यथित उवाच। अहो धिक्! हे देवि! मामेवं वक्तुं नार्हसि। राज्ञो वचनात्पावकेऽपि पतेयम्। त-द्राज्ञो यदभिकांक्षितं तद् ब्रूहि। रामो द्विर्नाभिभाषते।

ततः कैकेयी तं दारुणं वच उवाच। हे राम! ते पित्रा मे वरौ दत्तौ। तत्र मे याचितोऽधुना राजा भरतस्याभिषेचनं तव चाद्यैव दंडकारण्ये गमनम्। यदि पितरमात्मानं च सत्यप्रतिज्ञं कर्तु-मिच्छसि तत्पितुः संनिदेशे तिष्ठ। नव पंच च वर्षाणि त्वया ऽरण्यं प्रवेष्टव्यम्। त्यक्त्वाऽभिषेकं जटाचीरधारी भव। भरतस्त्विमां पृथिवीं प्रशास्तु।

मरणोपमं वचः श्रुत्वा रामो विव्यथे । कैकेयीं चाब्रवीत् ।

इस पाठको अनेकवार पाठक पढें। इससे संधिसहित संस्कृत पढने और समझनेका अभ्यास हो जायगा। अब इस पाठमें आये समासोंका विवरण दिया जाता है उसका पाठ पाठक ध्यानसे करें—

समास ।

नरसिंहः=नराणां सिंहः (मनुष्योंमें शेर)

सुसमाहितः=सुष्ठु समाहितः (उत्तम शांत)

नृपतिः=नृणां पतिः (मनुष्योंका पति)

नरपतिः=नराणां पतिः " "

अशुभं=न शुभं (जो शुभ नहीं)

मनोगतं=मनसि गतं (मनमें गया हुआ)

त्वद्भयं=तव भयं (तेरा भय)

अप्रियं=न प्रियं (जो प्रिय नहीं)

सत्यप्रतिज्ञः=सत्या प्रतिज्ञा यस्य सः (सत्य है प्रतिज्ञा जिसकी वह)

जटाचीरधारी=जटा च चीरं च जटाचीरे। जटाचीरे धारयतीति जटाचीरधारी। (जटा और वल्कल धारण करनेवाला)

मरणोपमं=मरणस्य उपमा यस्य तत्। (मरणकी ही उपमा जिसको है)

अब पाठकों की सुविधाके लिये कुछ संधि यहां बताये जाते हैं—

सुमंत्रो गत्वा=सुमंत्रः गत्वा ।

चोवाच=च उवाच ।

नरसिंहो रामः=नरसिंहः रामः ।

पितुश्चरणौ=पितुः चरणौ ।

कैकेय्या अपि=कैकेय्याः अपि ।

शशाकेक्षितुं=शशाक ईक्षितुम् ।

तच्च नरपते रूपं=तत् च नरपतेः रूपं ।

नापराद्धं=न अपराद्धं ।

किंचित्त्वद्भयान्नानुभाषते=किंचित् त्वत-भयात् न अनुभाषते ।

एतच्छ्रुत्वा=एतत् श्रुत्वा ।

तद्ब्रूहि=तत् ब्रूहि ।

पाठक इस ढंगसे संधियोंका विचार करें । वारंवार इन संधियोंको देखनेसे ही इनका परिचय हो जायगा । और एकवार इनका परिचय हुआ तो फिर कोई भी कठिनता नहीं रहेगी ।

पाठ १०

इस समय तक पाठक पुल्लिंग के शब्दोंके रूप बनाना सीख चुके हैं । अब थोडे ही अभ्यास से नपुंसकलिंग शब्दोंके रूप बनानेका ज्ञान प्राप्त हो सकता है इसलिये इसका विधि यहां दिया जाता है । अकारान्त नपुंसकलिंग शब्दके रूप निम्नलिखित प्रकार होते हैं—

ज्ञान

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१	ज्ञानं	ज्ञाने	ज्ञानानि
सं०	हे ज्ञान	हे ,,	हे ,,
२	ज्ञानं	,,	,,
३	ज्ञानेन	ज्ञानाभ्यां	ज्ञानैः
४	ज्ञानाय	,,	ज्ञानेभ्यः
५	ज्ञानात्	,,	,,
६	ज्ञानस्य	ज्ञानयोः	ज्ञानानाम्
७	ज्ञाने	,,	ज्ञानेषु

प्रथमा, संबोधन और द्वितीया के रूपोंको छोड कर अन्य विभक्तियोंके रूप अकारान्त पुल्लिंग शब्दोंके रूपोंके समानही होते हैं। यह समानता पाठक अवश्य देखें। इसके जाननेसे नपुंसकलिंग शब्दोंके रूप बनाना बहुतही सुगम हो जायगा।

मित्र।

१	मित्रं	मित्रे	मित्राणि
सं.	हे मित्र	हे ,,	हे ,,
२	मित्रं	,,	,,

शेष रूप अकारान्त पुल्लिंग शब्दोंके रूपोंके समानही होते हैं जैसा—

(३) मित्रेण, मित्राभ्यां, मित्रैः। (४) मित्राय मित्रा-

भ्यां, मित्रेभ्यः । (५) मित्रात्, मित्राभ्यां, मित्रेभ्यः । (६) मित्रस्य, मित्रयोः, मित्राणां । (७) मित्रे, मित्रयोः, मित्रेषु ।

मित्र शब्दमें रकार होनेके कारण " मित्राणि, मित्रेण, मित्राणां " इन रूपोंमें नकारका ण हुआ है । इसका नियम तृतीय पाठमें दिया ही है ।

शब्द

हृदयं=हृदय
क्षत्रं=क्षात्रतेज
दारिद्र्यं=दारिद्रता
शरीरं=शरीर
वदनं=तोंड
मुखं= "
कुंडलं=कर्णका भूषण
कंकणं=कंकण
क्षौमं=रेशीमका वस्त्र
कौशेयं=कोसा वस्त्र
दुकूलं=रेशीम का वस्त्र
आसनं=आसन
ब्राह्मण्यं=ब्राह्मणत्व
कुलं=कुल
वनं=अरण्य
विपिनं=,,
काननं=,,

आननं=मुख
भेषजं=औषध
क्षेत्रं=खेत
श्रोत्रं=कान
रत्नं=रत्न
वसनं=वस्त्र
अंशुकं=,,
सुवर्णं=सोना
ताम्रं=तांबा
चंदनं=चंदन
सख्यं=मित्रता
तर्पणं=तृप्ति
चातुर्वर्ण्यं=चार वर्णोंकी व्यवस्था
उद्यानं=बाग
यानं=रथ
वेतनं=तनख्वा

इन अकारान्त नपुंसकलिङ्ग शब्दोंके सातों विभक्तियोंके रूप बना कर आप विविध वाक्य अब बना सकते हैं—

मम हृदयं कंपते=मेरा हृदय कांपता है।

रामचंद्रस्य क्षत्रं प्रशंसनीयं=रामचंद्रका क्षात्रतेज प्रशंसा योग्य है।

तस्य मुखे शोभनं भाषणं भवति=उसके मुखमें सुंदर भाषण होता है।

रोगस्य निवारकं औषधं देहि=रोगका निवारण करनेवाला औषध दो।

तस्य क्षेत्रे एकः तडागः अस्ति=उसके खेतमें एक तालाव है।

त्वं विविधैः रत्नैः कंठं किं न भूषयसि ?=तू विविध रत्नोंसे कंठको क्यों नहीं भूषित करता है ?

मम कंकणं कौशेयं वस्त्रं च कुत्र रक्षितं इति न स्मरामि=मेरा कंकण और कोसा वस्त्र कहां रखा यह नहीं स्मरण है।

सुवर्णस्य कंकणं भवति=सोनेका कंकण होता है।

तस्य कंकणानि बहूनि सन्ति=उसके कंकण बहुत हैं।

सः अनेकानि यानानि गृहीत्वा उद्याने भ्रमति=वह अनेक गाडियां लेकर बागमें भ्रमण करता है।

जनानां हितार्थाय चातुर्वर्ण्यं कृतम्=लोगोंके हित के लिये चातुर्वर्ण्य किया।

पाठक इस रीतिसे अनेकानेक छोटे मोटे वाक्य बनावें और शब्दोंका उपयोग करनेका अभ्यास बहुत करें। इतने साधन से पाठक बहुतही वाक्य बना सकते हैं।

पाठ ११.

इस पाठमें इकारान्त नपुंसकलिंग शब्दोंके रूप देखिये—

वारि (जल)

१ वारि	वारिणी	वारीणि
सं. हे वारे, हे वारि हे	”	हे ”
२ वारि	”	”
३ वारिणा	वारिभ्यां	वारिभिः
४ वारिणे	”	वारिभ्यः
५ वारिणः	”	”
६ ”	वारिणोः	वारीणाम्
७ वारिणि	”	वारिषु

इस शब्दके रूपोंके समान इकारान्त नपुंसकलिंगी शब्दोंके रूप पाठक करें। प्रायः संस्कृतमें विशेषण के प्रसंगमें इकारान्त नपुंसकलिंग शब्दोंके रूप करनेकी आवश्यकता होती है। क्यों कि स्वतंत्र शब्द बहुत ही थोडे हैं और कई शब्द ऐसे हैं कि जिनके रूप कुछ भिन्नताके साथ ही बनते हैं—

दधि (दही)

१ दधि	दधिनी	दधीनि
सं० हे दधे, हे दधि !	दधिनी	दधीनि
२ दधि	”	”

३ दध्ना	दधिभ्यां	दधिभिः
४ दध्ने	"	दधिभ्यः
५ दध्नः	"	"
६ दध्नः	दध्नोः	दध्नां
७ दध्नि, दधनि	"	दधिषु

पाठक इसमें एक वचनके रूपोंमें जो विशेष भेद है वह स्मरण रखें। इसीप्रकार निम्नलिखित शब्दोंके रूप होते हैं।

इकारान्त नपुंसकलिंग के शब्द—

अस्थि=हड्डी **सक्थि**=जांघ	**आक्षि**=आंख

स पुरुषः सक्थ्ना तं ताडयति=वह पुरुष जंघासे उसे ताडन करता है।

अस्थ्ना अस्थि रोहतु=हड्डीसे हड्डी बढे।

जंतुः अक्षिभ्यां पश्यति=प्राणी आंखोंसे देखता है।

सः दध्ना सह ओदनं भक्षयति=वह दही के साथ चावल खाता है।

अब इस पाठमें पूर्व पाठमें दिये हुए रामायणके वाक्योंका संयुक्त वाक्य बनाकर देते हैं—

राम उवाच मातः! एवमस्तु। अहमितो वनं गमिष्यामि। राज्ञः प्रतिज्ञामनुपालयन् जटाचीरधरश्च भवामि। इदं तु ज्ञातुमिच्छामि, किमर्थं महीपतिर्यथापूर्वं मामिदानीं नाऽभिनंदति।

हितेन गुरुणा कृतज्ञेन नृपेण पित्रा नियुज्यमानोऽहं । किं प्रियं न कुर्याम् । एतदेकमेव मे हृदयं दहति यद्राजा मां स्वयमेवं भरतस्याभिषेचनं नाह । तथापि राजानमाश्वासय । दूता गच्छन्तु भरतं मातुलकुलादानयितुम् । एष अहमपि गच्छामि दण्डकारण्यं चतुर्दशसमा वस्तुम् ।

एतच्छ्रुत्वा हृष्टा कैकेयी । त्वरयामास राघवं प्रस्थानार्थम्। कैकेय्युवाच—व्रीडान्वितो नृपः स्वयं नाभिभाषते त्वाम् । यावत्त्वं न यातोऽसि न तावत्तव पिता स्नास्यते भोक्ष्यतेऽपि ।

राजा दशरथ एतद्वचनं श्रुत्वा दीर्घं निश्वस्य 'धिक्कष्ट'मित्युक्त्वा मूर्छितो न्यपतत् । कशया हतो वाजीव रामोऽपि वनं गन्तुं कृतत्वरो बभूव । स राजानमुत्थाप्योवाच ।

देवि ! नाहमर्थपरः । मां धर्ममास्थितं विद्धि । पितृशुश्रूषाया महत्तरं किंचिद्धर्माचरणं नास्ति । भवतु, मातरमापृच्छे तावत्, सीतां चानुनयामि । ततोऽद्यैव महद्वनं गमिष्यामि । भवत्या तथा कर्तव्यं यथा भरतो राज्यं पालयेत् पितरं च शुश्रूषेत्; हि नः स एव धर्मः ।

विसंज्ञस्याऽपि राज्ञस्तथा कैकेय्या अपि चरणौ रामो निष्पपात । निष्क्रम्य चांतःपुरात् स्वं सुहृज्जनं च ददर्श । क्रुद्धो लक्ष्मणो बाष्पपूरितलोचनस्तमनुजगाम । तदा माता कौसल्या तमाह—हे राम ! राजर्षीणां वृद्धानां धर्मशीलानां कुलोचितं धर्मं कीर्तिमायुश्चाप्नुहि ।

पाठक इस पाठको वारंवार पढें और बहुत अभ्यास करें। किसी वाक्य में कोई कठिनता हुई तो इसी पुस्तक के पाठ ७ में वह वाक्य देखें। वहां पदच्छेदपूर्वक यही वाक्य है उसे देखनेसे सब संदेह दूर हो सकते हैं।

पाठ १२.

इस पाठमें उकारान्त नपुंसकलिंग शब्दोंके रूपोंका अभ्यास कीजिये–

मधु

१ मधु	मधुनी	मधूनि
सं. हे मधो, हे मधु	हे "	हे "
२ मधु	"	"
३ मधुना	मधुभ्यां	मधुभिः
४ मधुने	"	मधुभ्यः
५ मधुनः	"	"
६ "	मधुनोः	मधूनां
७ मधुनि	"	मधुषु

इस प्रकार उकारान्त नपुंसकलिंग शब्दोंके रूप पाठक कर सकते हैं।

शब्द

वस्तु=पदार्थ	अश्रु=आंसू
मधु=शहद	दारु=लकडी

श्मश्रु=डाढी
जानु=घुटना
त्रपु=टीन, रांगा, सीसा
तालु=तालू
जतु=लाख
सानु=पर्वतशिखर

इन शब्दोंके रूप बनाकर पूर्वोक्त प्रकार वाक्यों में उनका प्रयोग करनेका अभ्यास कीजिये–

तत्र तव पेटिकायां कानि वस्तूनि संति=वहां तेरी पेटीमें क्या क्या पदार्थ हैं ?

अस्य मधुनः मधुरः गंधः भवति=इस शहदका मीठा सुवास होता है।

सः इदानीं अश्रूणि मोचयति=वह अब आंसू निकालता है।

अत्र दारूणां भवनं त्वया किं न निर्मितं=यहां लकडियोंका घर तूने क्यों नहीं बनाया ?

त्वं स्वयं एव श्मश्रु मुंडसि वा न ?=तू स्वयं ही डाढी मुंडवाता है वा नहीं ?

तव तालुनि का व्यथा अस्ति ?=तेरी तालुमें क्या व्यथा है ?

सानूनि गंधः सुगंधी करोति=शिखरोंको सुवास सुगंधित करता है।

इदानीं तव जानुनी कथं स्तः ?=अब तेरे दोनों घुटने कैसे हैं ?

अब इस पाठमें कुछ श्लोकोंका अर्थ देखिये–

श्लोक।

आत्मोपभोगलिप्सार्थं नयमर्थेप्सुता मम।
भरणार्थं तु विप्राणां ब्रह्मन्कांक्षे न लोभतः॥

म. भारत वन. अ. २।६२

अन्वय-हे ब्रह्मन् ! इयं मम अर्थेप्सुता आत्मोपभोगलिप्सार्थं न। विप्राणां भरणार्थं तु कांक्षे, न लोभतः।

संस्कृत टीका=हे (ब्रह्मन्) हे ब्राह्मण ! इयं मम (अर्थेप्सुता) अर्थस्य धनस्य ईप्सुता इच्छा [आत्मोपभोगलिंप्सार्थं] आत्मनः उपभोगः आत्मोपभोगः आत्मोपभोगस्य लिप्सा इच्छा आत्मोपभोगलिप्सा । आत्मोपभोगलिप्सार्थं स्वकीयोपभोगस्य इच्छार्थं न नास्ति। विप्राणां ब्राह्मणानां भरणार्थं पोषणार्थं तु एव कांक्षे इच्छामि। न तु लोभतः लोभेन न कांक्षे।

अर्थ—हे ब्राह्मण ! यह मेरी धनप्राप्तिकी इच्छा अपने भोगके लिये नहीं है। किंतु ब्राह्मणों के पोषणके लिये ही मैं धनकी इच्छा करता हूं, लोभसे नहीं।

कथमस्मद्विधो ब्रह्मन्वर्तमानो गृहाश्रमे।
भरणं पालनं चापि न कुर्यादनुयायिनाम्।

म॰ भारत वन २।५३

अन्वय—हे ब्रह्मन् ! गृहाश्रमे वर्तमानः अस्मद्विधः अनुयायिनां अपि भरणं पालनं च कथं न कुर्यात् ?

संस्कृतटीका—हे ब्रह्मन् ! हे विप्र ! गृहाश्रमे गृहस्थाश्रमे वर्तमानः वसन् अस्मद्विधः अस्मत्सदृशः क्षत्रियः अनुयायिनां अनुगामिनां जनानां अपि भरणं पोषणं, पालनं रक्षणं च कथं न कुर्यात् ? अस्मत्सदृशेन क्षत्रियेण अवश्यं कर्तव्यम् इति भावः।

अर्थ—हे ब्राह्मण ! गृहस्थाश्रम में रहने वाले हमारे सदृश क्षत्रियने अपने अनुगामि जनों का भी पालनपोषण कैसे न किया जावे ?

पाठक इस प्रकार श्लोकोंका पाठ करें । ये श्लोक कंठ करने योग्य हैं । अतः श्लोकोंको कंठ करके उनका अर्थ संस्कृतमें ही प्रथम पढनेका यत्न पाठक करें । अन्वय और संस्कृत टीका देखनेके पश्चात् यदि कोई कठिनता रही तो ही भाषाका अर्थ देखना उचित है अन्यथा कोई आवश्यकता नहीं है । इससे पाठकोंका संस्कृत के साथ परिचय अधिकाधिक होता जायगा । इस लिये इस सूचना का विचार पाठक करें और तदनुसार उत्तम अभ्यास करें ।

पाठ १३

इस पाठमें ऋकारान्त नपुंसकलिंग शब्दोंके रूप देखिये—

कर्तृ (करनेवाला)

१	कर्तृ	कर्तृणी	कर्तॄणि
सं.	हे कर्तृ	हे ,,	हे ,,
२	कर्तृ	,,	,,
३	कर्त्रा, कर्तृणा	कर्तृभ्यां	कर्तृभिः
४	कर्त्रे, कर्तृणे	,,	कर्तृभ्यः
५	कर्तुः, कर्तृणः	,,	,,

६ ,,	,,	कर्तृणोः	कर्तृणां
७ कर्तरि, कर्तृणि	,,		कर्तृषु

इन रूपोंमें पाठक देखें कि एकवचन के रूपेंमें एक रूप पुल्लिंग ऋकारांत शब्दके रूपोंके समान हुआ है और दूसरा नपुंसक शब्दके समान हुआ है। पाठक इस विशेषताका स्मरण रखें।

"कर्तृ" शब्दका अर्थ "कर्ता, करनेवाला" है अतः यह विशेषण है। जब इसके रूप पुल्लिंगके कार्यमें उपयुक्त होंगे तब पुल्लिंग प्रकरणमें दिये हुए रूपोंके समान करने चाहिये; परंतु जहां इसका उपयोग नपुंसक लिंगके शब्दोंके साथ करना होगा। उस समय नपुंसक रूपोंकी रीतिके अनुसार रूप करने चाहिए। इतना नियम इस शब्दके उपयोगके समय अवश्य ध्यानमें रखना चाहिये।

शब्द।

ज्ञातृ=जाननेवाला	ग्रहीतृ=लेनेवाला
कर्तृ=करनेवाला	वक्तृ=बोलनेवाला
दातृ=देनेवाला	ईशितृ=स्वामी होनेवाला
भोक्तृ=भोगनेवाला	धातृ=धारण करनेवाला
नेतृ=चलानेवाला	भवितृ=होनेवाला

वाक्य

ये शब्द पुल्लिंगके समय पुल्लिंगकी रीतिसे रूप बनाते हैं और नपुंसक लिंगके प्रयोगके समान नपुंसक लिंगकी रीतिसे रूप बनाते हैं।

ज्ञानं एव सर्वस्य कर्तृ अस्ति=ज्ञान ही सबका कर्ता है।
नेत्रं जन्तोः नेतृ भवति=नेत्रही प्राणीका चलानेवाला होता है।
ब्रह्म सर्वस्य ईशितृ=ब्रह्म सबका स्वामी है।

इस रीतिसे वाक्य बनानेका अभ्यास पाठक करें। इस प्रकारके प्रयोग थोडेही होते हैं इसलिये यहां बहुत वाक्य दिये नहीं। अब कुछ श्लोक दिये जाते हैं।

श्लोक।

तृणानि भूमिरुदकं वाक्चतुर्थी च सूनृता।
सतामेतानि गेहषु नोच्छिद्यन्ते कदाचन॥

म. भारत वन. २।५५

अन्वयः—तृणानि भूमिः उदकं चतुर्थी सूनृता वाक् एतानि सतां गेहेषु कदाचन न उच्छिद्यन्ते।

संस्कृतटीका—तृणानि तृणमयानि आसनानि, भूमिः पृथिवी स्थानं, उदकं जलं, चतुर्थी सूनृता सत्या वाक् वाणी, एतानि सतां सज्जनानां गेहेषु गृहेषु कदाचन कदा अपि न उच्छिद्यन्ते छिन्नानि न भवंति।

अर्थ—घासके आसन, भूमि अर्थात् स्थान, जल और सीधा सत्य-भाषण ये सज्जनोंके घरोंमें कभी कम नहीं होते। (अर्थात् अतिथि आनेपर उसकी सेवा के लिये इतने पदार्थ तो अवश्य रहते ही हैं।)

देयमार्तस्य शयनं स्थितश्रान्तस्य चासनम् ।
तृषितस्य च पानीयं क्षुधितस्य च भोजनम् ।

म. भारत. २।९६

अन्वय—आर्तस्य शयनं देयं, स्थितश्रांतस्य च आसनं देयं, तृषितस्य च पानीयं, क्षुधितस्य च भोजनम् ।

संस्कृतटीका—आर्तस्य रोगार्तस्य शयनं देयं, स्थितश्रांतस्य स्थितः उर्ध्वस्थितः तत्सहितस्य श्रांतस्य च आसनं देयं, तृषितस्य तृषया क्लिष्टस्य पानीयं जलं देयं, क्षुधितस्य च भोजनं दातव्यम् ।

अर्थ—रोगी के लिये शय्या, थके मांदेके लिये आसन, प्यासेको जल और भूखे को अन्न देना चाहिये ।

चक्षुर्दद्यान्मनो दद्याद्वाचं दद्यात्सुभाषिणीम् ।
उत्थाय चासनं दद्यादेष धर्मः सनातनः ।

म. भारत वन २।५७

अन्वय—चक्षुः दद्यात्, मनः दद्यात, सुभाषिणीं वाचं दद्यात, उत्थाय च आसन दद्यात्, एषः सनातनः धर्मः ।

अर्थ—(अतिथि अपने घर आने पर उसके लिये) अपना आंख देना, मन देना, मीठा भाषण देना, उठकर आसन देना यह सनातन धर्म है ।

अतिथिके कार्य के लिये आंख, मन आदि अपने अवयव अर्पण करने चाहियें यह तात्पर्य है ।

पाठक इन श्लोकों का अच्छा पाठ करें और अन्वयादिकी ओर भी अच्छा ध्यान दें ताकि उनके समझनेमें कोई दोष न रहे।

पाठ १४

इस पाठमें निम्न लिखित श्लोकोंका अध्ययन कीजिये—

आत्मार्थं पाचयेन्नान्नं न वृथा घातयेत्पशून्।
न च तत्स्वयमश्नीयाद्विधिवद्यन्न निर्वपेत्॥

म. भारत वन. २।५९

अन्वय—आत्मार्थं अन्नं न पाचयेत्। पशून् वृथा न घातयेत्। तत् स्वयं न अश्नीयात् यत् विधिवत् न निर्वपेत्॥

संस्कृत टीका—आत्मार्थं आत्मनः स्वस्य अर्थं स्वार्थाय एव अन्नं भोजनादिकं न पाचयेत् न पक्तव्यम्। पशून् चतुष्पदादीन् वृथा व्यर्थं न घातयेत्। तत् अन्नादिकं स्वयं न अश्नीयात् भुंजीयात् यत् विधिवत् विधिं अनुसृत्य न निर्वपेत्।

अर्थ—अपने लिये ही भोजन पकाना नहीं चाहिये। पशुओं का व्यर्थ हनन करना योग्य नहीं है। वह अन्न स्वयं नहीं खाना चाहिये जो विधिपूर्वक दिया नहीं जावे।

श्वभ्यश्च श्वपचेभ्यश्च वयोभ्यश्चाऽवपेद्भुवि।
वैश्वदेवं हि नामैतत्सायं प्रातश्च दीयते॥

म. भारत वन. २।६०

अन्वय—श्वभ्यः च श्वपचेभ्यः च वयोभ्यः च भुवि आवपेत्। एतत् वैश्वदेवं नाम सायं प्रातः च दीयते ।

संस्कृतटीका—श्वभ्यः श्वानेभ्यः श्वपचेभ्यः चांडालेभ्यः, वयोभ्यः वायसेभ्यः भुवि भूमौ पृथिव्यां आवपेत् निर्वपेत् । एतत् वैश्वदेवनामकं अन्नदानं सायं सायंकाले तथा प्रातःकाले अपि दीयते ।

अर्थ—कुत्ते, चांडाल, कौवे आदिके लिये भूमिपर अन्न रखा जावे । यह वैश्वदेव नामक अन्नदान सायंकाल और प्रातः समय दिया जाता है ।

विघसाशो भवेत्तस्मान्नित्यं चाऽमृतभोजनः ।
विघसो भुक्तशेषं तु यज्ञशेषं तथाऽमृतम् ।

म. भारत. वन २।६१

अन्वय—तस्मात् नित्यं विघसाशः अमृतभोजनः च भवेत्। भुक्तशेषं तु विघसः यज्ञशेषं तथा अमृतम् ।

संस्कृतटीका—तस्मात् पूर्वोक्तकारणात् एव नित्यं प्रतिदिनं विघसाशः विघसं भुक्तशेषं अन्नं अश्नाति इति विघसाशः तथा जनः अमृतं यज्ञशेषं अन्नं भोजनं यस्य सः अमृतभोजनः भवेत् । भुक्तशेषं सर्वेषां अतिथीनां भोजनानंतरं यद् अवशिष्टं तत् अन्नं भुक्तक्षेषं तद् एव भक्षणीयं अथवा यज्ञशेषं यज्ञस्य शिष्टं अवशिष्टं अन्नं तत् अमृतरूपमेव भवति तत् भक्षणीयम् ।

अर्थ—इसलिये प्रतिदिन अतिथिभोजनसे बचा हुआ अन्न तथा यज्ञका प्रसाद रूप अन्नही खाना योग्य है। अतिथिभोजनके पश्चात् जो बचता है उस अन्नका नाम विघस है और यज्ञका अवशेष जो अन्न है वह अमृत कहलाता है।

चक्षुर्दद्यान्मनो दद्याद्वाचं दद्याच्च सूनृताम्।
अनुव्रजेदुपासीत स यज्ञः पंचदक्षिणः॥

म. भारत वन. २।६२

अन्वय—चक्षुः दद्यात्, मनः दद्यात्, सूनृतां वाचं दद्यात्, अनुव्रजेत्, उपासीत सः पंचदक्षिणः यज्ञः।

अर्थ—[अतिथिके लिये] अपना आख दें। मन दें, उत्तम मीठा भाषण दें, उसके पीछे चलें; उसके पास बैठें यह पांच दक्षिणाओंसे युक्त यज्ञ कहलाता है।

एवं यो वर्तते वृत्तिं वर्तमानो गृहाश्रमे।
तस्य धर्मं परं प्राहुः कथं वा विप्र मन्यसे।

म. भारत. वन २।६४

अन्वय—यः गृहाश्रमे वर्तमानः एवं वृत्तिं वर्तते, तस्य परं धर्मं प्राहुः। हे विप्र! कथं वा मन्यसे?

संस्कृतटीका—यः मनुष्यः गृहाश्रमे गृहस्थाश्रमे वर्तमानः स्थितः एवं ईदृशीं वृत्तिं वर्तते ईदृशं आचरणं करोति, तस्य मानवस्य धर्मं परं श्रेष्ठं प्राहुः विशेषेण आहुः। हे विप्र! कथं वा मन्यसे? तव मतं कीदृक् अस्ति?

अर्थ—जो गृहस्थाश्रम में रहने वाला मनुष्य इस प्रकार का वर्तन करता है उसका, धर्म श्रेष्ठ कहते हैं। हे ब्राह्मण! तुम्हारा मत क्या है ?

पाठक इन श्लोकोंका अच्छा अभ्यास करें। श्लोक, अन्वय और संस्कृत टीकाका खूब पठन और मनन करनेसे पाठकों को बडा लाभ हो सकता है। अब इतने श्लोक पढनेके बाद पाठकों की प्रगति बहुत हो गई हैं।

स्वाध्यायके ग्रंथ।

[१] यजुर्वेदका स्वाध्याय।

(१) य. अ. ३० की व्याख्या। नरमेध।
मनुष्योंकी सच्ची उन्नतिका सच्चा साधन। १)

(२) य. अ. ३२ की व्याख्या। सर्वमेध।
"एक ईश्वरकी उपासना।" मू. ॥)

(३) य. अ. ३६ की व्याख्या। शांतिकरण।
"सच्ची शांतिका सच्चा उपाय।" मू.॥)

[२] देवता-परिचय-ग्रंथमाला।

(१) रुद्र देवताका परिचय। मू. ॥)
(२) ऋग्वेदमें रुद्र देवता। मू. ॥=)
(३) ३३ देवताओंका विचार। मू. =)
(४) देवताविचार। मू. ≡)
(५) वैदिक अग्नि विद्या। मू. १॥)

[३] योग-साधन-माला।

(१) संध्योपासना। मू. १॥)
(२) संध्याका अनुष्ठान। मू. ॥)
(३) वैदिक-प्राण-विद्या। मू. १)
(४) ब्रह्मचर्य। मू. १।)
(५) योगसाधन की तैयारी। मू. १)
(६) योग के आसन। मू. २)
(७) सूर्यभेदन व्यायाम। मू. ।=)

[४] धर्म-शिक्षाके ग्रंथ ।

(१) बालकोंकी धर्मशिक्षा । प्रथमभाग । —)
(२) बालकोंकी धर्मशिक्षा । द्वितीयभाग । =)
(३) वैदिक पाठ माला । प्रथमपुस्तक । ≡)

[५] स्वयंशिक्षकमाला ।

(१) वेदका स्वयंशिक्षक । प्रथमभाग । १॥)
(२) वेदका स्वयंशिक्षक । द्वितीय भाग । १॥)

[६] आगम-निबंध-माला ।

(१) वैदिक राज्य पद्धति । मू. ।-)
(२) मानवी आयुष्य । मू. ।)
(३) वैदिक सभ्यता । मू. ॥।)
(४) वैदिक चिकित्सा-शास्त्र । मू. ।)
(५) वैदिक स्वराज्यकी महिमा । मू. ॥)
(६) वैदिक सर्प-विद्या । मू. ॥)
(७) मृत्युको दूर करनेका उपाय । मू. ॥)
(८) वेदमें चर्खा । मू. ॥)
(९) शिव संकल्पका विजय । मू. ॥।)
(१०) वैदिक धर्मकी विशेषता । मू. ॥)
(११) तर्कसे वेदका अर्थ । मू. ॥)
(१२) वेदमें रोगजंतुशास्त्र । मू. ।≡)
(१३) ब्रह्मचर्यका विघ्न । मू. =)
(१४) वेदमें लोहेके कारखाने । मू. —)
(१५) वेदमें कृषिविद्या । मू. ≡)
(१६) वैदिक जलविद्या । मू. =)
(१७) आत्मशक्ति का विकास । मू. ।-)

मंत्री-स्वाध्याय-मंडल,
औंध, (जि. सातारा).

अंक ९

संस्कृत-पाठ-माला।

(संस्कृत भाषाका अध्ययन करनेका सुगम उपाय।)
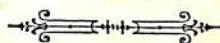
नवम भाग।

लेखक और प्रकाशक।

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,

स्वाध्याय मंडल, औंध (जि. सातारा.)

प्रथम वार १०००

संवत् १९८२, शके १८४७, सन १९२५

मूल्य ।-) पांच आने।

अंक ९

संस्कृत-पाठ-माला।

[संस्कृत भाषाका अध्ययन करनेका सुगम उपाय।]

नवम भाग।

लेखक और प्रकाशक।

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,

स्वाध्यायमंडल, औंध (जि. सातारा.)

प्रथमवार १०००

संवत् १९८२, शक १८४७, सन १९२५.

मूल्य ।-) पांच आने।

व्यंजनान्त शब्दोंके रूप।

इस पुस्तक में व्यंजनांत पुल्लिंग शब्दोंके रूप बताये हैं। यदि पाठक इन शब्दोंकी विशेषताका स्मरण रखेंगे तो उनको प्रायः सभी व्यंजनांत शब्दोंके सब विभक्तियों के रूप बनानेका ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

ये रूप कंठ करनेकी आवश्यकता नहीं है, प्रत्युत किस विभक्ति के किस रूपमें क्या विशेषता है यही ध्यानपूर्वक देखना चाहिये।

यदि पाठक इतनी ही विशेषता ध्यानपूर्वक देखेंगे और स्मरण रखेंगे तो उन का प्रवेश आगे अति सुगमतासे हो सकता है। आशा है कि पाठक इस बातकी ओर विशेष ध्यान देंगे।

स्वाध्याय मंडल
औंध (जि. सातारा)
७।९।२९

लेखक
श्रीपाद दामोदर सातवळेकर.

मुद्रक—रा. रा. **चिंतामण सखाराम देवळे**, मुंबईवैभव प्रेस, सर्व्हंट्स ऑफ इंडिया सोसायटीज् होम, सँढर्स्ट रोड, गिरगांव–मुंबई.

प्रकाशक—**श्रीपाद दामोदर सातवळेकर**, स्वाध्यायमंडल, औंध (जि. सातारा).

ॐ

संस्कृत–पाठ–माला।

नवम भाग।

पाठ १

इस पाठमें निम्नलिखित श्लोकोंका पाठ कीजिये—

विवस्वानुवाच ।

यत्तेऽभिलषितं किंचित्तत्त्वं सर्वमवाप्स्यसि ।
अहमन्नं प्रदास्यामि सप्त पंच च ते समाः॥

म. भारत वन० अ० ३।७१

अन्वयः—यत् किंचित् ते अभिलषितं तत् सर्वं त्वं अवाप्स्यसि । सप्त पंच च समाः अहं ते अन्नं प्रदास्यामि ।

संस्कृतटीका—यत् किंचित् ते तव अभिलषितं अभीष्टं अस्ति तत् सर्वं त्वं अवाप्स्यसि प्राप्स्यसि । सप्त पंच च द्वादश समाः वर्षाणि पर्यंतं अहं ते तुभ्यं अन्नं प्रदास्यामि दास्यामि ।

अर्थ—जो कुछ तेरा इच्छित हो वह सब तू प्राप्त करेगा । बारह वर्ष पर्यंत मैं तुझे अन्न दूंगा ।

गृह्णीष्व पिठरं ताम्रं मया दत्तं नराधिप ।
यावद्वत्स्यति पांचाली पात्रेणानेन सुव्रत ॥ ७२ ॥
फलमूलामिषं शाकं संस्कृतं यन्महानसे ।
चतुर्विधं तदन्नाद्यमक्षय्यं ते भविष्यति ॥ ७३ ॥

अन्वयः—हे नराधिप ! मया दत्तं ताम्रं पिठरं गृह्णीष्व । हे सुव्रत ! अनेन पात्रेण यावत् पांचाली वत्स्यति तावत् यत् महानसे संस्कृतं फलमूलामिषं शाकं चतुर्विधं तत् ते अन्नाद्यं अक्षय्यं भविष्यति ।

संस्कृतटीका—हे नराधिप ! नराणां मनुष्याणां अधिप राजन् ! मया दत्तं ताम्रं ताम्रनिर्मितं पिठरं पात्रं गृह्णीष्व गृहाण। हे सुव्रत ! हे उत्तमव्रतचारिन् । अनेन पात्रेण पिठरेण यावत् पांचाली द्रौपदी वत्स्यति वृत्तिं जनजीविकारूपां करिष्यति तावत्कालपर्यंतं यत् तव महानसे पाकगृहे संस्कृतं कृतं फलमूलामिषं, फलं च मूलं च आमिषं च शाकं च चतुर्विधं अन्नं तत् ते तव अन्नाद्यं अन्नादिकं अक्षय्यं क्षयरहितं भविष्यति ।

अर्थ—हे राजा ! मेरा दिया हुआ तामेका पात्र ले । हे उत्तम नियमोंका पालन करनेवाले ! इस पात्रसे जब तक द्रौपदी परोसती रहेगी तब तक तेरे पाकगृहमें बनाहुआ फल मूल आमिष आदि सब अन्न अक्षय्य होगा ।

लब्ध्वा वरं तु कौन्तेयो जलादुत्तीर्य धर्मवित् ।
जग्राह पादौ धौम्यस्य भ्रातॄंश्च परिषस्वजे ॥

म. भारत वन. ३।८१

अन्वयः–धर्मवित् कौन्तेयः तु वरं लब्ध्वा, जलात् उत्तीर्य, धौम्यस्य पादौ जग्राह, भ्रातॄन् च परिषस्वजे ।

संस्कृत टीका–धर्मवित् धर्मं वेत्ति जानाति इति धर्मवित् धर्मज्ञानी कौन्तेयः कुन्तीपुत्रः धर्मराजः तु वरं लब्ध्वा प्राप्य जलात् सलिलात् उत्तीर्य निष्क्रम्य धौम्यस्य धौम्यनामकस्य आचार्यस्य पादौ चरणौ जग्राह गृहीतवान् । भ्रातॄन् बंधून् च परिषस्वजे आलिलिंग ।

अर्थ—धर्म जाननेवाले कुंतीपुत्र धर्मराज ने वर प्राप्त कर जलसे उतरकर धौम्य के पांव पकडे और भाइयोंको आलिंगन दिया ।

द्रौपद्या सह संगम्य वन्द्यमानस्तया प्रभुः ।
महानसे तदानीं तु साधयामास पांडवः ।

म. भारत वन. ३।८२

अन्वयः–द्रौपद्या सह संगम्य, तया वंद्यमानः, प्रभुः पांडवः तदानीं महानसे साधयामास ।

संस्कृत टीका—द्रौपद्या पांचाल्या सह संगम्य मिलित्वा, तया द्रौपद्या वन्द्यमानः नमस्क्रियमाणः प्रभुः राजा पांडवः धर्मराजः तदानीं तदा एव महानसे पाकगृहे साधयामास पाकक्रियां आरब्धवान् ।

अर्थ—द्रौपदी को मिलकर, उनसे नमन किया हुआ राजा धर्मराज तब पाकगृहमें पाक कर्म को आरंभ करने लगा ।

सांधि ।

यत्तेऽभिलषितं=यत् ते अभिलषितं ।

यावद्वत्स्यति=यावत् वत्स्यति ।

यन्महानसे=यत् महानसे ।

तदन्नाद्यं=तत् अन्नाद्यं ।

कौन्तेयो जलात्=कौन्तेयः जलात् ।

जलादुत्तीर्य=जलात् उत्तीर्य ।

भ्रातृंश्च=भ्रातृन् च

पाठक इस पाठके श्लोकोंका बहुत अच्छा अभ्यास करें ।

पाठ २

इस पाठमें निम्नलिखित शब्दके रूप देखिये—

चकारान्तः पुल्लिंगः सुवाच् शब्दः ।

(सुवाच्=उत्तम भाषण करनेवाला)

१ सुवाक्, सुवाग्	सुवाचौ	सुवाचः
सं० ,, ,,	,,	,,
२ सुवाचम्	,,	,,
३ सुवाचा	सुवाग्भ्याम्	सुवाग्भिः
४ सुवाचे	,,	सुवाग्भ्यः
५ सुवाचः	,,	,,

६ सुवाचः	सुवाचोः	सुवाचाम्
७ सुवाचि	,,	सुवाक्षु

इस रीतिसे निम्नलिखित शब्दोंके रूप बनते हैं—

शब्द ।

पयोमुच्=जल देनेवाला मेघ.

पर्णमुच्=पत्ते गिरानेवाला

विवाच्=विविध भाषा बोलनेवाला.

कुवाच्=बुरे शब्द बोलनेवाला

दुर्वाच्= ,, ,, ,,

प्रवाच्=वक्ता, उत्तम भाषण करनेवाला

वाक्य ।

१ पयोमुचा जलं वर्षितं=मेघने जल की वृष्टि की ।

२ स दुर्वाचं पुरुषं निंदति=वह बुरे शब्द बोलनेवाले पुरुषकी निंदा करता है ।

३ सुवाचे मनुष्याय पारितोषिकं देहि=उत्तम शब्द बोलनेवाले मनुष्यको इनाम दो ।

जकारान्तः पुल्लिंगो राज् शब्दः ।

(राज्=राजा)

१	राट्, राड्,	राजौ	राजः
सं०	,,	,,	,,
२	राजं	,,	,,
३	राजा	राड्भ्यां	राड्भिः
४	राजे	,,	राड्भ्यः

५	राजः	राड्भ्यां	राड्भ्यः
६	,,	राजोः	राजाम्
७	राजि	,,	राट्सु

इस प्रकार निम्नलिखित शब्दोंके रूप होते हैं—

शब्द.

परेतराज्=यम
यमराज्= ,,
यक्षराज्=यक्षोंका राजा
परिव्राज्=संन्यासी
विराज्=उत्तम क्षत्रिय

सम्राज्=सार्वभौम राजा
विभ्राज्=तेजस्वी
विश्वसृज=विश्व उत्पन्न करनेवाला
जनराज्=लोगोंका राज
पक्षिराज्=गरुड, पक्षियोंका राजा

वाक्य ।

१ अस्य देशस्य सम्राजं नमस्कुरु=इस देशके सम्राट्को नमन कर ।

२ ज्योतिषा विभ्राजं सूर्यं पश्य=ज्योतिसे तेजस्वी सूर्यको देख ।

३ इदानीं जनराड् अत्र न आगमिष्यति=अब जनोंका राजा यहाँ नहीं आवेगा ।

४ यक्षराडभिः किं कृतम्=यक्षोंके राजोंने क्या किया ?

५ परिव्राजः कदा तत्र गमिष्यन्ति=संन्यासी लोग कब वहाँ जावेंगे ।

६ विश्वसृजं देवाधिदेवं ईश्वरं भज=विश्व उत्पन्न करनेवाले देवोंके अधिदेव ईश्वरका भजन कर ।

७ यथा पक्षिराड् आकाशे भ्रमति तथा न कः अपि अन्यः भ्रमितुं शक्नोति=जिस प्रकार पक्षियोंका राजा गरुड आकाशमें घूमता है उस प्रकार कोईभी दूसरा भ्रमण करनेको समर्थ नहीं है।

जकारांतः पुल्लिंगो हुतभुज् शब्दः।

१	हुतभुक्, हुतभुग्	हुतभुजौ	हुतभुजः
सं०	,, ,,	,,	,,
२	हुतभुजं	हुतभुजौ	,,
३	हुतभुजा	हुतभुग्भ्याम्	हुतभुग्भिः
४	हुतभुजे	,,	हुतभुग्भ्यः
५	हुतभुजः	,,	,,
६	,,	हुतभुजोः	हुतभुजाम्
७	हुतभुजि	,,	हुतभुक्षु

इस पद्धतिसे निम्नलिखित शब्दोंके रूप होते हैं---

शब्द।

फलभुज्=फल खानेवाला

महीभुज्=राजा

भूभुज्= ,,

हुतभुज्=अग्नि

ऋत्विज्=यज्ञ करनेवाला याजक

भिषज्=वैद्य

वणिज्=व्यापारी, बनिया

अन्नभुज्=अन्न खानेवाला

१ महीभुजा किं न कृतम् ?=राजाने क्या नहीं किया ?

२ ऋत्विग्भिः यज्ञः कृतः =ऋत्विजोंने यज्ञ किया।

३ यज्ञसमये हुतभुजे हव्यं देहि=यज्ञके समय अग्निके लिये हवनीय पदार्थ दो ।

४ वणिग्भिः अस्मिन् वर्षे बहु धनं संपादितं=बनियोंने इस वर्षमें बहुत धन प्राप्त किया ।

५ अन्नभुजः मनुष्याः विविधं अन्नं प्रातः सायं भक्षयन्ति ।=अन्नखानेवाले मनुष्य अनेक प्रकारका अन्न सवेरे और शामको भक्षण करते हैं ।

६ यत्र तौ वणिजौ संस्थितौ तत्रैव अहं हुतभुजं नयामि ।=जहां वे दो बनिये रहे हैं वहां ही मैं अग्नि ले जाता हूं ।

७ ऋत्विजां यागविषयकं ज्ञानं अतीव शोभनं अस्ति=ऋत्विजोंका यज्ञविषयक ज्ञान अत्यंत उत्तम है ।

पाठक इस रीतिसे इस प्रकारके शब्दोंके रूप बनाकर वाक्य करें और अपना अभ्यास बढावें ।

पाठ ३

१ विलपतीं जननीं कौसल्यां धर्मसहितं वचः धर्मात्मा रामः उवाच । नास्ति मे शक्तिः पितुः वाक्यं समातिक्रमितुम् । प्रसादये त्वां शिरसा ।=रोनेवाली माता कौसल्याको धर्मयुक्त भाषण धर्मात्मा रामने कहा । नहीं है मेरी शक्ति पिताके वाक्यका उल्लंघन करनेके लिये । प्रसन्न करता हूं तुझे सिरसे (अर्थात् सिर नम्र करके) ।

२ अस्माकं एव कुले पितुः सगरस्य आज्ञया भूमिं खनद्भिः सगरपुत्रैः सुमहान् वधः प्राप्तः। जामदग्न्येन रामेण स्वयं जननी अपि पितुर्वचनकारणात् कृत्ता।=हमारेही कुलमें पिता सगरकी आज्ञासे भूमिको खोदनेवाले सगरके पुत्रोंने बडा वध (अपनाही मृत्यु) प्राप्त किया। जमदग्निपुत्र परशुरामने स्वयं अपनी माताकोभी पिताके वचनके कारण काट डाला।

३ धर्मो हि लोके परमः। धर्मे सत्यं प्रतिष्ठितम्। सनातनः अयं धर्मः, पितुः नियोगे स्थातव्यं इति। तत् अनुमन्यस्व वनं गमिष्यन्तं माम्।=धर्म ही लोकमें श्रेष्ठ है। धर्ममें सत्य ठहरा है। सनातन यही धर्म है कि पिताकी आज्ञामें ठहरना। इसलिये अनुमति दो वनको जानेवाले मुझको।

४ पितुः निर्देशपालने एवं व्यवसितं तं रामं समीक्ष्य बाष्पसंरुद्धनयना कौसल्या अब्रवीत्। पुत्र ! गच्छ त्वं एकाग्रेण मनसा। भद्रं ते अस्तु। अभिरक्षतु त्वां स एव धर्मो यं त्वं पालयसि। सत्येन धर्मेण अभिरक्षितः चिरं जीव इति।=पिताकी आज्ञाका पालन करनेमें इस प्रकार तैयार उस रामको देखकर आंसुओंसे भरे हुए आंखवाली कौसल्या बोली। हे पुत्र ! जा तू एकाग्र मनसे। कल्याण तेरा हो। रक्षा करे तेरी वही धर्म जिसका तू पालन करता है। सत्य धर्म से रक्षित होता हुआ तू चिरकाल जीवित रह।

५ रामः पुनः मातुः चरणौ अभिवाद्य सीतानिलयं जगाम।=

राम फिर माताके चरणों का अभिवंदन कर सीताके निवासस्थान को गये।

६ तत् सर्व अजानती तपस्विनी वैदेही यौवराज्याभिषेचनं एव प्रतीक्षती तस्थौ। अवाङ्मुखे पत्यौ प्रविष्टे शोकसंतप्ते च वेपमाना उदपतत् सीता। दृष्ट्वा तां सीतां धर्मात्मा रामः मनोगतं शोकं सोढुं न शशाक ।=यह सब न जाननेवाली तपस्विनी सीता यौवराज्य के अभिषेककी ही प्रतीक्षा करती हुई ठहरी थी। नीचे मुख करते पति प्रविष्ट हुआ और शोकसे संतप्त (है यह देखकर) कांपती हुई सीता उठ खडी हुई। देख कर उस सीता को धर्मात्मा राम मनके शोक को सहन करनेको समर्थ नहीं हुआ।

७ विवृततां च गतः स शोकः। दृष्ट्वा च तत् सा अपि दुःखाभिसतप्ता अपृच्छत्। किमिदं प्रभो! केन असि दुर्मनाः? न विराजते छत्रं तव उपरि। नाऽपि व्यजने। अहो अपूर्वश्च मुखवर्णः !=व्यक्तताको प्राप्त हुआ वह शोक। देखकर वह भी दुःखसे संतप्त होकर पूछने लगी। क्या है यह प्रभो! किससे हो तुम दुखीमनवाला! नहीं शोभता है छत्र तेरे ऊपर। नहीं हैं पंखे। अजी कभी नहीं हुआ ऐसा मुखका वर्ण बना है!

८ इति विलपतीं तां सीतां प्रोवाच राघवः। प्रव्राजयति मां तत्रभवान् तातः। चतुर्दश हि वर्षाणि वस्तव्यं मया दण्डके। सोऽहं विजनं वनम् प्रस्थितो। त्वां द्रष्टुं इदानीं आगतोऽस्मि ।=

इस प्रकार विलाप करने वाली उस सीता से राम बोले। वनमें भेजता है मुझे पूज्य पिता। चौदह वर्ष रहना है मैंने दंडकारण्यमें। वह मैं निर्जन वनको चला हूं। तुझे देखने के लिये अब मैं आया हूं।

समास

१ **सगरपुत्रः=सगरस्य पुत्रः** (सगरका लडका)

२ **निर्देशपालनं=निर्देशस्य पालनं** (आज्ञाका पालन)

३ **बाष्पसंरुद्धनयना=बाष्पैः संरुद्धः बाष्पसंरुद्धः। बाष्पसंरुद्धे नयने यस्याः सा बाष्पसंरुद्धनयना।** (आंसुओंसे रुके नेत्रवाली)

४ **सीतानिलयं=सीतायाः निलयं** (सीताका घर)

५ **अजानती=न जानती** (न जाननेवाली)

६ **यौवराज्याभिषेचनं=यौवराज्यस्य अभिषेचनं** (यौवराज्यका अभिषेक)

७ **शोकसंतप्तः=शोकेन संतप्तः** (शोकसे संतप्त)

८ **दुःखाभिसंतप्ता=दुःखेन अभिसंतप्ता** (दुःखसे संतप्त)

९ **मुखवर्णः=मुखस्य वर्णः** (मुखका रंग)

१० **विजनं=विगताः जनाः यस्मात्** (जिससे जन बाहर हैं, जनोंसे विहीन)

पाठ ४

इस पाठमें तकारान्त शब्दोंके रूप बताते हैं–

तकारान्तः पुल्लिंगो भूभृत् शब्दः ।

(भूभृत्=राजा)

१ भूभृत्	भूभृतौ	भूभृतः
सं० ,,	,,	,,
२ भूभृतं	,,	,,
३ भूभृता	भूभृद्भ्यां	भूभृद्भिः
४ भूभृते	,,	भूभृभ्द्यः
५ भूभृतः	,,	,,
६ ,,	भूभृतोः	भूभृताम्
७ भूभृति	,,	भूभृत्सु

इस रीतिसे निम्नलिखित शब्दोंके रूप बनते हैं–

शब्द ।

मरुत्–मरुत् देवता, वायु

विपश्चित्=ज्ञानी, विद्वान्

अग्निचित्=अग्निको प्रज्वलित करनेवाला

महीक्षित्=राजा

कपालभृत्=कटोरी धारण करनेवाला

क्ष्माभृत्=राजा

१ हे अग्ने ! त्वं मरुद्भिः सह आगच्छ=हे अग्ने ! तू मरुतों के साथ आ !

२ भूभृतां संगमेन किं फलं भवति ? =राजाओंकी संगतिसे क्या फल होता है ?

३ यत्र सर्वे विपश्चितः भवन्ति तत्र धर्मस्य निर्णयः भवति= जहां सब ज्ञानी होते हैं वहां धर्मका निर्णय होता है।

४ मरुद्भ्यः हव्यं देहि=मरुतोंके लिये हव्य पदार्थ दो।

५ क्ष्माभृतौ यत्र गच्छतः तत्र विपश्चितौ न भवतः। =दो राजे जहां जाते हैं वहां दो ज्ञानी नहीं होते।

६ एतत् भवनं पूर्वेण महीक्षिता निर्मितं आस्ति=यह गृह पहिले राजाने बनाया है।

७ विपश्चिद्भूभृतोः कः श्रेष्ठतरः ? =ज्ञानी और राजा इनमें श्रेष्ठ कौन है ?

८ स्वदेशे राजा पूज्यते, परंतु विपश्चित् सर्वत्र पूज्यते। = अपने देशमें राजाका सत्कार होता है परंतु ज्ञानीका सत्कार सर्वत्र होता है।

तान्तः पुल्लिंगो महत् शब्दः।

(महत्=बडा)

१	महान्	महान्तौ	महान्तः
सं०	हे महन्	,,	,,
२	महान्तं	,,	महतः
३	महता	महद्भ्यां	महद्भिः
४	महते	,,	महद्भ्यः

५	महतः	महद्भ्यां	महद्भ्यः
६	,,	महतोः	महताम्
७	महति	,,	महत्सु

महत् शब्द वास्तविक विशेषण है और इस कारण इसका कोई लिंग नहीं है तथापि जिस समय यह किसी पुल्लिंगा विशेष्यका गुण बतानेके लिये उसके विशेषण के स्थानमें आता है तो उस समय इसके रूप पुल्लिंगके समान होते हैं। इस लिये ये रूप यहां दिये हैं।

वाक्य।

१ महद्भ्यः रुद्रेभ्यः नमो नमः=बडे रुद्रोंके लिये नमस्कार है।

२ यथा पशुषु सिंहः महान्तं शब्दं करोति न तथा अन्यः कः अपि पशुः महान्तं शब्दं कर्तुं शक्तः=जैसा पशुओंमें सिंह बड़ा शब्द करता है वैसा कोई भी अन्य पशु शब्द करनेमें समर्थ नहीं है।

तकारान्तः पुल्लिंगो भगवत् शब्दः

(भगवत्=भगवान्)

१	भगवान्	भगवन्तौ	भगवन्तः
सं०	हे भगवन्	,,	,,
२	भगवन्तं	,,	भगवतः
३	भगवता	भगवद्भ्यां	भगवद्भिः
४	भगवते	,,	भगवद्भ्यः
५	भगवतः	,,	,,

६	भगवतः	भगवतोः	भगवताम्
७	भगवति	,,	भगवत्सु

इस रीतिसे निम्नलिखित शब्दोंके रूप होते हैं–

शब्द ।

नभस्वत्=वायु	**राजन्वत्**=उत्तमराजासे चलाया हुआ राज्य
धीमत्=बुद्धिमान्	**बुद्धिमत्**=बुद्धिवाला
ज्ञानवत्=ज्ञानी	**उदन्वत्**=समुद्र
क्रियावत्=पुरुषार्थी	**आत्मवत्**=आत्मिक बलसे युक्त, ज्ञानी
विवस्वत्=सूर्य	**गरुत्मत्**=गरुड

१ **भगवान् अत्र आगच्छतु**=भगवान् यहां आवे।

२ **धीमता पुरुषेण एव ग्रंथस्य रचना कर्तुं योग्या।**=बुद्धिमान मनुष्यने ही ग्रंथकी रचना करना योग्य है।

३ **क्रियावतां मनुष्याणां मध्ये आत्मवान् एव श्रेष्ठतरः**= पुरुषार्थी मनुष्योंके मध्यमें आत्मिक बलवाला पुरुष श्रेष्ठ है।

४ **विवस्वान आकाशे तपति**=सूर्य आकाशमें तपता है।

५ **बुद्धिमता वीरेण एव स्वदेशस्य हिताय युद्धं कर्तव्यम्**= बुद्धियुक्त शूरपुरुषनेही अपने देशके हित के लिये युद्ध करना चाहिये।

६ **गरुत्मतः अन्यत् नाम गरुडः इति अस्ति**=गरुत्मत् का दूसरा नाम गरुड ऐसा है।

पाठक इस रीतिसे अन्यान्य तकारान्त शब्दोंके रूप बनाकर उनका उपयोग विविध वाक्यों में करें। और हरएक रूपका उपयोग करके वाक्य अवश्य बनावें। इसीसे उनका अभ्यास अच्छी प्रकार बढ सकता है।

पाठ ५

१ **एवं उक्ता तु वैदेही प्रणयात् एव संक्रुद्धा भर्तारं इदं अब्रवीत्। शस्त्रास्त्रविदुषां वीराणां राजपुत्राणां अनर्हं त्वया उदितं। न श्रोतव्यं तत्।**=इस प्रकार कही गई सीता प्रीतिसेही क्रोधित होकर पतिसे यह बोली। शस्त्र और अस्त्र जाननेवाले वीर राजपुत्रोंके अयोग्य तूने कहा। नहीं सुनने योग्य है वह।

२ **आर्यपुत्र ! पिता माता तथा च पुत्रः पुण्यानि भुञ्जानाः स्वं स्वं भाग्यं उपासते। नारी तु एका भर्तुः भाग्यं प्राप्नोति। ततः अहं अपि आदिष्टा एव अस्मि वने वस्तव्यं इति। इह प्रेत्य च नारीणां सदा एकः पतिः एव गतिः। हे राघव ! यदि त्वं दुर्गमं वनं प्रस्थितः तर्हि अहमपि कुशकंटकान् मृद्नन्ती ते अग्रतः गमिष्यामि।**=हे आर्यपुत्र ! पिता माता तथा पुत्र अपने पुण्योंका भोग करते हुए अपने अपने भाग्यकोही प्राप्त करते हैं। पत्नी ही केवल अकेली पतिके भाग्यको प्राप्त करती है। इसलिये मुझेभी आज्ञा हुईही है वनमें वसनेके लिये। यहां तथा परलोकमें पत्नियों के लिये पति ही गति है। हे राम ! यदि तू दुर्गम वन को जाता है; तो मैं भी दर्भ और कांटोंको हटाती हुई तेरे आगे चलूँगी।

३ भुक्तवति त्वयि अहं भोक्ष्ये । वनेऽपि त्वं मम परिपालनं कर्तुं शक्तः । त्वया वियुक्ता अहं मरणे निश्चिता अस्मि ।=तेरे भोजन करनेपर मैं भोजन करूंगी । वनमें भी तू मेरा पालन करनेको समर्थ है । तेरेसे वियुक्त हुई मैं मरनेमें निश्चित हूं ।

४ सान्त्वयित्वा तु तां सीतां धर्मात्मा रामः उवाच । सीते ! त्वं कुलीना धर्मनिरता च सदा असि । अतः त्वं इहैव स्वधर्म समाचर । येन मम मनसः सुखं भवेत् ।=शांत करके उस सीताको धर्मात्मा राम बोले । हे सीते ! तू कुलीन और धर्ममें रत सदासे हो । इस लिये तू यहां ही स्वधर्मका आचरण कर जिससे मेरे मनको सुख होगा ।

५ बहुदोषं हि वनं । तत्र सिंहानां व्याघ्राणां च दुःखदाः निनादाः, सरितः सग्राहाः, मत्ताः गजाः, कण्टकिताः लताश्च । मार्गा अपि निरपाः सुदुःखाश्च । अतः सीते दुःखं वनम् । तत्र च अतीव तिमिरं, महान् वातः, नित्या बुभुक्षा, महान्ति च भयानि सन्ति ।=बहुत दोष हैं बनमें । वहां सिंह और वाघोंके दुःखदायी शब्द, नदियां मगरमच्छों से युक्त, मतवाले हाथी, कांटोंसे युक्त लतायें होती हैं । मार्ग भी (निःअपाः) जलरहित और बडे दुःखदायी हैं । इस लिये हे सीते ! दुःखदायी बन है । वहां बडा अंधेरा, बडा वायु, हमेशा भूख, और बडे भय हैं ।

६ एतत् श्रुत्वा दुःखिता सीता रामं उवाच । ये त्वया वने वस्तव्यतां प्रति दोषत्वेन परिकीर्तिताः तान् तव स्नेहेन पुर-

स्कृतान् गुणान् एव विद्धि । अदृष्टपूर्वं तव रूपं दृष्ट्वा सर्वे वन-चारिणः दूरं अपसर्पेयुः । गुरुजनाज्ञया मया त्वया सह वनं अवश्यं गन्तव्यं एव । हे राम ! त्वद्वियोगेन तु मया जीवितमेव त्यक्तव्यम्=यह सुनकर दुःखी सीता रामसे बोली । जो तूने वनके निवास के प्रति दोष करके कहे, वे तेरे स्नेहसे युक्त होकर गुण ही हैं ऐसा समझ । पहिले न देखा हुआ तेरा रूप देख कर सब वनचारी दूर भोगेंगे । गुरुजनों की आज्ञा लेकर तेरे साथ मैंनेंभी अवश्य वनमें जाना ही है । हे राम ! तेरे वियोगसे तो मैंने जीवन भी छोडना है ।

समास ।

१ शस्त्रास्त्रविद्वान्=शस्त्राणि च अस्त्राणि च शस्त्रास्त्राणि । शस्त्रास्त्राणि वेत्तीति शस्त्रास्त्रविद्वान् । (शस्त्रास्त्र जाननेवाला)

२ राजपुत्रः=राज्ञः पुत्रः (राजाका बेटा)

३ अनर्ह=न अर्ह (योग्य नहीं)

४ कुशकंटकाः=कुशाः च कंटकाः च (दर्भ और कांटे)

५ धर्मनिरतः=धर्मे निरतः (धर्ममें रत)

६ स्वधर्मः=स्वस्य धर्मः (अपना धर्म)

७ बहुदोषं=बहवः दोषाः यस्मिन् तत् (बहुत हैं दोष जिसमें वह)

८ दुःखदः=दुःखं ददाति इति (दुःख देता है जो)

९ सग्राहा=ग्राहैः सहिता (मगरोंसे युक्त)

१० निरपाः=अद्भिः रहिताः (जलसे रहित)

११ दोषत्वं=दोषस्य भावः (दोषका भाव)
१२ वनचारिन्=वने चरतीति वनचारी (वनमें संचार करनेवाला)

पाठ ६

अब यहां दकारान्त शब्दोंके रूप बताते हैं—

दकारान्तः पुल्लिंगः क्रव्याद् शब्दः।

(क्रव्याद्= मांस खानेवाला)

१ क्रव्यात्, क्रव्याद्	क्रव्यादौ	क्रव्यादः
सं. ,, ,,	,,	,,
२ क्रव्यादम्	,,	,,
३ क्रव्यादा	क्रव्याद्भ्यां	क्रव्याद्भिः
४ क्रव्यादे	,,	क्रव्याद्भ्यः
५ क्रव्यादः	,,	,,
६ ,,	क्रव्यादोः	क्रव्यादाम्
७ क्रव्यादि	,,	क्रव्यात्सु

इस रीतिसे निम्नलिखित शब्दोंके रूप बनते हैं—

शब्द।

सुहृद्=मित्र, उत्तम दिलवाला	तमोनुद्=अंधकारका नाश करनेवाला
दुर्हृद्=शत्रु, दुष्ट दिलवाला	अन्नाद्=अन्न खानेवाला

वाक्य।

१ प्राज्ञेन सुहृदा एव मित्रता कर्तव्या ।=ज्ञानी उत्तमदिलवाले मनुष्यसेही मित्रता करनी योग्य है।

२ दुर्हृदां शत्रूणां सर्वैः अवश्यं निवारणं कर्तव्यं=दुष्ट हृदयवाले शत्रुओंका सबने अवश्य निवारण करना योग्य है।

दकारान्तः पुल्लिंगः सुपाद् शब्दः ।

१ सुपात्, सुपाद्	सुपादौ	सुपादः
सं० ,, ,,	,,	,,
२ सुपादं	,,	सुपदः
३ सुपदा	सुपद्भ्यां	सुपद्भिः
४ सुपदे	,,	सुपद्भ्यः
५ सुपदः	,,	,,
६ ,,	सुपदोः	सुपदाम्
७ सुपदि	,,	सुपात्सु

मूल " पाद् " शब्द होते हुए भी द्वितीया विभक्तिके बहुवचनके पश्चात् के रूपोंमें " पाद " के स्थानपर " पद् " हुआ है। यह पाठक यहां देखें। केवल सप्तमीके बहुवचनमें ही " सुपात्सु " रहा है। शेष रूपोंमें " पद् " ही है। यह विशेषता पाठक देखें।

(सुपाद्=उत्तम पांववाला)

१ सुपात् पुरुषः महता वेगेन चलति=उत्तम पांववाला मनुष्य बडे वेगके साथ चलता है।

२ सुपदां मानवानां यथा गतिः अस्ति तथा तव गमनं भवतु=उत्तम पांववाले मनुष्योंकी जैसी गति है वैसा तेरा गमन होवे।

धकारान्तः पुल्लिंगो बुध् शब्दः ।

१	भुत्, भुद्	बुधौ	बुधः
सं०	” ”	”	”
२	बुधं	”	”
३	बुधा	भुद्भ्यां	भुद्भिः
४	बुधे	भुद्भ्यां	भुद्भ्यः
५	बुधः	”	”
६	”	बुधोः	बुधाम्
७	बुधि	”	भुत्सु

एक अकारान्त पुल्लिंग '**बुधः**' शब्द है वह और है उसके रूप "देव" शब्द के समान होते हैं। उस शब्द के साथ पाठकोंका परिचय है ही। इस स्थानपर (अंतमें अकार रहित) धकारान्त "बुध्" शब्द के रूप बताये हैं। इन रूपोंमें "**बु**" के स्थान पर कई रूपोंमें "**भु**" हुआ है यही विशेषता इसमें है।

वाक्य ।

१ **बुधा तुभ्यं किं पाठितम्**=ज्ञानी मनुष्यने तुझे क्या पढाया?

२ **बुधे एव दक्षिणां देहि**=ज्ञानीको ही दक्षिणा दो।

३ **भुत्सु विशेषं ज्ञानं भवति**=ज्ञानियोंमें विशेष ज्ञान होता है।

४ बुधां समूहे एव सर्वं धर्मतत्वं निश्चितं भवति=ज्ञानियोंके समाज में ही सब धर्म का तत्त्व निश्चित होता है।

नकारान्तः पुल्लिंगः राजन् शब्दः ।

१	राजा	राजानौ	राजानः
सं०	हे राजन्	”	”
२	राजानं	”	राज्ञः
३	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
४	राज्ञे	”	राजभ्यः
५	राज्ञः	”	”
६	”	राज्ञोः	राज्ञाम्
७	राज्ञि, राजनि	”	राजसु

शब्द ।

मूर्धन्=सिर
ग्रावन्=पत्थर
तक्षन्=तर्खाण
पूषन्=पूषा देव
उक्षन्=बैल

प्लीहन्=प्लीहा, पानथरी
मज्जन्=मज्जा
अर्यमन्=अर्यमा
परिज्मन्=चंद्र, अग्नि
सुत्रामन्=रक्षक, इन्द्र

वाक्य ।

१ अराजकः राजानं न नमति= अराजक राजाको नमस्कार नहीं करता।

२ मार्गे ग्रावाणः पथिकस्य जनस्य दुःखाय एव भवन्ति= मार्गमें पत्थर पथिक मनुष्यके दुःखके लिये ही होते हैं।

३ उक्षाणः कृषिं कुर्वन्ति अन्नं च उत्पादयन्ति= बैल खेती करते और अन्न उत्पन्न करते हैं।

४ तक्षा काष्ठस्य गृहं निर्माति= तर्खाण लकडीका घर निर्माण करता है।

५ अस्माकं गृहं तक्षाभिः निर्मितं= हमारा घर तर्खाणोंने निर्माण किया।

६ राज्ञः पदं सर्वेषां मूर्ध्नि भवति किम् ?= राजाका पांव सबके सिरपर होता है क्या ?

७ राज्ञां अपि राजा ईश्वरः= राजाओंका राजा ईश्वर है।

८ राज्ञां पूजा राष्ट्रे भवति= राजोंकी पूजा राष्ट्र में होती है।

९ सुत्रामा इन्द्रः सर्वस्य रक्षकः= रक्षक इन्द्र सबका पालक है।

पाठ ७

अब इस पाठमें पूर्व पाठोंमें आये हुएही वाक्योंका संधियुक्त संस्कृत देते हैं—

(१)

यत्किंचित्तेऽभिलषितं तत्सर्वं त्वमवाप्स्यसि। सप्त पंच च समा अहं तेऽन्नं प्रदास्यामि। हे नराधिप! मया दत्तं ताम्रं पिठरं गृह्णीष्व। हे सुव्रत! अनेन पात्रेण यावत्पांचाली

वत्स्यति तावद्यन्महानसे संस्कृतं फलमूलामिषं शाकं चतर्विधं तत्तेऽन्नाद्यमक्षय्यं भविष्यति। धर्मवित् कौन्तेयस्तु वरं लब्ध्वा जलादुत्तीर्य धौम्यस्य पादौ जग्राह। भ्रातॄंश्च परिषस्वजे। द्रौपद्या सह संगम्य तया वंद्यमानः प्रभुः पांडवस्तदानीं महानसे साधयामास।

इसमें कुछ कठिनता समझनेमें हुई तो इसी पुस्तकका प्रथम पाठ देखें वहां येही वाक्य अर्थके साथ दिये हैं। अब कुछ रामायणकी कथा दी जाती है—

(२)

विलपंतीं जननीं कौसल्यां धर्मसहितं वचो धर्मात्मा राम उवाच। नास्ति मे शक्तिः पितुर्वाक्यं समतिक्रमितुम्। प्रसादये त्वां शिरसा। अस्माकमेव कुले पितुः सगरस्याज्ञया भूमिं खनद्भिः सगरपुत्रैः सुमहान्वधः प्राप्तः। जामदग्न्येन रामेण स्वयं जनन्यापि पितुर्वचनकारणात्कृत्ता। धर्मो हि लोके परमः। धर्मे सत्यं प्रतिष्ठितम्। सनातनोऽयं धर्मः पितुर्नियोगे स्थातव्यमिति। तदनुमन्यस्व वनं गमिष्यन्तं माम्।

पितुर्निर्देशपालने एवं व्यवसितं तं राम समीक्ष्य बाष्पसंरुद्धनयना कौसल्याऽब्रवीत्। पुत्र गच्छ त्वमेकाग्रेण मनसा। भद्रं तेऽस्तु। अभिरक्षतु त्वां स एव धर्मो यं त्वं पालयसि। सत्येन धर्मेणाभिरक्षिताश्चिरं जीवेति।

रामः पुनर्मातुश्चरणावभिवाद्य सीतानिलयं जगाम। तत्स-र्वमजानती तपस्विनी वैदेही यौवराज्याभिषेचनमेव प्रतीक्षती तस्थौ। अवाङ्मुखे पत्यौ प्रविष्टे शोकसंतप्ते च वेपमानोदपतत्सीता। दृष्ट्वा तां सीतां धर्मात्मा रामो मनोगतं सोढुं न शशाक। विवृततां च गतः स शोकः। दृष्ट्वा च तत्साऽपि दुःखाभिसन्तप्ताऽपृच्छत्। किमिदं प्रभो! केनाऽसि दुर्मनाः? न विराजते छत्रं तवोपरि। नाऽपि व्यजने। अहो अपूर्वश्च मुखवर्णः।

इति विलपतीं तां सीतां प्रोवाच राघवः। प्रव्राजयति मां तत्रभवान्तातः। चतुर्दश हि वर्षाणि वस्तव्यं मया दण्डके। सोऽहं विजनं वनं प्रास्थितः। त्वां द्रष्टुमिदानीमागतोऽस्मि।

इसके समझने में कुछ कठिनता हुई तो पाठक पाठ ३ में देखें वहां येही वाक्य पदच्छेदपूर्वक अर्थ के साथ दिये हैं। अब इसीका उत्तरार्ध देखिये—

(३)

एवमुक्ता तु वैदेही प्रणयादेव संक्रुद्धा भर्तारमिदमब्रवीत्। शस्त्रास्त्रविदुषां वीराणामनर्हं त्वयोदितम्। न श्रोतव्यं तत्। आर्यपुत्र! पिता माता तथा च पुत्रः पुण्यानि भुंजानाः स्वं स्वं भागमुपासते। नारी त्वैका भर्तुर्भाग्यं प्राप्नोति। ततोऽहमप्यादि-ष्टैवास्मि वने वस्तव्यमिति। इह प्रेत्य च नारीणां सदैकः पतिरेव गतिः। हे राघव! यदि त्वं दुर्गमं वनं प्रस्थितस्तर्ह्य-हमपि कुशकंटकान्मृद्नन्ती तेऽग्रतो गमिष्यामि। भुक्तवति

त्वय्यहं भोक्ष्ये । वनेऽपि त्वं मम परिपालनं कर्तुं शक्तः । त्वया वियुक्ताऽहं मरणे निश्चिताऽस्मि ।

सान्त्वयित्वा तु तां सीतां धर्मात्मा राम उवाच । सीते ! त्वं कुलीना धर्मनिरता च सदाऽसि । अतस्त्वमिहैव स्वधर्मं समाचर । येन मम मनसः सुखं भवेत् । बहुदोषं हि वनं । तत्र सिंहानां व्याघ्राणां च दुःखदा निनादाः, सरितः सग्राहाः, मत्ता गजाः, कण्टकिता लताः, मार्गा अपि निरपाः सुदुःखाश्च । अतः सीते दुःखं वनम् । तत्र चातीव तिमिरं, महान्वातः, नित्या बुभुक्षा, महान्ति च भयानि सन्ति ।

एतच्छ्रुत्वा दुःखिता सीता राममुवाच । ये त्वया वने वस्तव्यतां प्रति दोषत्वेन परिकीर्तितास्तांस्तव स्नेहेन पुरस्कृतान् गुणानेव विद्धि । अदृष्टपूर्वं तव रूपं दृष्ट्वा सर्वे वनचारिणो दूरमपसर्पेयुः । गुरुजनाज्ञया मया त्वयासह वनमवश्यं गंतव्यमेव । हे राम ! त्वद्वियोगेन तु मया जीवितमेव त्यक्तव्यम् ।

इसके समझने में कुछ कठिनता हुई तो पाठ पांच में देखिये । वहां येही वाक्य अर्थके साथ दिये हैं ।

पाठ ८

अब इस पाठमें और नकारान्त शब्दों के रूप देखिये—

नकारान्तः पुल्लिंगो ब्रह्मन् शब्दः

१ ब्रह्मा	ब्रह्माणौ	ब्रह्माणः

सं० ब्रह्मन्	ब्रह्माणौ	ब्रह्माणः
२ ब्रह्माणं	,,	ब्रह्मणः
३ ब्रह्मणा	ब्रह्मभ्याम्	ब्रह्मभिः
४ ब्रह्मणे	,,	ब्रह्मभ्यः
५ ब्रह्मणः	,,	,,
६ ,,	ब्रह्मणोः	ब्रह्मणाम्
७ ब्रह्मणि	,,	ब्रह्मसु

इस शब्दके रूपोंके समान निम्नलिखित शब्दोंके रूप होते हैं—

शब्द ।

आत्मन्=आत्मा	सुपर्वन्=देव
अध्वन्=मार्ग	अग्रजन्मन्=ब्राह्मण, बडाभाई
अश्मन्=पत्थर	पाप्मन्=पापी, पाप
मातरिश्वन्=वायु	जित्वन्=विजयी
यज्वन्=याजक	सुत्वन्=सोमयाग करनेवाला, रस निकालने वाला.
अर्वन्=घोडा	धन्वन्=रेतीला प्रदेश

१ **यज्ञे ब्रह्मा सर्वेषु ऋत्विक्षु मुख्यः अथर्ववेदं पठति**= यज्ञमें सब ऋत्विजों में मुख्य ब्रह्मा अथर्ववेद पढता है ।

२ **एते सर्वे अपि अध्वानः एकं एव स्थानं प्रति गच्छन्ति**= ये सब ही मार्ग एकही स्थानके प्रति जाते हैं ।

३ **आकाशे मातरिश्वा सर्वत्र संचरति**= आकाशमें वायु सर्वत्र संचार करता है ।

४ अर्वा अर्वदेशात् अस्मिन् देशे आनीयते= घोडा अरबदेशसे इस देशमें लाया जाता है।

५ यज्वभिः यज्ञे यजनं क्रियते= याजकोंके द्वारा यज्ञमें यजन किया जाता है।

६ धन्वनि वृक्षाः न भवन्ति= रेतीले मरुदेशमें वृक्ष नहीं होते हैं।

७ अध्वनि शीतस्य निवारणार्थं वस्त्रं गृहाण= मार्गमें शीत निवारणके लिये वस्त्र लो।

८ सैनिकाः युद्धे श्रान्ताः अध्वनि एव निद्रिताः= सैनिक सिपाही युद्धमें थके हुए मार्गमें ही सोये हैं।

नकारान्तः पुल्लिंगो वृत्रहन् शब्दः।

१ वृत्रहा	वृत्रहणौ	वृत्रहणः
सं० हे वृत्रहन्	,,	,,
२ वृत्रहणं	,,	वृत्रघ्नः
३ वृत्रघ्ना	वृत्रहभ्याम्	वृत्रहभिः
४ वृत्रघ्ने	वृत्रहभ्याम	वृत्रहभ्यः
५ वृत्रघ्नः	,,	,,
६ ,,	वत्रघ्नोः	वृत्रघ्नाम्
७ वृत्रघ्नि, वृत्रहणि	,,	वृत्रहसु

इस प्रकार निम्न लिखित शब्दोंके रूप बनते हैं--

शब्द।

मातृहन्= माताका वध करनेवाला। **गुरुहन्**=गुरुका वध करनेवाला

पितृहन्= पिताका वध करनेवाला। **ब्रह्महन्**= ब्राह्मणका वध करनेवाला

वाक्य ।

१ **पितृहभिः अस्मिन् यज्ञे न आगन्तव्यम्**=पिताका वध करने वालों ने इस यज्ञमें नहीं आना चाहिये ।

२ **गुरुघ्ने उचितं दण्डं देहि**=गुरुका वध करने वाले को योग्य दंड दे ।

नकारान्तः पुल्लिंगः श्वन् शब्दः ।

१	श्वा	श्वानौ	श्वानः
सं.	हे श्वन्	,,	,,
२	श्वानं	,,	शुनः
३	शुना	श्वभ्याम्	श्वभिः
४	शुने	,,	श्वभ्यः
५	शुनः	,,	,,
६	,,	शुनोः	शुनाम्
७	शुनि	,,	श्वसु

" श्वन् " शब्दके " श्व " के स्थानपर कई रूपोंमें " शु " होता है और कईयोंमें " श्व " ही रहता है। पाठक इस विशेषताको स्मरण रखें—

वाक्य ।

१ **त्वया स्वकीयः श्वा कुत्र स्थापितः**=तूने अपना कुत्ता कहां रखा ?

२ अहं मदीय श्वानं पुनः अत्र न आनेष्यामि= मैं अपने कुत्तेको फिर यहां नहीं लाऊंगा।

३ श्वभिः एव एष कोलाहलः कृतः= कुत्तोंने ही यह कोलाहल मचाया है।

४ श्वभ्यः पक्षिभ्यः च अन्नं देहि= कुत्तों और पक्षियोंके लिये अन्न दो।

नकारान्तः पुल्लिंगो युवन् शब्दः।

१ युवा	युवानौ	युवानः
सं० हे युवन्	"	"
२ युवानं	"	यूनः
३ यूना	युवभ्यां	युवाभिः
४ यूने	"	युवभ्यः
५ यूनः	"	"
६ "	युनोः	यूनाम्
७ यूनि	"	युवसु

यहां भी कई रूपोंमें "युव" रहा है और कई रूपोंमें "युव" के स्थानपर "यू" हो गया है। यह विशेष स्मरण रखिये—

१ युवा पुरुषः ब्रह्मचारी भवितुं अर्हति=तरुण पुरुष ब्रह्मचारी होने योग्य है।

२ युवभिः मनुष्यैः एव स्वदेशार्थं युद्धं कर्तव्यम्=तरुण मनुष्योंनेही अपने देशके लिये युद्ध करना चाहिये।

३ युवसु अविचारः मदः च भवति= तरुणोंमें अविचार और घमंड होती है।

४ युवभ्यः नरेभ्यः वसु देहि=तरुण मनुष्यों के लिये धन दे।

पाठ ९

इस पाठमें निम्नलिखित श्लोकोंका अध्ययन कीजिये—

न श्रेयः सततं तेजो न नित्यं श्रेयसी क्षमा
इति तात विजानीहि द्वयमेतदसंशयम् ॥ ५ ॥

म. भारत. वन अ. २८

अन्वयः=तेजः सततं श्रेयः न, नित्यं क्षमा श्रेयसी न। हे तात! इति एतत् द्वयं असंशयं विजानीहि।

संस्कृतटीका=तेजः तेजस्विता सततं नित्यं सदा श्रेयः न कल्याणकारिणी न भवति। तथा च नित्यं सततं क्षमा अपि श्रेयसी श्रेयस्करी न भवति। हे तात! हे प्रिय! इति एवं प्रकारेण एतत् द्वयं असंशयं संशयरहितं विजानीहि जानीहि।

अर्थ—स्वभाव की तेजी भी सदा कल्याणकारक नहीं होती और स्वभावकी शांति भी हमेशा लाभ दायक नहीं होती। हे प्रिय! यह दोनों बातें तू संशय छोडकर जान लो।

यो नित्यं क्षमते तात बहून्दोषान्स विंदति।
भृत्याः परिभवन्त्येनमुदासीनास्तथाऽरयः ॥ ६ ॥

म. भारत. वन अ. २८

अन्वयः—हे तात! यः नित्यं क्षमते सः बहून् दोषान विंदति। एनं भृत्याः परिभवन्ति तथा अरयः उदासीनाः।

संस्कृत टीका—हे तात ! हे प्रिय ! यः पुरुषः नित्यं सदा एव क्षमते क्षमां करोति सः पुरुषः बहून् अनेकान् दोषान् अगुणान् विंदति प्राप्नोति। के ते दोषाः ? एनं क्षमावन्तं पुरुषं तस्य एव भृत्याः दासाः परिचारकाः परिभवन्ति अपमानयन्ति। तथा च तस्य अरयः शत्रवः उदासीनाः भवन्ति। शत्रवः अपि तं न गणयन्ति इत्यर्थः।

अर्थः—हे प्रिय ! जो नित्य क्षमा करता है उसको बहुत दोष प्राप्त होते हैं। नौकर भी उसका अपमान करते हैं और उसके शत्रु भी उदासीन हो जाते हैं। अर्थात् उसका कोई संमान नहीं करता।

सर्वभूतानि चाप्यस्य न नमन्ते कदाचन।
तस्मान्नित्यं क्षमा तात पंडितैरपवादिता ॥ ८ ॥

अन्वयः—च अपि अस्य सर्वभूतानि कदाचन न नमन्ते। तस्मात् हे तात ! नित्यं क्षमा पंडितैः अपवादिता।

संस्कृतटीका—च अपि अस्य क्षमायुक्तस्य पुरुषस्य सर्वभूतानि सर्वाणि प्राणिजातानि, सर्वे मनुष्याः कदाचन कदापि न नमन्ते न नम्रीभवन्ति। हे तात ! हे प्रिय ! तस्मात् कारणात् नित्यं क्षमा पंडितैः विबुधैः जनैः अपवादिता अपवादेन दोषेण युक्ता अस्ति इति ज्ञाता।

अर्थ—और इसके सामने सब लोग कदापि नम्र नहीं होते। इसलिये हे प्रिय ! नित्य क्षमा करना दोषयुक्त है ऐसा पंडितोंका मत है।

अवज्ञाय हि तं भृत्याः भजन्ते बहुदोषताम् ।
आदातु चास्य वित्तानि प्रार्थयन्तेऽल्पचेतसः ॥ ९ ॥

म. भारत. वन. अ. २८

अन्वय—हि तं भृत्याः अवज्ञाय बहुदोषतां भजन्ते । च अस्य वित्तानि आदातुं अल्पचेतसः प्रार्थयन्ते ।

संस्कृतटीका—हि तं क्षमाशीलं पुरुषं भृत्याः तस्य एव परिचारकाः अवज्ञाय तस्य अपमानं कृत्वा बहुदोषतां बहून् दोषान् भजन्ते सेवन्ते । च अस्य क्षमाशीलस्य पुरुषस्य वित्तानि धनानि आदातुं स्वीकर्तुं अल्पचेतसः अल्पमतयः जनाः प्रार्थयन्ते इच्छन्ति ।

अर्थ—क्यों कि नौकर उसका अपमान करके बहुत दोषोंसे युक्त होते हैं । और इसके धन को मंद बुद्धि लोग छीनना चाहते हैं ।

यानं वस्त्राण्यलंकाराञ्छयनान्यासनानि च ।
भोजनान्यथ पानानि सर्वोपकरणानि च ॥ १० ॥
आददीरन्नधिकृता यथाकाममचेतसः ।
प्रदिष्टानि च देयानि न दद्युर्भर्तृशासनात् ॥ ११ ॥

अन्वयः—यानं, वस्त्राणि, अलंकारान्, शयनानि, आसनानि च भोजनानि अथ पानानि सर्वोपकरणानि च अचेतसः अधिकृताः यथाकामं आददीरन् । भर्तृशासनात् प्रदिष्टानि देयानि च न दद्युः ॥

अर्थ—गाडी, वस्त्र, अलंकार, बिछोने, आसन, भोजन और पीनेके रस तथा सब साधन अल्पबुद्धिवाले अधिकारी अपनी इच्छाके अनु-

सार ले लेते हैं। स्वामीकी आज्ञासे जिसकी आज्ञा हुई है वह देने योग्य पदार्थ भी नहीं देंगे। (अर्थात् सदा क्षमा करनेवाले के इंतजाम में ऐसी दुर्दशा होती है।)

पाठक इस पाठको अच्छी प्रकार तैयार करें और संभव हुआ तो इन श्लोकोंको कंठस्थ करें तथा स्वयं संस्कृत अर्थ लिखनेका यत्न करें।

पाठ १०

अब नकारान्त शब्दोंके रूप देखिये—

नकारान्तः पुल्लिंगो ज्ञानिन् शब्दः।

१ ज्ञानी	ज्ञानिनौ	ज्ञानिनः
सं० हे ज्ञानिन्	”	”
२ ज्ञानिनं	”	”
३ ज्ञानिना	ज्ञानिभ्यां	ज्ञानिभिः
४ ज्ञानिने	”	ज्ञानिभ्यः
५ ज्ञानिनः	”	”
६ ”	ज्ञानिनोः	ज्ञानिनाम्
७ ज्ञानिनि	”	ज्ञानिषु

इसी रीतिसे निम्नलिखित शब्दोंके रूप बनते हैं—

शब्द।

ब्रह्मचारिन्=ब्रह्मचारी	**वाग्मिन**=वक्ता
दन्तिन्=हाथी	**अतिचारिन्**=अत्याचारी
शशिन्=चांद	**शिखरिन्**=शिखरवाला
योगिन्=योगी	**दूरदर्शिन्**=दूरदर्शी
त्यागिन्=त्यागी	**गृहिन**=गृहस्थी

वाक्य।

१ ज्ञानिनं पुरुषं राज्ञः समीपं नय= ज्ञानी पुरुषको राजाके पास ले जा।

२ ब्रह्मचारी विद्यां समाप्य गृही भवति= ब्रह्मचारी विद्या समाप्त कर गृहस्थी होता है।

३ दंतिना विष्णुदत्तस्य पुत्रः हतः= हाथीने विष्णुदत्तका पुत्र मारा।

४ पूर्णिमायां शशिनः प्रकाशः वर्णनीयः भवति= पूर्णिमामें चांदका प्रकाश वर्णन करने योग्य होता है।

५ योगिनां अचिन्त्या शक्तिः भवति= योगियोंकी अचिन्त्य शक्ति होती है।

६ अस्मिन् संभाषणे तेन वाग्मिना किं प्रतिपादितम्= इस भाषणमें उस वक्ताने क्या प्रतिपादन किया?

७ दूरदर्शिना पुरुषेण प्रथमे वयसि ब्रह्मचर्यं अवश्यं पालनीयम्= दूरदर्शी पुरुषने पहिली आयुमें ब्रह्मचर्य अवश्य पालन करना चाहिये।

८ गृहिभिः पंचमहायज्ञाः अवश्यं करणीयाः= गृहस्थियोंने पंचमहायज्ञ अवश्य करने योग्य हैं।

उक्त रीतिको छोड कर अन्य प्रकार से निम्नलिखित नकारान्त शब्दके रूप होते हैं—

नकारान्तः पुल्लिंगः पथिन् शब्दः।

१ पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः
सं० ,,	,,	,,

२ पन्थानं	पन्थानौ	पथः
३ पथा	पथिभ्यां	पथिभिः
४ पथे	पथिभ्यां	पथिभ्यः
५ पथः	,,	,,
६ ,,	पथोः	पथाम्
७ पथि	,,	पथिषु

पूर्वोक्त नकारान्त शब्दके रूपोंसे जो भिन्नता इस शब्दके रूपोंमें है वह पाठक देखें।

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दोंके रूप होते हैं—

शब्द।

मथिन्=मंथन करनेका दंड | ऋभुक्षिन्=इंद्र, मरुत्

वाक्य।

१ मम ग्रामस्य कः पंथाः?= मेरे ग्रामका कौनसा मार्ग है?
२ तं मंथानं अत्र आनय= उस मंथन दंड को यहां ला।
३ ऋभुक्षा ऋभूणां राजा भवति= ऋभुक्षा ऋभुओंका राजा होता है।
४ अनेन एव पथा तं नगरं गच्छ= इसी मार्ग से उस नगर को जा।
५ दिव्यैः पथिभिः देवाः ऊर्ध्वं गच्छन्ति= दिव्य मार्गों से देव ऊपर जाते हैं।

अब शकारान्त शब्दोंके रूपोंकी विधि बताते हैं—

शकारान्तः पुल्लिंगो विश् शब्दः ।

१ विट्, विड्	विशौ	विशः
सं० ,, ,,	,,	,,
२ विशं	,,	,,
३ विशा	विड्भ्यां	विड्भिः
४ विशे	,,	विड्भ्यः
५ विशः	,,	,,
६ ,,	विशोः	विशाम्
७ विशि	,,	विट्त्सु, विट्सु

इस रीतिसे शकारान्त पुल्लिंग शब्दोंके रूप होते हैं। अब इनका वाक्यों में उपयोग देखिये—

वाक्य ।

१ **विड्भिः राजा नमस्कृतः सत्कारितः च**= प्रजाओंने राजाको नमस्कार किया और उसका सत्कार किया ।

२ **विशि राजा प्रतिष्ठितः**= प्रजाओंमें राजा प्रतिष्ठित है ।

३ **विशां राजानं पश्य**= प्रजाओंमें राजाको देख ।

४ **विड्भ्यः धनं राजा गृह्णाति**= प्रजाओंसे धन राजा लेता है।

अब सकारान्त शब्दोंके रूप बनानेकी विधि बताई जाती है—

सकारान्तः पुल्लिंगो विद्वस् शब्दः ।

१ विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
सं० विद्वन्	,,	,,
२ विद्वांसं	,,	विदुषः
३ विदुषा	विद्वद्भ्यां	विद्वद्भिः

४ विदुषे	विद्वद्भ्यां	विद्वद्भ्यः
५ विदुषः	,,	,,
६ ,,	विदुषोः	विदुषाम्
७ विदुषि	,,	विद्वत्सु

इस प्रकार "**वस्**" प्रत्ययान्त सकारान्त शब्दोंके रूप होते हैं।

वाक्य ।

१ **तौ विद्वांसौ पुरुषौ कस्मात् देशात् आगतौ?**=वे दो विद्वान् पुरुष किस देशसे आगये?

२ **विदुषां सकाशात् एव विद्या प्राप्यते**=विद्वानोंके पास से ही विद्या प्राप्त की जाती है।

३ **विद्वद्भिः एव सर्वं जगत् याथातथ्येन ज्ञायते**=विद्वानोंने ही सब जगत् यथायोग्य रीतीसे जाना जाता है।

४ **एतत्पुस्तकं तेन एव विदुषा रचितं**=यह पुस्तक उसी ज्ञानीने रचा है।

पाठ ११

नावमन्ये न गर्हे च धर्मं पार्थ कथंचन।
ईश्वरं कुत एवाहमवमंस्ये प्रजापतिम् ॥ १ ॥

म. भारत वन अ. ३२

अन्वयः—हे पार्थ! अहं धर्मं न अवमन्ये न च कथंचन गर्हे। कुतः प्रजापतिं ईश्वरं एव अहं अवमंस्ये?

संस्कृत टीका—हे पार्थ ! हे पृथानंदन ! अहं धर्मं न अवमन्ये धर्मस्य अपमानं न करोमि । न च कथंचन धर्मं गर्हे निंदयामि । कुतः कथं प्रजापतिं प्रजापालकं ईश्वरं च अहं अवमंस्ये ? अहं कथमपि तस्य अपमानं न करोमि ।

अर्थ—हे पृथापुत्र ! मैं धर्मका अपमान नहीं करती और न उसकी निंदा करती हूं । तो कैसे प्रजापालक ईश्वर की निंदा करूंगी ?

आर्ताहं प्रलपामीदमिति मां विद्धि भारत ।
भूयश्च विलपिष्यामि सुमनास्त्वं निबोध मे ॥ २ ॥

म. भारत वन अ. ३२

अन्वयः—हे भारत ! अहं आर्ता प्रलपामि इति मां विद्धि । भूयः च विलपिष्यामि । त्वं सुमनाः मे निबोध ।

संस्कृतटीका—हे भारत ! हे भरतकुलोत्पन्न ! अहं आर्ता दुःखिता अस्मि इति अतः एवं प्रलपामि वदामि इति मां त्वं विद्धि जानीहि । इतः अस्मादपि भूयः अधिकं विलपिष्यामि वदिष्यामि । त्वं सुमनाः शोभनमनोयुक्तः भूत्वा मे मम भाषणं निबोध जानीहि ।

अर्थ—हे भरतकुलोत्पन्न ! मैं दुःखी हूं अत एव ऐसा बोलती हूं यह तू समझ । औरभी अधिक बोलूंगी । तू उत्तम मन लगाकर सुन ।

कर्म खल्विह कर्तव्यं जानताऽमित्रकर्शन ।
अकर्माणो हि जीवन्ति स्थावरा नेतरे जनाः ॥ ३॥

म. भारत वन अ. ३२

अन्वयः—हे अमित्रकर्शन ! जानता इह खलु कर्म कर्तव्यम् । अकर्माणः स्थावराः हि जीवन्ति इतरे जनाः न ।

संस्कृतटीका—हे अमित्रकर्शन ! न मित्रः अमित्रः शत्रुः तस्य अमित्रस्य शत्रोः कर्शनः नाशकः अमित्रकर्शनः तस्य संबुद्धौ अमित्रकर्शन शत्रुनाशक वीर ! जानता प्राज्ञेन विदुषा बुद्धिमता पुरुषेण इह अस्मिन् जगति खलु निश्चयेन कर्म पुरुषार्थः कर्तव्यः अवश्यं करणीयः एव। अकर्माणः कर्महीनाः पुरुषार्थ-हीनाः स्थावराः वृक्षादयः एव जीवन्ति इतरे जनाः वृक्षपाषाणा-दिभ्यः अन्याः जनाः पशवः पक्षिणः च न जीवंति। एते प्राणिनः कर्म कृत्वा एव जीवितुं समर्थाः भवन्ति।

जंगमेषु विशेषेण मनुष्या भरतर्षभ ।
इच्छन्ति कर्मणा वृत्तिमवाप्तुं प्रेत्यचेह च ॥ ५ ॥

म. भारत वन अ. ३२

अन्वयः—हे भरतर्षभ ! जंगमेषु विशेषेण मनुष्याः इह च प्रेत्य च कर्मणा वृत्तिं अवाप्तुं इच्छन्ति।

संस्कृतटीका—हे भरतर्षभ ! हे भरतश्रेष्ठ ! जंगमेषु गतिमत्सु भूतेषु विशेषेण विशेषतः मनुष्याः मानवाः इह अस्मिन् जगति प्रेत्य परलोके च कर्मणा पुरुषार्थेन एव वृत्तिं आजीविकां अवाप्तुं प्राप्तुं इच्छन्ति।

अर्थ—हे भरतोंमें श्रेष्ठ ! जंगम अर्थात् चलने फिरने वाले प्राणियों अर्थात् मनुष्योंमें यहां और मरनेके पश्चात् कर्मसे ही आजीवि-का की प्राप्ति करनेकी इच्छा करते हैं।

उत्थानमभिजानन्ति सर्वभूतानि भारत।
प्रत्यक्षं फलमश्नन्ति कर्मणां लोकसाक्षिकम् ॥

म. भारत वन. अ. ३२

अन्वयः—हे भारत ! सर्वभूतानि उत्थानं अभिजानन्ति । कर्मणां लोकसाक्षिकं प्रत्यक्षं फलं अश्नन्ति ।

संस्कृतटीका—हे भारत ! हे भरतकुलोत्पन्न ! सर्वभूतानि सर्वाणि भूतानि सर्वे प्राणिनः उत्थानं अभ्युत्थानं जानन्ति । तथा च कर्मणां स्वकीयानां पुरुषार्थानां लोकसाक्षिकं जनसाक्षिकं प्रत्यक्षं साक्षात् फलं अश्नन्ति भक्षयन्ति ।

अर्थ—हे भारत ! सब प्राणी उठना जानते हैं (अर्थात् अपने उद्धारके लिये उठकर कार्य करना जानते हैं ।) क्यों कि कर्मोंका लोकों की साक्षीमें प्रत्यक्ष (फल वे प्राप्त करते हैं किंवा) फल खाते हैं ।

पाठक इन श्लोकोंका अच्छी प्रकार अध्ययन करें । पद अन्वय और अर्थ स्वयं करनेका प्रयत्न करें । और संभवःहुआ तो एक बार पढनेके पश्चात् संस्कृतटीका स्वयं मनसे ही लिखनेका यत्न करें । ऐसा प्रयत्न करनेसे ही बडा लाभ हो सकता है ।

पाठ १२

अब सर्वसाधारण सकारान्त शब्दोंके रूप बनानेकी विधि बताते हैं।

सकारान्तः पुल्लिंगः चन्द्रमस् शब्दः ।

१ चन्द्रमाः	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
सं० हे चन्द्रमः	,,	,,
२ चन्द्रमसं	,,	,,
३ चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभिः

४ चन्द्रमसे	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभ्यः
५ चन्द्रमसः	,,	,,
६ ,,	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्
७ चन्द्रमसि	,,	चन्द्रमस्सु

साधारण रीतिसे इस शब्दके समान सकारान्त शब्दोंके रूप होते हैं। इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दोंके रूप बनते हैं—

शब्द।

वेधस्=विश्व बनानेवाला
सुमनस्=उत्तम मनवाला
जातवेदस्=अग्नि
प्रचेतस्=ज्ञानी, वरुण
कृत्तिवासस्=महादेव
अंगिरस्=आंगिरा ऋषि
उशनस्=शुक्र
सुतपस्=उत्तम तपवाला
वयोधस्=तरुण मनुष्य
पुरोधस्=पुरोहित
पुरूरवस्=राजा पुरूरवा
नृचक्षस्=मनुष्योंका नेता
विश्ववेदस्=सब धनसे युक्त, सब ज्ञानसे युक्त
अनेहस् पापरहित

वाक्य।

१ **आकाशे प्रकाशमानं चंद्रमसं बालकः पश्यति**= आकाशमें प्रकाशमान चांदको बालक देखता है।

२ **रात्रौ सर्वं जगत् चंद्रमसा एव प्रकाशितं**= रात्री के समय सब जगत् चांदसे ही प्रकाशित होता है।

३ **जातवेदसा काष्ठानि दग्धानि**= अग्निने लकडियां जला दीं।

४ अंगिरसा ऋषिणा एतत्स्तोत्रं निर्मितं= अंगिरा ऋषिने यह स्तोत्र बनाया ।

५ उशनाः राक्षसानां पुरोहितः= शुक्र राक्षसोंका पुरोहित ।

६ पुरूरवाः स्वर्गं गतः= पुरूरवा स्वर्गको गया ।

पूर्वोक्त शब्द की अपेक्षा निम्न लिखितशब्दके रूपोंमें थोडीसी विशेषता है देखिये—

सकारान्तः पुल्लिंगः पुंस् शब्दः

१ पुमान्	पुमांसौ	पुमांसः
सं० हे पुमन्	,,	,,
२ पुमांसं	,,	पुंसः
३ पुंसा	पुंभ्याम्	पुंभिः
४ पुंसे	,,	पुंभ्यः
५ पुंसः	,,	,,
६ ,,	पुंसोः	पुंसाम्
७ पुंसि	,,	पुंसु

१ यत्र पुमान् भवति तत्र स्त्री अपि भवति= जहां पुरुष होता है वहां स्त्री भी होती है ।

२ पुंसा यत् कर्तुं शक्यते तत्त्वं कुरु= पुरुषने जो करना शक्य है वह तू कर ।

३ पुंसु पौरुषं भवतु= पुरुषोंमें पौरुष रहे ।

४ नगरेषु पुंसां निवासः भवति= नगरोंमें पुरुषोंका निवास होता है ।

अब हकारान्त शब्दोंके रूप बताते हैं—

हकारान्तः पुल्लिंगः अनडुह् शब्दः ।

१ अनड्वान्	अनड्वाहौ	अनड्वाहः
सं० हे अनड्वन्	,,	,,
२ अनड्वाहं	,,	अनडुहः
३ अनडुहा	अनडुद्भ्यां	अनडुद्भिः
४ अनडुहे	,,	अनडुदभ्यः
५ अनडुहः	,,	,,
६ ,,	अनडुहोः	अनडुहाम्
७ अनडुहि	,,	अनडुत्सु

वाक्य ।

१ अनड्वान् यवसं भक्षयति= बैल जौ खाता है ।

२ अनडुहा जलं किं न पीतं ?= बैलने जल क्यौं नहीं पीया ?

३ तत्र अनडुद्भिः क्षेत्रस्य विनाशः कृतः= वहां बैलोंने खेतका विनाश किया ।

४ अनडुहां चर्मणा चर्मकारैः पादत्राणं क्रियते= बैलोंके चमडेसे चमारोंने जूता किया जाता है ।

पाठ १३

पूर्वपाठोंमें दिये श्लोकोंका सरल संस्कृत संधिपूर्वक इस पाठमें दिया जाता है । अब इसका अध्ययन पाठक करें—

" सततं तेजो न श्रेयः, नित्यं क्षमाऽपि न श्रेयसी, हे तात ! इत्येतद्द्वयमसंशयं विजानीहि ।

हे तात ! यो नित्यं क्षमते स बहून्दोषान् विन्दति । एनं भृत्याः परिभवन्ति तथाऽरय उदासीना भवन्ति ।

अपि चाऽस्य सर्वभूतानि कदाचन न नमन्ते । तस्माद्धे तात ! नित्यं क्षमा पंडितैरपवादिता ।

ते हि भृत्या अवज्ञाय बहुदोषतां भजन्ते । अस्य च वित्ता-न्यादातुमल्पचेतसः प्रार्थयन्ते ।

यानं वस्त्राण्यलंकाराञ्छयनान्यासनानि च भोजनान्यथ पानानि सर्वोपकरणानि चाचेतसोऽधिकृता यथाकाममाददीरन् । भर्तृशासनात् प्रदिष्टानि देयानि च न दद्युः ।

हे पार्थ ! अहं धर्मं नावमन्ये, न च कथंचन गर्हे । कुतः प्रजापतिमीश्वरमेवाहमवमंस्ये ?

हे भारत ! अहमार्ता प्रलपामीति मां विद्धि । भूयश्च विलपि-ष्यामि । त्वं सुमना मे निबोध ।

हे अमित्रकर्शन ! जानतेह खलु कर्म कर्तव्यम् । अकर्माणः स्थावरा हि जीवन्ति नेतरे जनाः ।

हे भरतर्षभ ! जंगमेषु विशेषेण मनुष्या इह च प्रेत्य च कर्मणा वृत्तिमवाप्तुमिच्छन्ति ।

हे भारत ! सर्वभूतान्युत्थानमभिजानन्ति । कर्मणां लोक-साक्षिकं प्रत्यक्षं फलमश्नन्ति ।

पाठक इन वाक्यों को बार बार पढें और उनका अर्थ जाननेका यत्न करें । यदि प्रयत्न करने पर भी किसी वाक्य का अर्थ न समझा तो पूर्व पाठों में उस वाक्य का अर्थ देखें और समझें । वहां इन वाक्यों के पूर्ण अर्थ दिये हैं । अब इस पाठमें इन वाक्यों के समास दिये जाते हैं उनका अच्छी प्रकार अभ्यास करें—

समास ।

१ असंशयं—न विद्यते संशयः यत्र तद् असंशयं (संशय रहित)

२ सर्वभूतानि—सर्वाणि च तानि भूतानि । (सब भूत)

३ बहुदोषता—बहवः दोषाः बहुदोषाः । बहुदोषाणां भावः बहुदोषता (बहुत दोष होना)

४ अल्पचेताः=अल्पं चेतः यस्य सः अल्पचेताः। (छोटे दिलवाला)

५ सर्वोपकरणानि—सर्वाणि च तानि उपकरणानि सर्वोपकरणानि । (सब साधन)

६ अचेतसः—न अस्ति चेतः यस्य सः अचेताः । (बुद्धिहीन)

७ यथाकामं—कामं अनतिक्रम्य इति यथाकामं (इच्छानुकूल)

८ भर्तृशासनं—भर्तुः शासनं भर्तृशासनं । (स्वामीकी आज्ञा)

९ प्रजापतिः—प्रजायाः पतिः (प्रजाका पालक)

१० ईश्वरः—ईशेषु वरः (ईशोंमें श्रेष्ठ)

११ सुमनाः—सुष्ठु मनः यस्य सः (उत्तम है मन जिसका)

१२ अमित्रकर्शनः—न मित्रः अमित्रः अमित्राणां कर्शनः । (शत्रुओंका नाशक)

१३ भरतर्षभः—भरतेषु ऋषभः (भरतों में श्रेष्ठ ।)

पाठक इन समासोंका उत्तम अभ्यास करें । यह अभ्यास अत्यावश्यक है इसी लिये दिया जाता है । किस सामासिक पदका किस ढंगसे विवरण किया जाता है यह ध्यानपूर्वक देख कर उसको ठीक प्रकार स्मरण रखें ।

संस्कृतमें स्थानस्थान पर सामासिक पद आते हैं, इस कारण इस अभ्यासकी अत्यंत आवश्यकता है । इस अभ्याससे पाठक यह जान सकेंगे कि समासों का अर्थ किस प्रकारसे होता है और उसको खोलना कैसा चाहिये ।

स्वाध्यायके ग्रंथ।

[१] यजुर्वेदका स्वाध्याय।

(१) य. अ. ३० की व्याख्या। नरमेध।
मनुष्योंकी सच्ची उन्नतिका सच्चा साधन। १)

(२) य. अ. ३२ की व्याख्या। सर्वमेध।
" एक ईश्वरकी उपासना। " मू. ॥)

(३) य. अ. ३६ की व्याख्या। शांतिकरण।
" सच्ची शांतिका सच्चा उपाय। " मू. ॥)

[२] देवता-परिचय-ग्रंथमाला।

(१) रुद्र देवताका परिचय। मू. ॥)
(२) ऋग्वेदमें रुद्र देवता। मू. ॥=)
(३) ३३ देवताओंका विचार। मू. ≡)
(४) देवताविचार। मू. ≡)
(५) वैदिक अग्नि विद्या। मू. १॥)

[३] योग-साधन-माला।

(१) संध्योपासना। मू. १॥)
(२) संध्याका अनुष्ठान। मू. ॥)
(३) वैदिक-प्राण-विद्या। मू. १)
(४) ब्रह्मचर्य। मू. १।)
(५) योगसाधन की तैयारी। मू. १)
(६) योग के आसन। मू. २)
(७) सूर्यभेदन व्यायाम। मू. ।=)

[४] धर्म-शिक्षाके ग्रंथ ।

(१) बालकोंकी धर्मशिक्षा । प्रथमभाग । —)
(२) बालकोंकी धर्मशिक्षा । द्वितीयभाग । =)
(३) वैदिक पाठ माला । प्रथमपुस्तक । ≡)

[५] स्वयंशिक्षकमाला ।

(१) वेदका स्वयंशिक्षक । प्रथमभाग । १॥)
(२) वेदका स्वयंशिक्षक । द्वितीय भाग । १॥)

[६] आगम-निबंध-माला ।

(१) वैदिक राज्य पद्धति । मू. ।-)
(२) मानवी आयुष्य । मू. ।)
(३) वैदिक सभ्यता । मू. ॥।)
(४) वैदिक चिकित्सा-शास्त्र । मू. ।)
(५) वैदिक स्वराज्यकी महिमा । मू. ॥)
(६) वैदिक सर्प-विद्या । मू. ॥)
(७) मृत्युको दूर करनेका उपाय । मू. ॥)
(८) वेदमें चर्खा । मू. ॥)
(९) शिव संकल्पका विजय । मू. ॥।)
(१०) वैदिक धर्मकी विशेषता । मू. ॥)
(११) तर्कसे वेदका अर्थ । मू. ॥)
(१२) वेदमें रोगजंतुशास्त्र । मू. ।≡)
(१३) ब्रह्मचर्यका विघ्न । मू. =)
(१४) वेदमें लोहेके कारखाने । मू. —)
(१५) वेदमें कृषिविद्या । मू. ≡)
(१६) वैदिक जलविद्या । मू. =)
(१७) आत्मशक्ति का विकास । मू. ।-)

मंत्री-स्वाध्याय-मंडल,
औंध, (जि. सातारा).

अंक १०

संस्कृत-पाठ-माला।

(संस्कृत भाषाका अध्ययन करनेका सुगम उपाय।)
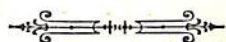
दशम भाग।

लेखक और प्रकाशक।

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,

स्वाध्याय मंडल, औंध (जि. सातारा)

प्रथम बार १०००

संवत् १९८२, शके १८४७, सन १९२५

मूल्य ।-) पांच आने।

अंक १०

संस्कृत–पाठ–माला ।

[संस्कृत भाषाका अध्ययन करनेका सुगम उपाय।]

दशम भाग ।

लेखक और प्रकाशक ।

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,

स्वाध्यायमंडल, औंध (जि. सातारा.)
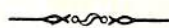
प्रथमवार १०००

संवत् १९८२, शक १८४७, सन १९२५.

मूल्य ।-) पांच आने।

स्त्रीलिंगी शब्दोंके रूप ।

इस पुस्तकमें स्त्रीलिंगी शब्दोंके रूप बनानेकी विधि बताई है । शब्दोंके रूप कंठ करनेकी बहुतसी आवश्यकता नहीं है, परंतु विविध रूपोंकी तुलना करके उनमें जो विशेषता है, उसका स्मरण करनेकी आवश्यकता है ।

यह कार्य रूपोंको वारंवार देखनेसे भी हो सकता है । पाठक यदि इस पुस्तकका अध्ययन उत्तम रीतिसे करेंगे तो उनको स्त्रीलिंग शब्दोंके रूप बनाना अत्यंत सुगम हो जायगा ।

स्वाध्याय मंडल
औंध (जि. सातारा)
६।११।२९

लेखक
श्रीपाद दामोदर सातवळेकर

मुद्रक—रा. रा. **चिंतामण सखाराम देवळे,** मुंबईवैभव प्रेस, सर्व्हंट्स ऑफ इंडिया सोसायटीज़ होम, सँढर्स्ट रोड, गिरगांव-मुंबई.

प्रकाशक—**श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,** स्वाध्यायमंडल, औंध (जि. सातारा).

ॐ

संस्कृत—पाठ—माला।

दशम भाग।

पाठ १

अब इस पुस्तकमें स्त्रीलिंगी नामोंके रूप दिये जाते हैं—

आकारान्तः स्त्रीलिंगो रमां शब्दः।

१	रमा	रमे	रमाः
सं०	रमे	,,	,,
२	रमां	,,	,,
३	रमया	रमाभ्यां	रमाभिः
४	रमायै	,,	रमाभ्यः
५	रमायाः	,,	,,
६	,,	रमयोः	रमाणाम्
७	रमायां	,,	रमासु

इसी रीतिसे निम्नलिखित शब्दोंके रूप बनते हैं—

शब्द ।

विद्या=विद्या
देवता=देवी
वनिता=स्त्री
कान्ता=पत्नी
तारा=तारका
ज्योत्स्ना=चांदना
पाठशाला=पाठशाला
लता=बेल
अबला=स्त्री, बलहीन
चपला=चंचल, बिजली
महिला=स्त्री
प्रपा=प्याऊ
याञ्चा=याचना
शाला=घर

वाक्य ।

१ विद्यया मनुष्याः शोभन्ते=विद्यासे मनुष्य शोभते हैं ।
२ लताभिः वृक्षः आच्छादितः=वेलियोंसे वृक्ष आच्छादित हुआ है ।
३ महिलाभिः विद्याध्ययनं अवश्यं कर्तव्यम्=स्त्रियोंको विद्याका अध्ययन अवश्य करना चाहिये ।
४ तां प्रपां गत्वा यथेच्छं जलं पिब=उस प्याऊमें जाकर इच्छाके अनुसार जल पीओ ।
५ महिला विद्यया शोभते=स्त्री विद्यासे शोभती है ।
६ याञ्चया मनुष्यः पतति=याचनासे मनुष्य गिरता है ।
७ यथा आकाशे तारा: सन्ति=जैसे आकाशमें ताराएं होती हैं ।
८ तासु लतासु व्याघ्रः वसति=उन लताओंमें वाघ है ।
९ रात्रौ ज्योत्स्ना भवति तथा दिने सूर्यप्रकाशः भवति= रात्रीमें चांदना होता है वैसा दिनमें सूर्य प्रकाश होता है ।
१० यौवने कान्ता प्रिया भवति=यौवनमें स्त्री प्रिय होती है ।

आकारान्तः स्त्रीलिंगो नासिका शब्दः ।

१ नासिका	नासिके	नासिकाः ।
सं० नासिके	”	”
२ नासिकां	”	नासिकाः, नसः
३ नासिकयानसा	नासिकाभ्यां, नोभ्यां	नासिकाभिः, नोभिः
४ नासिकायै, नसे	” ”	नासिकाभ्यः, नोभ्यः
५ नासिकायाः, नसः	” ”	” ”
६ ” ”	नासिकयोः, नसोः	नासिकानाम्, नसाम्
७ नासिकायां, नसि	” ”	नासिकासु, नस्सु

वास्तविक “ रमा ” शब्दके समानही यह नासिका शब्द आकारान्त है । परंतु इसके रूप द्वितीया के बहुवचन के बाद जैसे होते हैं वे उपर दिये हैं । इन रूपोंमें एक रूप “ रमा ” शब्दके समान है और दूसरा भिन्न है । पाठक इसका अवश्य ध्यान रखें ।

वाक्य ।

१ नासिकया प्राणः संचरति=नासिकासे प्राण संचारता है ।

२ चोरेण तस्य नासिका कृत्ता=चोरने उसकी नासिका काटी

३ तस्य नसि व्रणः संजातः=उसके नाकमें व्रण हुआ है ।

४ वनिताभिः नासिकासु आभूषणानि धार्यन्ते=स्त्रियोंने नाकोंमें भूषण धारण किये जाते हैं ।

आकारान्तः स्त्रीलिंगो निशा शब्दः ।

१ निशा	निशे		निशाः ।	
सं० निशे	”		”	
२ निशां	”		निशाः, निशः ।	
३ निशया, निशा	निशाभ्यां, निड्भ्यां		निशाभिः, निड्भिः,	
४ निशायै, निशे	”	”	निशाभ्यः, निड्भ्यः	
५ निशायाः, निशः	”	”	”	”
६ ” ”	निशयोः, निशोः		निशानाम्, निशाम्	
७ निशायाम्, निशी	”	”	निशासु, निट्त्सु	

“ निशा ” शब्द भी “ रमा ” शब्दके समान ही है। परंतु पूर्ववत् द्वितीयाके बहुवचन के बाद इसके प्रत्येक में दो दो रूप होते हैं। एक “ रमा ” शब्दके समान रूप है और दूसरा भिन्न है। पाठक इस के विशेष रूपोंका निरिक्षण करें–

वाक्य ।

१ निशि चंद्रमाः प्रकाशते=रात्रीमें चांद प्रकाशता है ।

२ कृष्णपक्षस्य निशासु चोराणां भयं भवति=कृष्ण पक्षकी रात्रियोंमें चोरोंका भय होता है।

३ द्वाभ्यां निशाभ्यां त्वं तत्र गमिष्यसि=दो रात्रियोंसे तू वहां जायेगा ।

४ चंद्रमाः निशायाः पतिः=चांद रात्रीका पति है ।

आकारान्तः स्त्रीलिंगो जरा शब्दः।

१ जरा	जरसौ, जरे	जरसः, जराः
सं० हे जरे	” ”	” ”
२ जरसं, जराम्	” ”	” ”
३ जरसा, जरया	जराभ्याम्	जराभिः
४ जरसे, जरायै	”	जराभ्यः
५ जरसः, जरायाः	”	”
६ ” ”	जरसोः, जरयोः	जरसां, जराणाम्
७ जरसि, जरायाम्	” ”	जरासु

यद्यपि “ जरा ” शब्द “ रमा ” के समानही आकारान्त है तथापि इसके कई रूप “ रमा ” शब्दके रूपोंके समान होते हैं और कई भिन्न होते हैं। पाठक इन रूपोंको इस पाठमें देखें और इसकी विशेषताका स्मरण रखें।

वाक्य।

१ जरसः पुरा मा मृथाः=वृद्धावस्थाके पूर्व न मर।

२ हे मनुष्य ! त्वं जरसे यत=हे मनुष्य ! तू वृद्धावस्थाके लिये यत्न कर।

३ देवाः जरया रहिताः भवन्ति=देव जरासे रहित होते हैं।

पाठकोंको स्मरण रहे, कि इन शब्दोंके कंठ करनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। परंतु इन रूपोंकी विशेषताको ध्यानमें धरना चाहिये। किसी किसी स्थानपर ये रूप आते हैं तो इनको अच्छी प्रकार पहचानना चाहिये।

पाठ २

इस पाठमें निम्नलिखित श्लोकोंका अभ्यास कीजिये—

वैशम्पायन उवाच ।

ततः संप्रस्थितो राजा कौन्तेयो भूरिदक्षिणः ।
अगस्त्याश्रममासाद्य दुर्जयायामुवास ह ॥ १ ॥

अन्वयः=वैशम्पायनः उवाच ।–ततः भूरिदक्षिणः कौन्तेयः राजा संप्रस्थितः । अगस्त्याश्रमं आसाद्य दुर्जयायां उवास ह ।

संस्कृत टीका=ततः तस्मात् स्थानात् भूरिदक्षिणः बहुदक्षिणः कौन्तेयः कुन्तीपुत्रः राजा युधिष्ठिरः संप्रस्थितः सम्यक् प्रस्थितः चलितः । स राजा अगस्त्याश्रमं आसाद्य प्राप्य दुर्जयायां उवास दुर्जयानामके स्थाने स्थितः ।

अर्थ—पश्चात् उस स्थानसे बहुत दक्षिणा देनेवाला कुंतीपुत्र राजा युधिष्ठिर चला । वह राजा अगस्त्यके आश्रम को प्राप्त होकर दुर्जया नामक स्थानमें रहा ।

तत्रैव लोमशं राजा पप्रच्छ वदतां वरः ।
अगस्त्येनेह वातापिः किमर्थमुपशामितः ॥ २ ॥

अन्वयः—तत्र एव वदतां वरः राजा लोमशं पप्रच्छ इह वातापिः अगस्त्येन किमर्थं उपशामितः ?

संस्कृतटीका—तत्र एव तस्मिन् दुर्जयानामके स्थाने एव वदतां वरः वक्तॄणां श्रेष्ठः राजा युधिष्ठिरः लोमशं मुनिं पप्रच्छ

पृष्टवान्। इह अस्मिन् स्थाने वातापिः नामकः राक्षसः अगस्त्येन मुनिना किमर्थं किं उद्देशेन उपशामितः मारितः ?

अर्थ—वहां ही वक्ताओंमें श्रेष्ठ राजा युधिष्ठिर लोमश मुनिसे पूछने लगा कि यहां वातापिको अगस्त्य मुनिने क्यों मारा था ?

आसीद्वा किं प्रभावश्च स दैत्यो मानवान्तकः।
किमर्थं चोदितो मन्युरगस्त्यस्य महात्मनः ॥ ३ ॥

अन्वयः—मानवान्तकः दैत्यः च किं प्रभावः आसीत् ? महात्मनः अगस्त्यस्य मन्युः किमर्थं च उदितः ?

संस्कृत टीका—सः मानवान्तकः मानवानां मनुष्याणां अंतकः दैत्यः असुरः किं प्रभावः कीदृशप्रभाववान् आसीत् ? महात्मनः अगस्त्यस्य मुनेः मन्युः क्रोधः किमर्थं किं कारणेन च उदितः उत्पन्नः ?

अर्थ—वह मनुष्योंका नाश करनेवाला राक्षस किस प्रभावसे युक्त था और महात्मा अगस्त्य को क्रोध किस कारण उत्पन्न हुआ था ?

लोमश उवाच।

इल्वलो नाम दैतेय आसीत्कौरवनंदन।
मणिमत्यां पुरि पुरा वातापिस्तस्य चानुजः ॥ ४ ॥

अन्वयः—लोमशः उवाच=हे कौरवनंदन ! इल्वलः नाम दैतेयः पुरा मणिमत्यां पुरि आसीत्। तस्य च अनुजः वातापिः।

संस्कृत टीका—लोमश उवाच—हे कौरवनंदन ! हे धर्मराज ! इल्वलः नाम दैत्यः पुरा पूर्वकाले मणिमत्यां मणिमतीनामकायां पुरि नगर्यां आसीत् । तस्य च अनुजः भ्राता वातापिः वातापिनामकः आसीत् ।

अर्थ—लोमश मुनि बोले—हे धर्मराज ! इल्वल नामक राक्षस पूर्व समयमें मणिमती नामक नगरीमें था और उसका भाई वातापि नामक था ।

समास ।

१ भूरिदक्षिणः=भूरी दक्षिणा यस्य सः (बहुत दक्षिणा देनेवाला)
२ अगस्त्याश्रमः=अगस्त्यस्य आश्रमः=(अगस्त्यका आश्रमः)
३ मानवान्तकः=मानवानां अंतकः (मनुष्योंका अंत करनेवाला)
४ अंतकः=अंतं करोति इति (नाश करनेवाला)
५ कौरवनंदनः=कौरवस्य नंदनः (कौरवका पुत्र)

संधि ।

१ प्रस्थितो राजा=प्रस्थितः राजा
२ तत्रैव=तत्र एव
३ अगस्त्येनेह=अगस्त्येन इह
४ आसीद्वा=आसीत् वा
५ मन्युरगस्त्यस्य=मन्युः अगस्त्यस्य
६ वातापिस्तस्य=वातापिः तस्य

पाठक इन समासों और संधियोंका अच्छी प्रकार अभ्यास करें। क्योंकि संस्कृत में सर्वत्र इनका उपयोग होता है और ध्यानपूर्वक इनका अभ्यास करके अच्छा ज्ञान संपादन करनेसे ही संस्कृतमें अच्छी गति हो सकती है ।

पाठ ३

इस पाठमें इकारान्त स्त्रीलिंगी शब्दों के रूप देखिये—

इकारान्तः स्त्रीलिंगो मति शब्दः ।

१ मतिः	मती	मतयः
० मते	"	"
२ मतिम्	"	मतीः
३ मत्या	मतिभ्यां	मतिभिः
४ मत्यै, मतये	"	मतिभ्यः
५ मत्याः, मतेः	"	"
६ " "	मत्योः	मतीनाम्
७ मत्यां, मतौ	"	मतिषु

इस शब्दके रूपों के समान निम्नलिखित शब्दों के रूप होते हैं—

शब्द ।

नियतिः=दैव
प्रकृतिः=प्रकृति, स्वभाव
बुद्धिः=बुद्धि
ज्ञातिः=जाति
व्यक्तिः=व्यक्ति
उक्तिः=कथन
श्रुतिः=श्रवण, वेद
वेदिः=वेदि
ओषधिः=औषधि
तिथिः=तारीख

धूलिः=धूलि, मिट्टी
केलिः=खेल
रात्रिः=रात्री
स्मृतिः=स्मरण
कांतिः=तेज
द्युतिः=प्रकाश
प्रीतिः=प्रेम
भूतिः=ऐश्वर्य
भूमिः=जमीन
अवनिः=भूमि

वाक्य ।

१ **प्रकृत्या यत् वक्रं तत्समं न भवति**=स्वभाव से जो टेढा है वह सीधा नहीं होता ।

२ **विशुद्धया बुद्धया युक्तः मनुष्यः बंधनात् मुक्तः भवति**= शुद्ध बुद्धिसे युक्त मनुष्य बंधनसे मुक्त होता है ।

३ **ज्ञातिभिः बांधवैः च सह धर्मं समाचर**=ज्ञातियों और भाइयों के साथ धर्मका आचरण कर ।

४ **सतां उक्तिः सदा एव हितकारिणी भवति**=साधुओं की उक्ति सदा ही हितकारी होती है ।

५ **भूतिं इच्छाद्भिः मनुष्यैः श्रुत्या विहितं कर्म कर्तव्यम्**= उन्नति चाहनेवाले मनुष्योंको श्रुतिसे विहित कर्म करना चाहिये ।

६ **तारकाणां द्युतौ यत् तेजः भवति तत् न कुत्र अपि अन्यत्र दृश्यते**=ताराओंके प्रकाशमें जो तेज होता है वह नहीं कहीं भी अन्यत्र दिखाई देता है ।

७ **यदा आकाशं धूल्या व्याप्यते तदा विद्यार्थिभिः अध्ययन-कर्म न कर्तव्यं**=जब आकाश धूलीसे व्याप्त होता है तब विद्यार्थि-योंको अध्ययनका काम नहीं करना चाहिये ।

अब दीर्घ ईकारान्त शब्दोंके रूप देखिये—

ईकारान्तः स्त्रीलिंगो गौरी शब्दः ।

१	गौरी	गौर्यौ	गौर्यः
सं०	गौरि	,,	,,
२	गौरीं	,,	गौरीः

३	गौर्या	गौरीभ्यां	गौरीभिः
४	गौर्यै	,,	गौरीभ्यः
५	गौर्याः	,,	,,
६	,,	गौर्योः	गौरीणाम्
७	गौर्याम्	,,	गौरीषु

इस के समान निम्नलिखित शब्दोंके रूप बनते हैं—

खर्जूरी=खजूर वृक्ष	पुरी=नगर
केतकी=केतकी ,,	नारी=स्त्री
कदली=केल	जननी=माता
भारती=वाणी	धरणी=पृथ्वी
वाणी=भाषा	धरित्री= ,,
सरस्वती=नदी	मेदिनी=,,
नगरी=शहर	सौदामिनी=बिजुली

१ तव खर्जूरीणां वनं दर्शनीयं वर्तते=तेरा खजूरीयोंका वन देखने योग्य है।

२ केतक्याः पुष्पं त्वया अत्र न स्थापितं=केतकीका फूल तूने यहां नहीं रखा।

३ तस्य राज्ञः नगरीषु मर्कट्यः बह्व्यः सन्ति=उस राजाकी नगरीयोंमें बंदरियां बहुत हैं।

४ जननीभिः पुत्राणां पालनं क्रियते=माताओंद्वारा लडकों का पालन किया जाता है।

५ प्रेममय्या वाण्या मित्राणि वशे कुरु=प्रेमयुक्त भाषणसे मित्रोंको वशमें कर ।

६ मेदिन्यां शूराः एव विजयन्ते=पृथ्वीमें शूर ही विजय करते हैं।

७ मेघमंडलात् सौदामिनी पतिता=मेघमंडलसे बिजुली गिर पडी ।

८ जननी जन्मभूमिः च स्वर्गात् अपि गरीयसी=माता और जन्मभूमि स्वर्गसे भी श्रेष्ठ हैं ।

ईकारान्तः स्त्रीलिंगः स्त्रीशब्दः ।

१ स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः ।
सं० स्त्रि	,,	,,
२ स्त्रिय, स्त्रीं	,,	स्त्रियः, स्त्रीः ।
३ स्त्रिया	स्त्रीभ्यां	स्त्रीभिः
४ स्त्रियै	,,	स्त्रीभ्यः
५ स्त्रियाः, स्त्रियः	स्त्रीभ्यां	स्त्रीभ्यः
६ ,, ,,	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
७ स्त्रियाम्	,,	स्त्रीषु

पूर्वोक्त शब्दके रूपोंमें और इस शब्दके रूपोंमें जो भेद है वह पाठक स्मरणमें रखें,—द्वितीयाके रूपोंमें भेद विशेष है ।

वाक्य ।

१ स्त्रीणां स्वभावः प्रेममयः भवति=स्त्रियोंका स्वभाव प्रेममय होता है ।

२ स्त्रीषु जीवत्सु पुत्राणां कल्याणं भवति=स्त्रियोंके जीवित रहनेतक पुत्रोंका हित होता है ।

३ श्रूयंते पुराणेषु स्त्रीणां अपि शौर्यस्य कथाः=सुनी जाती हैं पुराणोंमें स्त्रियोंकी भी शौर्यकी कथाएं।

४ एकान्ते परकीयाभिः स्त्रीभिः सह भाषणं न कर्तव्यं=एकान्तमें परकीय स्त्रियोंके साथ भाषण नहीं करना चाहिये।

ईकारान्तः स्त्रीलिंगः श्री शब्दः।

१ श्रीः	श्रियौ	श्रियः
सं० ,,	,,	,,
२ श्रियं	,,	,,
३ श्रिया	श्रीभ्याम्	श्रीभिः
४ श्रियै, श्रिये	,,	श्रीभ्यः
५ श्रियाः, श्रियः	,,	,,
६ ,, ,,	श्रियोः	श्रीणां, श्रियाम्
७ श्रियाम्, श्रियि	,,	श्रीषु

इस प्रकार निम्नलिखित शब्दोंके रूप होते हैं—

शब्द।

धीः=बुद्धी	तंत्रीः=वीणा
ह्रीः=लज्जा	लक्ष्मीः=संपत्ति
तरीः=नौका	श्रीः=शोभा

वाक्य।

१ मनुष्यः धिया ज्ञान गृह्णाति=मनुष्य बुद्धिसे ज्ञान लेता है।

२ तंत्रीणां मधुरः शब्दः श्रूयते=वाणीओंका मधुर शब्द सुना जाता है।

३ विद्या लक्ष्म्या सह प्रकाशते=विद्या लक्ष्मीके साथ प्रकाशती है।

पाठ ४

१ सीता उवाच–हे राम ! सुव्रतां स्वकां नारीं पतिव्रतां मां केन हेतुना वनं नेतुं न रोचयसे ? यदि एवं दुःखितां मां नेतुं न इच्छसि तर्हि विषं पास्यामि मरिष्यामि च। हे अनघ राम ! अहं मनसा अपि त्वदृते अन्यं पुरुषं न द्रष्टुं इच्छामि। त्वया विना एष निरयः स्यात्। इति मम परां प्रीतिं जानन् मया सह एव वनं गच्छ। विरहशोकं मुहूर्तं अपि सहितुं न उत्सहे। किं पुनर्वर्षाणि चतुर्दश।=सीता बोली–हे राम ! उत्तम व्रतवाली अपनी स्त्री मुझ पतिव्रता को किस हेतुसे वन को ले जाना तू पसंद नहीं करता है ? यदि ऐसी दुःखिता मुझको ले जाना तू नहीं चाहता तो विष पीऊंगी और मरूंगी। हे निष्पाप राम ! मैं मनसे भी तेरे विना दूसरे पुरुष को देखना नहीं चाहती। तेरे विना यह नरक ही होगा। ऐसी मेरी श्रेष्ठ प्रीति जान कर मेरे साथही वनको तू जा। विरहशोक को घडीभर भी सहन करनेका उत्साह नहीं है। फिर कैसे चौदह वर्ष ?

२ राम उवाच=हे देवि ! तव दुःखेन स्वर्गं अपि न रोचये। अतः वनाय मां अनुगच्छस्व। हे सीते ! आरभस्व वनवास-क्षमाः क्रियाः। देहि ब्राह्मणेभ्यः विविधानि रत्नानि। मा चिरय। संत्वरस्व।=राम बोला–हे देवि ! तेरे दुःख के कारण स्वर्गभी मैं पसंद नहीं करता हूं। इस लिये वनके लिये मेरे पीछे चल। हे सीते ! आरंभ कर वनवास के योग्य क्रियाएं। दो ब्राह्मणोंके लिये विविध रत्न। देरी न कर। त्वरा कर।

३ लक्ष्मणः अपि सर्वं श्रुत्वा शोकं सोढुं असमर्थः रामं उवाच–अहं धनुर्धरः त्वां वनं अनुगमिष्यामि। मया समेतः अरण्यानि विचारिष्यसि। त्वया विना अहं देवलोकं अपि न वृणे। न अमरत्वं न च अपि लोकानां ऐश्वर्यं कामये।=लक्ष्मण भी सब सुन कर शोक सहन करने के लिये असमर्थ होकर रामसे बोला मैं धनुर्धर तेरे पीछे वनको जाऊंगा। मेरे साथ तू अरण्यमें संचार करेगा। तेरे विना मैं स्वर्ग को भी वरना नहीं चाहता। अमरत्व तथा लोकोंका ऐश्वर्य भी नहीं चाहता।

४ एवं वनवासाय निश्चितः सौमित्रिः सान्त्वैः बहुभिः रामेण निषिद्धः। परंतु सः पुनः उवाच। अनुज्ञातः अहं भवता पूर्वं एव। किं पुनः इदानीं निवारणं क्रियते?=इस प्रकार वनवासके लिये निश्चय करनेवाले लक्ष्मणका बहुत शांतिके वचनोंसे रामने निवारण किया। परंतु वह फिर बोला। आज्ञा दी है मुझको आपने पहिले ही। क्यों फिर अब निवारण किया जाता है?

५ अनेन सुप्रीतः रामः उवाच=हे सौमित्रे! व्रज, आपृच्छस्व सर्वं सुहृज्जनं। हे लक्ष्मण! राज्ञः जनकस्य महायज्ञे ये दिव्ये धनुषी, अभेद्ये कवचे, अक्षयसायकौ तूणीरौ, द्वौ खड्गौ च, सर्वं तत् आयुधं आदाय क्षिप्रं आगच्छ।=इससे आनंदित हुआ राम बोला–हे लक्ष्मण! जा, और पूछ अपने मित्रजनोंसे। हे लक्ष्मण! राजा जनक के बडे यज्ञमें जो (दो) दिव्य धनुष्य, (दो) अभेद्य कवच, (दो) अक्षय तूणीर, और (दो) तलवारें (रखी हैं) वह सब शस्त्र लेकर शीघ्र आ।

६ वैदेह्या सह ब्राह्मणेभ्यः बहुधनं दत्वा रामलक्ष्मणौ पितरं द्रष्टुं जग्मतुः। तदा रामं सीतां लक्ष्मणं च पदातिं एव दृष्ट्वा शोकोपहतचेतसः जनाः ऊचुः। आकाशगैः अपि भूतैः या सीताद्रष्टुं न शक्या तां एव सीतां अद्य राजमार्गगताः जनाः पश्यन्ति। रामः सूतं उवाच–आख्याहि मां पितुः। सः अपि रामप्रेषितः क्षिप्रं निश्वसन्तं नृपतिं दृष्टवान्। कथितं च तेन अस्मै। अयं अत्र रामः सत्यपराक्रमः ते सुतः द्वारि तिष्ठति। सर्वान् सुहृदः आपृच्छय त्वां इदानीं द्रष्टुं इच्छति। हे जगतीपते! इदानीं तं रामं पश्य।=सीता के साथ ब्राह्मणोंको बहुत धन देकर राम और लक्ष्मण पिताको देखने के लिये गये। तब राम सीता और लक्ष्मण को पैदल चलते देखकर शोकसे व्याकुलचित्त होकर लोग बोले कि आकाशके भूतों–प्राणियोंसे भी जो सीता देखना असंभव थी वही सीता आज मार्गके ऊपरसे चलने वाले लोग भी देखते हैं। रामने सूत से कहा–कह मेरे विषयमें पितासे। उसने भी रामसे प्रेषित होकर शीघ्रही श्वास जोरसे करने वाले राजाको देखा। और उसने उससे कहा। यहां यह सत्यपराक्रमी राम तेरा पुत्र द्वारमें खडा है। सब मित्रोंसे पूछ कर अब तुझे देखने के लिये आया है। हे राजा! उस रामको देख।

पाठ ५

इस पाठमें उकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोंके रूप देखिये–

उकारान्तः स्त्रीलिंगो धेनुशब्दः।

१ धेनुः	धेनू	धेनवः
सं० धेनो	”	”
२ धेनुं	”	धेनूः

३ धेन्वा	धेनुभ्याम्	धेनुभिः
४ धेन्वै, धेनवे	"	धेनुभ्यः
५ धेन्वाः, धेनोः	"	"
६ " "	धेन्वोः	धेनूनाम्
७ धेन्वां, धेनौ	"	धेनुषु

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दोंके रूप होते हैं।

शब्द।

रज्जुः=रस्सी	हनुः=ठोडी
रेणुः=धूलि	तनुः=शरीर
शतद्रुः=नदी	कुः=पृथ्वी

१ रज्वा हस्ती बध्यते=रस्सीसे हाथी बांधा जाता है।
२ रेणुभिः गृहं आच्छिन्नं=धूलिसे घर आच्छादित है।
३ तनूनां रक्षणं कार्यं=शरीरोंकी रक्षा करनी चाहिये।

अब दीर्घ ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्दके रूप देखिये—

ऊकारान्तः स्त्रीलिंगो वधू शब्दः।

१ वधूः	वध्वौ	वध्वः
सं. हे वधु	"	"
२ वधूम्	"	वधूः
३ वध्वा	वधूभ्यां	वधूभिः
४ वध्वै	"	वधूभ्यः

५ वध्वाः	वधूभ्यां	वधूभ्यः
६ ,,	वध्वोः	वधूनाम्
७ वध्वां	,,	वधूषु

इस रीतिसे निम्नलिखित शब्दोंके रूप होते हैं—

शब्द ।

तनूः=शरीर	धनूः=धनुष्य
चमूः=सैन्य	अलाबूः=कद्दू
सरयूः=एक नदी	दिधिषूः=पुनर्विवाहित स्त्री

१ राज्ञः चम्वा अद्य महान् विजयः संपादितः=राजा के सैन्यने आज बडा विजय प्राप्त किया ।

२ सरय्वाः नद्याः जलं पिब=सरयू नदीका जल पी ।

३ दिधीषूं पितुः गृहं नय=पुनर्विवाहित स्त्रीको पिताके घर ले जा।

ऊकारान्तः स्त्रीलिंगः भ्रूशब्दः ।

१	भ्रूः	भ्रुवौ	भ्रुवः
सं.	,,	,,	,,
२	भ्रुवम्	,,	,,
३	भ्रुवा	भ्रूभ्याम्	भ्रूभिः
४	भ्रुवै, भ्रुवे	,,	भ्रूभ्यः
५	भ्रुवाः, भ्रुवः	,,	,,
६	,, ,,	भ्रुवोः	भ्रूणाम्, भ्रुवाम्
७	भ्रुवां, भ्रुवि	,,	भ्रूषु

इस प्रकार निम्नलिखित शब्दोंके रूप बनते है—

शब्द ।

वीरसूः=वीरपुत्र प्रसवनेवाली स्त्री ।

भूः=पृथ्वी

१ वीरसूनां स्त्रीणां आभूषणानि=वीरपुत्र प्रसवनेवाली स्त्रियों के गहने ।

२ तव भ्रुवौ शोभने स्तः=तेरी भौहें उत्तम हैं ।

३ भुवः पतिः राजा इति उच्यते=भूमिका पति राजा कहा जाता है।

४ वीरसूं मातरं नमस्कुरु=वीर प्रसवनेवाली माताको नमन कर।

अब ऋकारान्त शब्दोंके रूप देखिये—

ऋकारान्तः स्त्रीलिंगो मातृशब्दः ।

१ माता	मातरौ	मातरः
सं० मातः	,,	,,
२ मातरं	,,	मातॄः
३ मात्रा	मातृभ्यां	मातृभिः
४ मात्रे	,,	मातृभ्यः
५ मातुः	,,	,,
६ ,,	मात्रोः	मातॄणाम्
७ मातरि	,,	मातृषु

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दोंके रूप बनते हैं—

दुहितृ=पुत्री

ननांदृ=पतिकी बहिन

१ दुहिता मातुः गृहे न वसति=पुत्री माताके घर नहीं रहती ।

२ ननांदुः पतिः अत्र न आगतः=पतिकी बहिनका पति यहां नहीं आया।

३ पृच्छ त्वं स्वां दुहितरम्=पूच्छ तू अपनी पुत्रीको।

४ मातुः माता मातामही इति कथ्यते=माताकी माता मातामही कही जाती है।

५ सा प्रियंवदा मम दुहितुः दुहिता अस्ति=वह प्रियंवदा मेरी पुत्रीकी पुत्री है।

ऋकारान्तः स्त्रीलिंगीः स्वसृशब्दः।

१ स्वसा	स्वसारौ	स्वसारः
सं० हे स्वसः	,,	,,
२ स्वसारं	,,	स्वसॄः

शेषरूप मातृ शब्द के रूपोंके समान ही होते हैं। प्रथमा का द्विवचन और बहुवचन " स्वसृ " शब्द का **स्वसारौ—स्वसारः** ऐसा होता है और मातृ शब्दका **मातरौ—मातरः** ऐसा होता है। इतनी भिन्नता ध्यानमें रखना आवश्यक है।

वाक्य।

१ तव मातुः स्वसा कुत्र गता ?=तेरी माताकी बहिन कहां गई ?

२ मम स्वसारः अद्य एव अत्र आगमिष्यन्ति=मेरी बहिनें आजही यहां आवेंगीं।

३ मम पितुः स्वसा तव मातुः स्वस्रा सह न गमिष्यति=मेरे पिताकी बहिन तेरी माताकी बहिनके साथ नहीं जावेगी।

४ इदं फलं तव मातामह्याः स्वस्रे देहि=यह फल तेरी माताकी बहिनके लिये दे।

पाठ ६

१ आकाश इव निष्कंपः दशरथः गंभीरतया तं सूतं प्रत्यु-वाच। हे सुमंत्र ! मे दारान् अत्र आनय। ये इह मामकाः सन्ति तान् अपि अत्र आनय। सर्वैः परिवृतः एव राघवं द्रष्टुं इच्छामि।=आकाशके समान न कांपनेवाला दशरथ गंभीरतासे उस सूत को बोला। हे सुमंत्र ! मेरी स्त्रियोंको यहां लेआ। जो यहां मेरे संबंधी हैं उनको भी यहां ला। सबसे परिवेष्टित होकर रामको देखना चाहता हूं।

२ तथा राजा आज्ञापितः सूतः राजदारान् रामं लक्ष्मणं मैथिलीं च आदाय अभिमुखः जगाम। कृतांजलिं आयान्तं पुत्रं रामं दृष्ट्वा राजा वेगेन तं अभिदुद्राव। परंतु दुःखार्तः राजा रामं असंप्राप्य एव मूर्च्छितः भूत्वा भुवि पपात। तदा राज-वेश्मनि 'हा राम' इति स्त्रीणां विलापः संजज्ञे। रामलक्ष्मणौ तु सीतया साकं शोकार्तं नृपं परिष्वज्य तं पर्यंके समवेशितवन्तौ।= उस प्रकार राजासे आज्ञा पा कर सूत राजस्त्रियों और रामलक्ष्मण तथा सीताको लेकर सामने गया। हाथ जोडकर आनेवाले पुत्र रामको देखकर राजा वेगसे उसके पास दौडा। परंतु दुःखी राजा रामको न पाकरही मूर्छित होकर भूमिपर गिर गया। तब राजमंदिरमें "हे राम" ऐसा स्त्रियोंका विलाप हुआ। रामलक्ष्मणोंने तो सीताके साथ शोक करनेवाले राजाको आलिंगन देकर उसे पलंगपर रख दिया।

३ अथ रामः लब्धसंज्ञं महीपतिं उवाच=हे महाराज ! त्वां

आपृच्छे । पश्य मा दंडकारण्यं प्रस्थितम् । लक्ष्मणं च अनुजानीहि । मां अन्वेतु सीता अपि वनं । हे राजन् ! शोकं उत्सृज्य नः सर्वान् अनुजानीहि ।=पश्चात् राम जागे हुए राजासे बोला । हे महाराज ! तुझे पूछता हूं । देख मैं दंडकारण्य को जाता हूं । लक्ष्मणको आज्ञा दो । मेरे साथ सीता भी वनको चले । हे राजा ! शोक छोडकर हम सबको आज्ञा दो ।

४ राजा दशरथः उवाच—हे राम ! मां निगृह्य अद्य एव त्वं अयोध्यायां राजा भव । अहं कैकेय्या वरदानेन मोहितः ।=राजा दशरथ बोला—हे राम ! मुझे बांधकर आज ही तू अयोध्यामें राजा हो जाओ । मैं कैकेयीके वर देनेसे मोहित हुआ हूं ।

५ एवं उक्तः रामः पितरं उवाच—भवान् हि पृथिव्याः पतिः । अहं अरण्ये वत्स्यामि । न मे राज्यस्य इच्छा । वने चतुर्दश वर्षाणि विहृत्य पुनः ते पादौ ग्रहीष्यामि ।=इस प्रकार कहा हुआ राम पितासे बोला । आपही पृथ्वीके पालक हैं । मैं वन में रहूंगा । नहीं मेरी राज्यकी इच्छा । वनमें चौदह वर्ष विहार कर फिर तेरे पावोंको ग्रहण करूंगा ।

६ आर्तः राजा रुदन् प्रियं पुत्रं अब्रवीत् । श्रेयसे वृद्धये पुनरागमनाय च अव्यग्रः भूत्वा अकुतोभयं अरिष्टं पंथानं गच्छ । न शक्यते धर्माभिमनसः सत्यात्मनः च ते बुद्धिः सन्निवर्तयितुम् । हे पुत्र ! अद्य तु इदानीं रजनीं न गच्छ । एकाहं तव दर्शनेन तावत् साधु चरामि अहं । वस, मां अद्य मातरं च संपश्यन् शर्वरीम् इमाम् । साधयिष्यसि कल्पे श्वः सर्वकामैः तर्पितः ।=दुःखी

राजा रोता हुआ प्रिय पुत्रसे बोला। कल्याण वृद्धि और वापस आनेके लिये दुखी न होकर भयरहित कष्टरहित मार्ग को जा। नहीं शक्य है धर्माभिमानी सत्यात्मा जैसे तेरी बुद्धि बदलेनेके लिये। हे पुत्र! आज तू अब इस रात्रीको न जा। एक दिन तेरे दर्शन से तो आनंदसे चलावेंगे। रह, मुझे आज और माताको देखता हुआ इस रात्रीको। कल सवेरे सब इच्छाओं को तृप्त कर चले जाओगे।

७ अथ आर्तस्य पितुः भाषणं श्रुत्वा रामः अब्रवीत्। हे पितः! यान् गुणान् अद्य प्राप्स्यामि तान् श्वः मे कः प्रदास्यति? यः वरः त्वया युद्धे कैकेय्यै दत्तः सः निखिल एव इदानीं तस्यै दीयताम्। हे पार्थिव! त्वं सत्यप्रतिज्ञः भव। दीयतां राज्यं भरताय। न मे कांक्षितं राज्यं सुखं वा। ते दुःख अपगच्छतु, बाष्पपरिप्लुतः मा भूः। =पश्चात् दुःखी पिताका भाषण सुन कर राम बोला। हे पिता! जो गुण आज मैं प्राप्त करूंगा वे कल मुझे कौन देगा? जो वर तूने युद्धमें कैकेयीको दिया था वह सब ही अब उसे दे दें। हे राजा! तू सत्यप्रतिज्ञ हो। दे दो राज्य भरत के लिये। नहीं मुझे इच्छा है राज्यकी वा सुखकी। तेरा दुःख दूर हो, आंसुओंसे युक्त न हो।

८ दुःखितः एव राजा रामं आलिंग्य नष्टसंज्ञः भूत्वा भूमौ पपात। कैकेयीं वर्जयित्वा समस्ता देव्यः अपि समेताः तत्र रुरुदुः। तत्र सर्वं हा हा कृतं बभूव। =दुःखी राजा रामको आलिंगन देकर मूर्च्छित होकर भूमिपर गिर पडा। कैकेयी को छोड सब रानियां मिल कर रोने लगीं। वहां सब हाहाकार हुआ।

पाठ ७

अब इस पाठमें ओकारान्त स्त्रीलिंग शब्दोंके रूप देखिये—

ओकारांतः स्त्रीलिंगो द्योशब्दः।

१ द्याः	द्यावौ	द्यावः
सं० हे द्यौः	"	"
२ द्यां	"	द्याः
३ द्यवा	द्योभ्याम्	द्योभिः
४ द्यवे	"	द्योभ्यः
५ द्योः	"	"
६ द्योः	द्यवोः	द्यवाम्
७ द्यवि	"	द्योषु

इस प्रकार "गो" शब्दके भीरूप होते हैं—

वाक्य।

१ द्यवि सूर्यः भ्राजते=द्युलोक में सूर्य चमकता है।

२ भूमिः अधः तथा द्यौः उपरि अस्ति=भूमि नीचे और द्युलोक ऊपर है।

३ प्रतिदिने गवा दुग्धं दीयते=प्रतिदिन गायद्वारा दूध दिया जाता है (अर्थात् गाय दूध देती है)

४ गोभ्यः जलं देहि=गौवोंके लिये जल दे।

५ गवां पतिः गोपतिः कथ्यते=गौवोंके पालक को गोपति कहा जाता है।

औकारान्तः स्त्रीलिंगो नौशब्दः ।

१ नौः	नावौ	नावः
सं०हे,,	,,	,,
२ नावं	,,	,,
३ नावा	नौभ्याम्	नौभिः
४ नावे	,,	नौभ्यः
५ नावः	,,	,,
६ नावः	नावोः	नावाम्
७ नावि	,,	नौषु

वाक्य ।

१ नावा मनुष्यः सिन्धोः पारं गच्छति=नौकासे मनुष्य सिंधु नदीके पार जाता है ।

२ तस्य राज्ञः सैन्यं नौभिः नदीपारं अगच्छत्=उस राजाका सैन्य नौकाओं द्वारा नदीपार गया ।

३ नावां पतिः कुत्र अस्ति इदानीं?=नौकाओंका मालिक कहां है अब ?

४ द्वौ पुरुषौ नौभ्यां अत्र आगतौ=दो पुरुष दो नौकाओंसे यहां आगये ।

चकारान्तः स्त्रीलिंगः ऋच् शब्दः ।

१	ऋक्, ऋग्	ऋचौ	ऋचः
सं०	,, ,,	,,	,,
२	ऋचं	,,	,,

३	ऋचा	ऋग्भ्यां	ऋग्भिः
४	ऋचे	,,	ऋग्भ्यः
५	ऋचः	,,	,,
६	,,	ऋचोः	ऋचाम्
७	ऋचि	,,	ऋक्षु

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दोंके रूप होते हैं—

वाच्=वाणी | रुच्=तेज

वाक्य ।

१ ऋचः अक्षरेषु देवाः निषेदुः=ऋचाओंके अक्षरोंमें देव रहते हैं ।

२ मनुष्यः वाचा वदति=मनुष्य वाणीसे बोलता है ।

३ ऋग्भिः द्विजाः स्तुवन्ति=ऋचाओं द्वारा द्विज स्तुति करते हैं।

४ ऋक्षु सर्वं ज्ञानं विद्यते=ऋचाओंमें सब ज्ञान होता है ।

जकारान्तः स्त्रीलिंगः स्रज् शब्दः ।

१	स्रक्, स्रग्	स्रजौ	स्रजः
सं०	,, ,,	,,	,,
२	स्रजं	,,	,,
३	स्रजा	स्रग्भ्याम्	स्रग्भिः
४	स्रजे	,,	स्रग्भ्यः
५	स्रजः	,,	,,
६	,,	स्रजोः	स्रजाम्
७	स्रजि	,,	स्रक्षु

१ सः स्रग्भिः स्वकीयं कंठं भूषयति=वह मालाओंसे अपने कंठ को भूषित करता है।

२ मनुष्यैः पुष्पैः स्रक् निर्मीयते=मनुष्योंने फूलोंसे माला निर्माण की जाती है।

३ स्रजा तं भूषयति=मालासे उसको भूषित करता है।

तकारान्तः स्त्रीलिंगः सरित् शब्दः ।

१	सरित्, सरिद्,	सरिता	सरितः
सं०	,, ,,	,,	,,
२	सरितम्	,,	,,
३	सरिता	सरिद्भ्याम्	सरिद्भिः
४	सरिते	,,	सरिद्भ्यः
५	सरितः	,,	,,
६	,,	सरितोः	सरिताम्
७	सरिति	,,	सरित्सु

इसी प्रकार निम्न शब्दोंके रूप होते हैं—

विद्युत्=विजली	योषित्=स्त्री
तडित्= ,,	क्षुत्=भूख
वीरुत्=औषधी	समित्=युद्ध

१ समिति शूराः युध्यन्ते=युद्धमें शूर लडते हैं।

२ सरितां पतिः समुद्रः=नदियोंका पति समुद्र है।

३ तडिता वृक्षः भग्नः=बिजलीसे वृक्ष भग्न हुआ।

४ वीरुद्भिः रोगस्य निवारणं भवति=औषधियोंसे रोग का निवारण होता है।

पाठ ८

पूर्व पाठोंमें जो महाभारतके श्लोक और रामायण का गद्य भाग दिया है उसका संधियुक्त संस्कृत अब यहां देते हैं। पाठक इसका उत्तम अभ्यास करें—

(१)

वैशम्पायन उवाच— ततो भूरिदक्षिणः कौन्तयो राजा संप्रस्थितः। अगस्त्याश्रममासाद्य दुर्जयायामुवास ह।

तत्रैव वदतां वरो राजा लोमशं पप्रच्छ । वातापिरगस्त्येन किमर्थमुपशामितः ?

स मानवान्तको दैत्यश्च किंप्रभाव आसीत्? महात्मनोऽगस्त्यस्य मन्युः किमर्थं चोदितः ?

लोमश उवाच—हे कौरवनंदन! इल्वलो नाम दैतयः पुरा मणिमत्यां पुर्यासीत्। तस्य चानुजो वातापिः।

वारंवार पढनेपर यदि कोई कठिनता हुई तो उस कठिनता को दूर करनेके लिये इस पुस्तक का द्वितीय पाठ देखें।

(२)

सीतोवाच—हे राम! सुव्रतां स्वकां नारीं पतिव्रतां मां केन हेतुना वनं नेतुं न रोचयसे? यद्येवं दुःखितां मां नेतुं नेच्छसि तर्हि विषं पास्यामि मरिष्यामि च। हे अनघ राम! अहं मनसाऽपि त्वद्दतेऽन्यं पुरुषं न द्रष्टुमि-

च्छामि । त्वया विनैष निरयः स्यात् । इति मम परां प्रीतिं जानन्मया सहैव वनं गच्छ । विरहशोकं मुहूर्तमपि सहितुं नोत्सहे । किं पुनर्वर्षाणि चतुर्दश ?

राम उवाच—हे देवि ! तव दुःखेन स्वर्गमपि न रोचये । अतो वनाय मामनुगच्छस्व । हे सीते ! आरभस्व वनवासक्षमाः क्रियाः । देहि ब्राह्मणेभ्यो विविधानि रत्नानि । मा चिरय । संत्वरस्व ।

लक्ष्मणोऽपि सर्वं श्रुत्वा शोकं सोढुमसमर्थो राममुवाच—अहं धनुर्धरस्त्वां वनमनुगमिष्यामि । मया समेतोऽरण्यानि विचरिष्यसि । त्वया विनाऽहं देवलोकमपि न वृणे । नामरत्वं न चापि लोकानामैश्वर्यं कामये ।

एवं वनवासाय निश्चितः सौमित्रिः सान्त्वनैर्बहुभी रामेण निषिद्धः । परंतु स पुनरुवाच । अनुज्ञातोऽहं भवता पूर्वमेव । किं पुनरिदानीं निवारणं क्रियते ?

अनेन सुप्रीतो राम उवाच—हे सौमित्रे ! व्रज, आपृच्छस्व सर्वं सुहृज्जनम् । हे लक्ष्मण ! राज्ञो जनकस्य महायज्ञे ये दिव्ये धनुषी, अभेद्ये कवचे, अक्षयसायकौ तूणीरौ, द्वौ खड्गौ च सर्वं तदायुधमादाय क्षिप्रमागच्छ ।

वैदेह्या सह ब्राह्मणेभ्यो बहुधनं दत्वा रामलक्ष्मणौ पितरं द्रष्टुं जग्मतुः । तदा रामं सीतां लक्ष्मणं च पदातिमेव दृष्ट्वा शोकोपहतचेतसो जना ऊचुः । आकाशगैरपि भूतैर्या सीता

द्रष्टुं न शक्या तामेव सीतामद्य राजमार्गगता जनाः पश्यन्ति। रामः सूतमुवाच—आख्याहि मां पितुः। सोऽपि रामप्रेषितः क्षिप्रं निःश्वसन्तं नृपतिं दृष्टवान्। कथितं च तेनाऽस्मै। अयमत्र रामः सत्यपराक्रमस्ते सुतो द्वारि तिष्ठति सर्वान्सुहृद आपृच्छ्य त्वामिदानीं द्रष्टुमिच्छति। हे जगतीपते! इदानीं तं रामं पश्य।

पाठक इस पाठका दो चार वार पठन करें और यदि कोई वाक्य समझमें न आया तो पूर्वपाठमें देखें। वहां ये ही वाक्य पदच्छेदपूर्वक दिये हैं।

आकाश इव निष्कम्पो दशरथो गंभीरतया तं सूतं प्रत्युवाच। हे सुमंत्र! मे दारानत्रानय। य इह मामकाः सन्ति तानप्यत्रानय। सर्वैः परिवृत एव राघवं द्रष्टुमिच्छामि।

तथा राज्ञाज्ञापितः सूतो राजदारान्रामं लक्ष्मणं मैथिलीं चादायाभिमुखो जगाम। कृताञ्जलिमायान्तं पुत्रं रामं दृष्ट्वा राजा वेगेन तमभिदुद्राव। परंतु दुःखार्तो राजा राममसंप्राप्यैव मूर्च्छितो भूत्वा भुवि पपात। तदा राजवेश्मनि हा रामेति स्त्रीणां विलापः संजज्ञे। रामलक्ष्मणौ तु सीतया सार्कं शोकार्तं नृपं परिष्वज्य तं पर्यंके समवेशितवन्तौ।

अथ रामो लब्धसंज्ञं महीपतिमुवाच। हे महाराज! त्वामापृच्छे। पश्य मां दंडकारण्यं प्रस्थितम्। लक्ष्मणं चानुजानीहि। मामन्वेतु सीताऽपि वनम्। हे राजन्! शोकमुत्सृज्य नः सर्वाननुजानीहि।

राजा दशरथ उवाच—हे राम ! मां निगृह्याद्यैव त्वमयोध्यायां राजा भव । अहं कैकेय्या वरदानेन मोहितः ।

एवमुक्तो रामः पितरमुवाच—भवान् हि पृथिव्याः पतिः । अहमरण्ये वत्स्यामि । न मे राज्यस्येच्छा । वने चतुर्दशवर्षाणि विहृत्य पुनस्ते पादौ ग्रहीष्यामि ।

आर्तो राजा रुदन् प्रियं पुत्रमब्रवीत् । श्रेयसे वृद्धये पुनरागमनाय चाव्यग्रो भूत्वाऽकुतोभयमरिष्टं पंथानं गच्छ । न शक्यते धर्माभिमनसः सत्यात्मनश्च ते बुद्धिः सन्निवर्तयितुम् । हे पुत्र ! अद्य त्विदानीं रजनीं न गच्छ । एकाहं तव दर्शनेन तावत्साधु चराम्यहम् । वस, मामद्य मातरं च संपश्यन् शर्वरीमिमाम् । साधयिष्यसि कल्ये श्वः सर्वकामैस्तर्पितः ।

अथार्तस्य पितुर्भाषणं श्रुत्वा रामोऽब्रवीत् । हे पितः ! यान्गुणानद्य प्राप्स्यामि तान्श्वो मे कः प्रदास्यति ? यो वरस्त्वया युद्धे कैकेय्यै दत्तः स निखिल एवेदानीं तस्यै दीयताम् । हे पार्थिव ! त्वं सत्यप्रतिज्ञो भव । दीयतां राज्यं भरताय । न मे कांक्षितं राज्यं सुखं वा । ते दुःखमपगच्छतु, बाष्पपरिप्लुतो मा भूः ।

दुःखित एव राजा राममालिंग्य नष्टसंज्ञो भूत्वा भूमौ पपात । कैकेयीं वर्जयित्वा समस्ता देव्योऽपि समेतास्तत्र रुरुदुः । तत्र सर्वं हाहाकृतं बभूव ।

पाठक अभ्यास करते समय कोई वाक्य समझमें न आया तो पीछे देखें ।

पाठ ९

दकारांतः स्त्रीलिंगः शरद् शब्दः।

१	शरत्, शरद्	शरदौ	शरदः
सं.	” ”	”	”
२	शरदं	”	”
३	शरदा	शरद्भ्यां	शरद्भिः
४	शरदे	”	शरद्भ्यः
५	शरदः	”	”
६	”	शरदोः	शरदाम्
७	शरदि	”	शरत्सु

निम्नलिखित शब्दोंके रूप इसी रीतिसे होते हैं—

आपद्=आपत्ति	संपद्=संपत्ति
विपद्=विपत्ति	संसद्=सभा
समिध=समिधा	परिषद्=”
मृद्=मिट्टि	दृषद्=पत्थर

१ आपदि एव मित्रस्य परीक्षा भवति=आपत्तिमेंही मित्रकी परीक्षा होती है।

२ संसदि सर्वे पंडिता वदंति=सभामें सब पंडित बोलते हैं।

पकारांतः स्त्रीलिंगो नित्यबहुवचन अप् शब्दः ।

१	आपः	४	अद्भ्यः
सं०	”	५	”
२	अ ः	६	अपाम्
३	अद्भिः	७	अप्सु

“आप्” शब्द सदा बहुवचन में ही रहता है। इसके एक तथा द्वि वचनके रूप प्रयोगमें नहीं होते।

१ अद्भिः गात्राणि शुद्ध्यन्ति=पानीसे अंग शुद्ध होते हैं।
२ अपां पतिः समुद्रः=जलका पति समुद्र है।
३ अप्सु अमृतं अस्ति=पानीमें अमृत है।
४ अपां फेनेन किं भवति?=पानीके फेनसे क्या होता है?

रकारान्तः स्त्रीलिंगो द्वार् शब्दः।

१	द्वाः	द्वारौ	द्वारः
सं	”	”	”
२	द्वारं	”	”
३	द्वारा	द्वार्भ्यां	द्वार्भिः
४	द्वारे	”	द्वार्भ्यः
५	द्वारः	”	”
६	द्वारः	द्वारोः	द्वाराम्
७	द्वारि	द्वारोः	द्वाःसु

१ द्वारपालः द्वारि तिष्ठति=द्वारपाल दर्वाजेमें खडा रहता है।
२ द्वारं पिधेहि=दार बंद कर।
३ त्वं केन द्वारा आगतः=? तू किस द्वारसे आया ?
४ द्वाःसु उदकं स्थापय=द्वारों में जल रख।

यहां ध्यानमें रहे कि यह रकारांत स्त्रीलिंगी "द्वार्" शब्द है। अकारान्त नपुंसकलिंगी "द्वारं" शब्द इससे भिन्न है उसके रूप अकारान्त नपुंसकलिंगी "ज्ञानं" शब्दके समान होते हैं (ज्ञान शब्दके रूप अंक ८ में पाठ १० में देखिये)

रकारान्तः स्त्रीलिंगो गिर् शब्दः ।

१	गीः	गिरौ	गिरः
सं०	,,	,,	,,
२	गिरं	,,	,,
३	गिरा	गीर्भ्यां	गीर्भिः
४	गिरे	,,	गीर्भ्यः
५	गिरः	,,	,,
६	,,	गिरोः	गिराम्
७	गिरि	,,	गीर्षु

१ गिरा ईश्वरं स्तुहि=वाणीसे ईश्वरकी स्तुति कर।
२ गीर्भिः मनुष्याः व्यवहरन्ति=वाणियोंसे मनुष्य व्यवहार करते हैं।
३ तव गिरि मधुरता भवतु=तेरी वाणीमें मधुरता रहे।
४ तस्य गिरां माधुर्यं वर्णनीयं अस्ति=उसके वक्तृताओंकी मधुरता वर्णनीय है।

रकारान्तः स्त्रीलिंगः पुर् शब्दः ।

१	पूः	पुरौ	पुरः ।
सं०	,,	,,	,,
२	पुरं	,,	,,
३	पुरा	पूर्भ्याम्	पूर्भिः
४	पुरे	,,	पूर्भ्यः
५	पुरः	,,	,,
६	,,	पुरोः	पुराम्
७	पुरि	,,	पूर्षु

इसी प्रकार " धुर् " शब्दके रूप बनते हैं ।

१ यः पुरि वसति स पुरुषः भवति=जो शहरमें रहता है वह पुरुष होता है ।

२ शत्रूणां पुरां कः विदारकः ?=शत्रुओंके नगरियोंका कौन विदारक है ?

३ तासां पुरां कः राजा अस्ति ?=उन नगरियोंका कौन राजा है ?

४ स्वकीयं पुरं गच्छ=अपने शहरको जा।

५ यदा पुरि तस्य वासः भवति तदा दुंदुभिः शब्दं करोति=जब नगरमें उसका निवास होता है तब ढोल शब्द करता है ।

पाठ १०

इस पाठमें आप निम्नलिखित श्लोकोंका अध्ययन कीजिये—

वैशम्पायन उवाच ।

युधिष्ठिरस्तमासाद्य तपसा दग्धकिल्बिषम् ।
अभ्यवादयत प्रीतः शिरसा नाम कीर्तयन् ॥ १ ॥

म. भारत वन. अ. १५९

अन्वयः—युधिष्ठिरः तं तपसा दग्धकिल्बिषं आसाद्य प्रीतः नाम कीर्तयन् शिरसा अभ्यवादयत ।

संस्कृतटीका—युधिष्ठिरः धर्मराजा तं आर्ष्टिषेणं मुनिं तपसा तपश्चरणेन दग्धकिल्मिषं दग्धपातकं आसाद्य प्राप्य, प्रीतः मनसा संतुष्टः भूत्वा, नाम कीर्तयन् स्वकीय नाम कथयित्वा शिरसा स्वकीयशीर्षेण अभ्यवादयत नमस्कृतवान् ।

अर्थ—युधिष्ठिरने उस तपसे निष्पाप बने हुए आर्ष्टिषेण मुनिको प्राप्त करके संतुष्ट होकर अपना नाम कहके सिरसे प्रणाम किया ।

ततः कृष्णा च भीमश्च यमौ च सुतपस्विनौ ।
शिरोभिः प्राप्य राजर्षिं परिवार्योपतस्थिरे ॥ २ ॥

संस्कृतटीका—ततः तदनंतरं कृष्णा द्रौपदी, भीमः च सुतपस्विनौ उत्तमतपयुक्तौ यमौ नकुलसहदेवौ शिरोभिः स्वकीयैः शीर्षैः राजर्षिं राजश्रेष्ठं आर्ष्टिषेणं प्राप्य नमस्कृत्य तं परिवार्य सर्वतः आवृत्य उपतस्थिरे उपविष्टाः ।

अर्थ—पश्चात् द्रौपदी भीम नकुल और सहदेव ये अपने सिरोंसे उस राजर्षिको प्रणाम करके उसके चारों ओर बैठ गये।

तथैव धौम्यो धर्मज्ञः पांडवानां पुरोहितः।
यथान्यायमुपाक्रान्तस्तमृषिं संशितव्रतम् ॥ ३ ॥

संस्कृतटीका—तथा एव तेन एव प्रकारेण पांडवानां पंडुनंदनानां पुरोहितः उपाध्यायः धर्मज्ञः धर्मशास्त्रज्ञः धौम्यः मुनिः यथान्यायं न्यायं रीतिं न उल्लंघ्य यथा भवति तथा तं संशितव्रतं नियमवन्तं ऋषिं आर्ष्टिषेणं उपाक्रान्तः प्राप्तः।

अर्थ—उसी प्रकार पांडवोंके पुरोहित धौम्य मुनिभी यथायोग्य रीतिसे उस नियमयुक्त ऋषिको प्राप्त हुए।

अन्वजानात्स धर्मज्ञो मुनिर्दिव्येन चक्षुषा।
पांडोः पुत्रान्कुरुश्रेष्ठानास्यतामिति चाब्रवीत् ॥ ४ ॥

अन्वयः=सः धर्मज्ञः मुनिः दिव्येन चक्षुषा पांडोः पुत्रान् कुरुश्रेष्ठान् अन्वजानात्। आस्यतां इति च अब्रवीत्।

संस्कृतटीका—सः धर्मज्ञः धर्मशास्त्रज्ञानयुक्तः मुनिः आर्ष्टिषेणः दिव्येन अलौकिकेन चक्षुषा नेत्रेण। अंतर्ज्ञानेन इत्यर्थः। पांडोः पुत्रान् पांडवान् कुरुश्रेष्ठान् इति अन्वजानात् ज्ञातवान्। तथा च तान् पांडवान् आस्यतां उपविशतां इति च अब्रवीत्।

अर्थ—वह धर्म जाननेवाला मुनि आर्ष्टिषेण दिव्य दृष्टिसे ये पांडुपुत्र कौरवश्रेष्ठ हैं ऐसा जानकर 'बैठ जांय ऐसा' बोले।

कुरूणामृषभं पार्थं पूजयित्वा महातपाः।
सह भ्रातृभिरासीनं पर्यपृच्छदनामयम् ॥ ५ ॥

अन्वयः—महातपाः भ्रातृभिः सह आसीनं कुरूणां ऋषभं पार्थं पूजयित्वा अनामयं पर्यपृच्छत् ।

संस्कृतटीका—महातपाः महता तपःसामर्थ्येन युक्तः आर्ष्टिषेणः ऋषिः भ्रातृभिः भीमादिभिः बंधुभिः सह आसीनं उपविष्टं कुरूणां कौरवाणां ऋषभं श्रेष्ठं पार्थं पृथापुत्रं धर्मराजान पूजयित्वा संपूज्य अनामयं रोगराहित्यं कुशलं पर्यपृच्छत् पृष्टवान् ।

अर्थ—बडे तपवाले उस ऋषिने भाइयों के साथ बैठे हुए कौरवोंमें मुख्य धर्मराजका सत्कार किया और कुशल पूछा ।

नानृते कुरुषे भावं कच्चिद्धर्मे प्रवर्तसे ।
मातापित्रोश्च ते वृत्तिः कच्चित्पार्थ न सीदति ॥ ६ ॥

म. भारत वन. अ. १५९

अन्वयः—हे पार्थ ! अनृते भावं न कुरुषे ? कच्चित् धर्मे प्रवर्तसे ? ते च मातापित्रोः वृत्तिः कच्चित् न सीदति ?

संस्कृतटीका—हे पार्थ ! हे पृथानंदन धर्मराज ! अनृते असत्ये भावं स्वकीयां प्रवृत्तिं न कुरुषे त्वं न करोषि ? तथा च त्वं धर्मे स्वधर्म पालने कच्चित् प्रवर्तसे किम् ? ते च तव मातापित्रोः मातरि पितरि च वृत्तिः वर्तनं कच्चित् न सीदति, मातापित्रोः सेवां करोषि वा न ?

अर्थ—हे धर्मराज ! असत्यकी ओर तो अपनी प्रवृत्ति तुम नहीं करते हो ? धर्ममें तो प्रवृत्ति तुम्हारी है ? माता पिताओंके संबंधमें तुम्हारी वृत्ति तो न्यून नहीं हो रही है ?

पाठ ११

वकारान्तः स्त्रीलिंगो दिव् शब्दः।

१	द्यौः	दिवौ	दिवः
सं०	"	"	"
२	दिवं	"	"
३	दिवा	द्युभ्याम्	द्युभिः
४	दिवे	"	द्युभ्यः
५	दिवः	"	"
६	दिवः	दिवोः	दिवाम्
७	दिवि	"	द्युषु

१ स्वकीयेन शुद्धेन कर्मणा पुरुषः दिवं गच्छति=अपने शुद्ध कर्मसे मनुष्य द्युलोकको जाता है।

२ दिवि देवाः अधिश्रिताः=द्युलोकमें देव रहे हैं।

३ दिवः स्थाने कस्य निवासः ?=द्युलोकके स्थानमें किसका निवास है ?

४ ऊर्ध्वं द्यौः प्रकाशते=ऊपर द्युलोक प्रकाशता है।

पाठक यहां इसी पुस्तकके सप्तम पाठमें ओकारान्त " द्यो " शब्दके रूप देखें और इस शब्दके रूपोंके साथ तुलना करें। इन दोनों शब्दोंका तात्पर्य साधारणतया समान है इस लिये कदाचित् संदेह होना संभव है।

शकारान्तः स्त्रीलिंगो दिश् शब्दः ।

१	दिक्, दिग्	दिशौ	दिशः
सं०	,, ,,	,,	,,
२	दिशं	,,	,,
३	दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः
४	दिशे	,,	दिग्भ्यः
५	दिशः	,,	,,
६	,,	दिशोः	दिशाम्
७	दिशि	,,	दिक्षु

१ पूर्वस्यां दिशि कस्य राज्यं अस्ति ?=पूर्वदिशामें किसका राज्य है ?

२ सर्वेषां दिशां मध्ये व्याप्य कः भवति ?=सब दिशाओंके मध्यमें व्याप कर कौन होता है ?

३ दिग्भ्यः स्वाहा=दिशाओंके लिये स्वाहा ।

पाठक यहां स्मरण रखें की आकारान्त " दिशा " शब्द इससे भिन्न है और उसके रूप " रमा " शब्दके रूपोंके समान होते हैं ।

षकारान्तः स्त्रीलिंगस्त्विष् शब्दः ।

१	त्विट्, त्विड्	त्विषौ	त्विषः
सं०	,, ,,	,,	,,
२	त्विषं	,,	,,

३	त्विषा	त्विड्भ्यां	त्विड्भिः
४	त्विषे	,,	त्विड्भ्यः
५	त्विषः	,,	,,
६	,,	त्विषोः	त्विषाम्
७	त्विषि	,,	त्विट्सु, त्विट्त्सु

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दोंके रूप होते हैं—

प्रावृष्=पर्जन्यका ऋतु	त्विष्=प्रकाश
तृष्=तृषा, प्यास	रुष्=क्रोध

१ प्रावृषि वृष्टिः भवति=पर्जन्यके ऋतुमें वृष्टि होती है।
२ स पुरुषः तृषा पीडितः=वह मनुष्य प्यास से दुःखी है।
३ त्वं रुषा युक्तः न भव=तू क्रोधसे युक्त न हो।
४ सूर्यः स्वकीयया त्विषा युक्तः अस्ति=सूर्य अपने प्रकाशसे युक्त है।

सकारान्तः स्त्रीलिंगो भास् शब्दः।

१	भाः	भासौ	भासः
सं०	,,	,,	,,
२	भासं	,,	,,
३	भासा	भाभ्याम्	भाभिः
४	भासे	,,	भाभ्यः
५	भासः	,,	,,

६	भासः	भासोः	भासाम्
७	भासि	”	भास्सु

१ ईश्वरस्य भासा सर्वं इदं विभाति=ईश्वरके प्रकाशसे सब यह प्रकाशता है ।

२ सूर्यस्य भासि प्राणिनां जीवनसत्वं भवति=सूर्यके प्रकाशमें प्राणियोंके जीवन का सत्व होता है ।

सकारान्तः स्त्रीलिंगो आशिस् शब्दः ।

१	आशीः	आशिषौ	आशिषः
सं०	”	”	”
२	आशिषं	”	”
३	आशिषा	आशीर्भ्याम्	आशीर्भिः
४	आशिषे	”	आशीर्भ्यः
५	आशिषः	”	”
६	”	आशिषोः	आशिषाम्
७	आशिषि	”	आशीःषु

१ योगिनः आशिषा अहं कृतार्थः अस्ति=योगीके आशीर्वाद से मैं कृतार्थ हूं ।

२ तेषां आशीर्भिः युष्माकं कल्याणं भविष्यति=उनके आशीर्वादोंसे तुम्हारा कल्याण होगा ।

हकारांतः स्त्रीलिंग उपानह् शब्दः ।

१	उपानत्, उपानद्	उपानहौ	उपानहः
सं०	” ”	”	”
२	उपानहं	”	”
३	उपानहा	उपानद्भ्यां	उपानाद्भः
४	उपानहे	”	उपानद्भ्यः
५	उपानहः	”	”
६	”	उपानहोः	उपानहाम्
७	उपानहि	”	उपानत्सु

१ हे भृत्य ! मम नूतनां उपानहं अत्र आनय=हे नौकर ! मेरा नया जूता यहां ला ।

२ तथा एतां पुराणं उपानहं तत्र नय=तथा यह पुराणा जूता वहां ले जा ।

३ मम द्वौ अपि उपानहौ आर्द्रौ स्तः=मेरे दोनों जूते गीले हैं।

पाठ १२

इस पाठमें निम्नलिखित श्लोकोंका अध्ययन कीजिये—

कच्चित्ते गुरवः सर्वे वृद्धा वैद्याश्च पूजिताः ।
कच्चिन्न कुरुषे भावं पार्थ पापेषु कर्मसु ॥ ७ ॥

म. भारत वन. अ. १६९

अन्वयः—कच्चित् ते सर्वे गुरवः वृद्धाः वैद्याः च पूजिताः ? हे पार्थ ! पापेषु कर्मसु कच्चित् भावं न कुरुषे ?

अर्थ—तुम सब गुरु वृद्ध वैद्योंकी पूजा तो करते हो ? हे धर्मराज ! पापकर्मोंमें तो तू भाव नहीं करता है ?

सुकृतं प्रतिकर्तुं च कच्चिद्धातुं च दुष्कृतम् ।
यथान्यायं कुरुश्रेष्ठ ! जानासि न विकत्थसे ॥ ८ ॥

अन्वयः— हे कुरुश्रेष्ठ ! सुकृतं प्रतिकर्तुं च दुष्कृतं हातुं च कच्चित् यथान्यायं जानासि न विकत्थसे ?

अर्थ—हे कुरुओंमें श्रेष्ठ ! पुण्य करने और पाप दूर करनेके लिये यथायोग्य रीतिसे तो तू जानता है और (केवल) भाषण तो नहीं करता ?

यथार्हं मानिताः कच्चित्त्वया नंदन्ति साधवः ।
वनेष्वपि वसन्कच्चिद्धर्ममेवानुवर्तसे ॥ ९ ॥

अन्वयः—त्वया यथार्हं मानिताः साधवः कच्चित् नंदन्ति ! वनेषु वसन् अपि धर्मं एव अनुवर्तसे ?

अर्थ—तेरे द्वारा यथा योग्य संमानित हुए साधु आनंदित तो हैं ! वनमें वसता हुआ भी तू धर्मके अनुसार ही बर्ताव तो करता है ?

कच्चिद्ग्राम्यस्त्वदाचारैर्न पार्थ परितप्यते
दानधर्मतपःशौचैरार्जवेन तितिक्षया ॥ १० ॥

अन्वयः—हे पार्थ ! त्वदाचारैः ग्राम्यः कच्चित् न परितप्यते ? दानधर्मतपःशौचैः आर्जवेन तितिक्षया !

अर्थ—हे धर्मराज ! तेरे आचारोंसे धौम्यमुनि तो दुखी नहीं होता ? दान धर्म तप (शौच) शुद्धता (आर्जवं) सरलता और (तितिक्षा) सहनशक्ति आदि तो ठीक हैं !

पितृपैतामहं वृत्तं कच्चित्पार्थाऽनुवर्तसे ?
कच्चिद्राजर्षियातेन पथा गच्छसि पांडव ॥ ११ ॥

अन्वय—हे पार्थ ! पितृपैतामहं वृत्तं कच्चित् अनुवर्तसे ? हे पांडव ! राजर्षियातेन पथा काच्चित् गच्छसि ?

अथ—ह धर्मराज ! पिता और पितामह के बर्ताव के समान आचरण तो करते हो ! हे पांडव ! राजर्षि गये हुए मार्गसे तो तुम जाते हो ?

स्वे स्वे किल कुले जाते पुत्रे नप्तरि वा पुनः ।
पितरः पितृलोकस्थाः शोचंति च हसन्ति च ॥ १२ ॥

अन्वयः—स्वे स्वे कुले पुत्र वा पुनः नप्तरि जाते पितृलोकस्थाः पितरः शोचंति च हसन्ति च किल ।

अर्थ—अपने अपने कुलमें पुत्र अथवा फिर पोता उत्पन्न होनेपर पितृलोकमें रहने वाले पितर शोक करते हैं और कभी हंसते भी हैं ।

किं तस्य दुष्कृतेऽस्माभिः संप्राप्तव्यं भविष्यति ।
किंचाऽस्यसुकृतेऽस्माभिःप्राप्तव्यमिति शोभनम् ।१३॥

अन्वयः—तस्य दुष्कृते अस्माभिः किं संप्राप्तव्यं भविष्यति ? अस्य च सुकृते अस्माभिः शोभनं किं प्राप्तव्यं इति ?

अर्थ—(पितर अपने मनमें कहते हैं कि) इस के पाप करनेपर

हमने क्या प्राप्त करना होगा ? और इसके पुण्य करनेपर हमको उत्तम क्या प्राप्त होगा ?

पिता माता तथैवाऽग्निर्गुरुरात्मा च पंचमः ।
यस्यैते पूजिताः पार्थ तस्य लोकावुभौ जितौ ॥१४॥

अन्वयः—हे पार्थ ! पिता, माता तथा एव अग्निः, गुरुः च पंचमः आत्मा एते यस्य पूजिताः तस्य उभौ लोकौ जितौ ।

अर्थ—हे पृथापुत्र ! पिता, माता, तथा अग्नि, गुरु और पांचवां आत्मा ये जिसके पूजित हुए हैं (अर्थात् जिसने इनकी पूजा की है) उसको दोनों लोक प्राप्त हुए हैं ।

युधिष्ठिर उवाच ।

भगवानार्य माऽऽहैतद्यथावद्धर्मनिश्चयम् ।
यथाशक्ति यथान्यायं क्रियते विधिवन्मया ॥ १५॥

म. भारत वन. अ. १९९.

अन्वयः—हे आर्य ! भगवान् धर्मनिश्चयं यथावत् मा आह, एतत् मया यथाशक्ति यथान्यायं विधिवत् क्रियते ।

अर्थ—हे आर्य ! आपने धर्मका निश्चय जैसा मुझे कहा है, वह मैं यथाशक्ति और न्यायके अनुसार विधिके अनुसार करता हूं ।

पाठक इन श्लोकोंका अच्छीप्रकार अध्ययन करें और संभव हुआ तो श्लोकोंको कंठ करें ।

स्वाध्यायके ग्रंथ ।

[१] यजुर्वेदका स्वाध्याय ।

(१) य. अ. ३० की व्याख्या । नरमेध ।
मनुष्योंकी सच्ची उन्नतिका सच्चा साधन । १)

(२) य. अ. ३२ की व्याख्या । सर्वमेध ।
"एक ईश्वरकी उपासना ।" मू. ॥)

(३) य. अ. ३६ की व्याख्या । शांतिकरण ।
"सच्ची शांतिका सच्चा उपाय ।" मू. ॥)

[२] देवता-परिचय-ग्रंथमाला ।

(१) रुद्र देवताका परिचय । मू. ॥)
(२) ऋग्वेदमें रुद्र देवता । मू. ॥=)
(३) ३३ देवताओंका विचार । मू. ≡)
(४) देवताविचार । मू. ≡)
(५) वैदिक अग्नि विद्या । मू. १॥)

[३] योग-साधन-माला ।

(१) संध्योपासना । मू. १॥)
(२) संध्याका अनुष्ठान । मू. ॥)
(३) वैदिक-प्राण-विद्या । मू. १)
(४) ब्रह्मचर्य । मू. १।)
(५) योगसाधन की तैयारी । मू. १)
(६) योग के आसन । मू. २)
(७) सूर्यभेदन व्यायाम । मू. ।=)

[४] धर्म-शिक्षाके ग्रंथ ।

(१) बालकोंकी धर्मशिक्षा । प्रथमभाग । —)
(२) बालकोंकी धर्मशिक्षा । द्वितीयभाग । =)
(३) वैदिक पाठ माला । प्रथमपुस्तक । ≡)

[५] स्वयंशिक्षकमाला ।

(१) वेदका स्वयंशिक्षक । प्रथमभाग । १॥)
(२) वेदका स्वयंशिक्षक । द्वितीय भाग । १॥)

[६] आगम-निबंध-माला ।

(१) वैदिक राज्य पद्धति । मू. ।-)
(२) मानवी आयुष्य । मू. ।)
(३) वैदिक सभ्यता । मू. ॥।)
(४) वैदिक चिकित्सा-शास्त्र । मू. ।)
(५) वैदिक स्वराज्यकी महिमा । मू. ॥)
(६) वैदिक सर्प-विद्या । मू. ॥)
(७) मृत्युको दूर करनेका उपाय । मू. ॥)
(८) वेदमें चर्खा । मू. ॥)
(९) शिव सङ्कल्पका विजय । मू. ॥।)
(१०) वैदिक धर्मकी विशेषता । मू. ॥)
(११) तर्कसे वेदका अर्थ । मू. ॥)
(१२) वेदमें रोगजंतुशास्त्र । मू. ।≡)
(१३) ब्रह्मचर्यका विघ्न । मू. =)
(१४) वेदमें लोहेके कारखाने । मू. —)
(१५) वेदमें कृषिविद्या । मू. ≡)
(१६) वैदिक जलविद्या । मू. =)
(१७) आत्मशक्ति का विकास । मू. ।-)

मंत्री-स्वाध्याय-मंडल,
औंध, (जि. सातारा).

अंक ११

संस्कृत-पाठ-माला।

(संस्कृत भाषाका अध्ययन करनेका सुगम उपाय।)
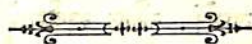
एकादश भाग।

लेखक और प्रकाशक।

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,
स्वाध्याय मंडल, औंध (जि. सातारा.)

प्रथम वार १०००

संवत् १९८२, शके १८४७, सन १९२५

मूल्य ।=) पांच आने।

अंक ११

संस्कृत-पाठ-माला।

[संस्कृत भाषाका अध्ययन करनेका सुगम उपाय।]

एकादश भागः।

लेखक और प्रकाशक।

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर,

स्वाध्यायमंडल, औंध (जि. सातारा.)

प्रथमवार १०००

संवत् १९८२, शक १८४७, सन १९२५.

मूल्य ।-) पांच आने।

सर्वनामोंके रूप ।

इस पुस्तकमें नपुंसकलिंगी हलन्त नामोंके रूप, संख्यावाचक शब्दोंके रूप, तथा **सर्वनामोंके** रूप बनानेका सुगम उपाय बताया है । पाठक यदि इसका उत्तम अध्ययन करेंगे, तो उनको संपूर्ण " **सर्वनामों** " के रूप बनाना सुगमतासे आ सकता है।

इस समय तक पाठकों का परिचय संधिविचार, तथा पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंगी नामों और सर्वनामोंके रूपोंके साथ अच्छी प्रकार हो चुका है। अब अगले पुस्तकमें समासोंका परिचय करा देंगें ।

स्वाध्याय मंडल,
औंध (जि. सातारा)
२३।११।२९

निवेदक,
श्रीपाद दामोदर सातवळेकर।

मुद्रक—रा. रा. **चिंतामण सखाराम देवळे**, मुंबईवैभव प्रेस, सर्व्हंट्स ऑफ इंडिया सोसायटीज् होम, सँढर्स्ट रोड, गिरगांव-मुंबई.

प्रकाशक—**श्रीपाद दामोदर सातवळेकर**, स्वाध्यायमंडल, औंध (जि. सातारा).

ॐ

संस्कृत-पाठ-माला।

एकादश भागः।

पाठ १

अब इस पाठमें व्यंजनांत नपुंसकलिंगी शब्दोंके रूप बताये जाते हैं—

जकारान्तो नपुंसकलिंगः असृज् शब्दः।

१	असृक्, असृग्	असृजी	असृंजि
सं०	", "	"	"
२	", "	"	"
३	अस्ना, असृजा	असृग्भ्याम्, असभ्याम्	असृग्भिः, असभिः
४	अस्ने, असृजे	", "	असृग्भ्यः, असभ्यः
५	अस्नः, असृजः	", "	", "
६	", "	अस्नोः, असृजोः	अस्नां, असृजाम्
७	अस्नि, असनि, असृजि	"	अससु, असृक्षु

"असृक्" शब्दका अर्थ "रक्त, रुधिर, खून" आदि है और इस शब्दके प्रत्येक विभक्तिके रूप विलक्षण होते हैं इस लिये यह शब्द यहां बताया है, अतः पाठक इसका निरीक्षण विशेष प्रकारसे करें।

तस्य हास्नास्युक्षिता । अथर्व. ५।५।८

(तस्य) उसके (ह) निश्चयसे (अस्ना) रक्तसे (असि) तू है (उक्षिता) सिंचित । अर्थात् उसके रक्तसे तू भिगोई गई है ।

अश्वस्यास्नः संपतिता । अथर्व. ५।५।९

(अश्वस्य) घोडेके (अस्नः) रक्तसे (संपतिता) पतित है अर्थात् रक्तसे गिरी है ।

तकारान्तो नपुंसकलिंगो जगत् शब्दः ।

१ जगत्	जगती	जगन्ति
सं० ,,	,,	,,
२ ,,	,,	,,
३ जगता	जगद्भ्यां	जगद्भिः
४ जगते	,,	जगद्भ्यः
५ जगतः	,,	,,
६ ,,	जगतोः	जगताम्
७ जगति	,,	जगत्सु

इसप्रकार तकारान्त नपुंसकलिंग शब्दोंके रूप होते हैं ।

१ **जगतां पतये नमः**=जगतों के स्वामीके लिये नमस्कार ।

२ **जगति सर्वे प्राणिनः उत्पद्यन्ते विलीयन्ते च**=जगतमें सब प्राणि उत्पन्न होते हैं और लय होते हैं ।

३ **जगतः आदिकारणं किं अस्ति ?**=जगत्का आदिकारण क्या है ?

नकारान्तो नपुंसकलिंगो ब्रह्मन् शब्दः ।

१ ब्रह्म	ब्रह्मणी	ब्रह्माणि
सं० हे ब्रह्म, हे ब्रह्मन्	,,	,,

२ ब्रह्म	ब्रह्मणी	ब्रह्माणि
३ ब्रह्मणा	ब्रह्मभ्याम्	ब्रह्मभिः
४ ब्रह्मणे	,,	ब्रह्मभ्यः
५ ब्रह्मणः	,,	,,
६ ,,	ब्रह्मणोः	ब्रह्मणाम्
७ ब्रह्मणि	,,	ब्रह्मसु

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दोंके रूप होते हैं—

वर्मन्=कवच	सद्मन्=घर
शर्मन=नाम	पर्वन=पर्व
कर्मन्=कार्य	भस्मन=भस्म
वेश्मन्=घर	जन्मन=जन्म
वर्त्मन्=मार्ग	लक्ष्मन=चिन्ह

१ त्वया अद्य किं कर्म कृतम् ?=तूने आज क्या काम किया ?

२ जन्मना शूद्रः भवति परंतु संस्कारैः द्विजः उच्यते=जन्मसे शूद्र होता है परंतु संस्कारोंसे द्विज कहलाता है।

३ नरः पुण्येन कर्मणा सद्गतिं प्राप्नोति=मनुष्य पुण्य कर्मसे सद्गति प्राप्त करता है।

नकारान्तो नपुंसकलिंगो अहन् शब्दः।

१ अहः	अह्नी, अहनी	अहानि
सं० ,,	,, ,,	,,
२ ,,	,, ,,	,,
३ अह्ना	अहोभ्याम्	अहोभिः

४ अह्ने	अहोभ्याम्	अहोभ्यः
५ अह्नः	”	”
६ ”	अह्नोः	अह्नाम्
७ अह्नि, अहनि	”	अहःसु

१ अहनि अहनि मनुष्येन शोभनं कर्म एव कर्तव्यम्=प्रतिदिन मनुष्यने उत्तम कर्म करना चाहिये।

२ दशभिः अहोभिः अहं तत्र गमिष्यामि=दस दिनोंसे मैं वहां जाऊंगा।

३ संवत्सरस्य कति अहानि भवन्ति ?=वर्षके कितने दिन होते हैं ?

४ त्रीणि शतानि षष्टिः च अहानि संवत्सरस्य भवन्ति=तीन सौ साठ दिन वर्षके होते हैं।

पाठ २

पूर्व पुस्तक में दिये हुए पंद्रह श्लोकोंका सरल संस्कृत इस पाठमें दिया जाता है। इस पाठमें इसका अच्छी प्रकार अध्ययन पाठक करें—

वैशम्पायन उवाच—युधिष्ठिरस्तं तपसा दग्धकिल्बिषमासाद्य प्रीतो नामसंकीर्तयन् शिरसाऽभ्यवादयत्।

ततः कृष्णा च भीमश्च सुतपस्विनौ यमौ च शिरोभी राजर्षिं प्राप्य परिवार्योपतस्थिरे।

तथैव पांडवानां पुरोहितो धर्मज्ञो धौम्यो यथान्यायं तं संशितव्रतमृषिमुपाक्रान्तः।

सो धर्मज्ञो मुनिर्दिव्येन चक्षुषा पांडोः पुत्रान् कुरुश्रेष्ठानन्वजानात्। आस्यतामिति चाऽब्रवीत्।

महातपा भ्रातृभिः सहासीनं कुरूणामृषभं पार्थं पूजायित्वाऽनामयं पर्यपृच्छत्।

हे पार्थ! अनृते भावं न कुरुषे? कच्चिद्धर्मे प्रवर्तसे? ते च मातापित्रोर्वृत्तिः कच्चिन्न सीदति?

कच्चित्ते सर्वे गुरवो वृद्धा वैद्याश्च पूजिताः? हे पार्थ! पापेषु कर्मसु कच्चिद्भावं न कुरुषे!

हे कुरुश्रेष्ठ! सुकृतं प्रतिकर्तुं दुष्कृतं हातुं च कच्चिद्यथान्यायं जानासि? न विकत्थसे?

त्वया यथार्हं मानिताः साधवः कच्चिन्नंदन्ति? वनेषु वसन्नपि धर्ममेवानुवर्तसे?

हे पार्थ! त्वदाचारैर्धौम्यः कच्चिन्न परितप्यते? दानधर्मतपः–शौचैरार्जवेन तितिक्षया त्वं वर्तसे किम्?

हे पार्थ! पितृपैतामहं वृत्तं कच्चिदनुवर्तसे? हे पांडव! राजर्षियातेन पथा कच्चिद्गच्छसि?

स्वे स्वे कुले पुत्रे वा पुनः नप्तरि जाते पितृलोकस्थाः पितरः शोचन्ति च हसन्ति च किल?

तस्य दुष्कृतेऽस्माभिः किं संप्राप्तव्यं भविष्यति? अस्य च सुकृतेऽस्माभिः शोभनं किं प्राप्तव्यमिति?

हे पार्थ! पिता माता तथैवाऽग्निर्गुरुश्च पंचम आत्मैते यस्य पूजितास्तस्योभौ लोकौ जितौ।

हे आर्य ! भगवान् धर्मनिश्चयं यथावन्माऽऽह । एतन्मया यथाशक्ति यथान्यायं विधिवत्क्रियते ॥

पाठक इस पाठका अभ्यास उत्तम करें । पूर्व पुस्तकमें श्लोक आचुके हैं उनका अर्थ भी आचुका है । यदि वे पाठ हो गये हैं और उपस्थित हैं तो पाठकोंको इसमें कोई कठिनता नहीं होनी चाहिये । इस पाठसे एक प्रकार से पाठकोंकी परीक्षा भी हो जाती है कि पहिले पाठ ठीक हुए हैं वा नहीं । अस्तु अब इस पाठ में कुछ समास बताना है–

१ दग्धकिल्बिषः–दग्धं किल्बिषं येन (जिसने पाप जला दिया है ।)

२ धर्मज्ञः=धर्मं जानाति इति (धर्म जानने वाला)

३ यथान्यायं=न्यायं अनतिक्रम्य (न्यायको न छोडते हुए)

४ संशितव्रतः=संशितं व्रतं यस्य (व्रती)

५ कुरुश्रेष्ठः=कुरुषु श्रेष्ठः (करुओंमें श्रेष्ठ)

६ महातपाः=महत् तपः यस्य (बडे तपवाला)

७ अनामयं=न विद्यते आमयः रोगः यत्र (नीरोगता)

८ अनृतं=न ऋतं (असत्य)

९ मातापितरौ=माता च पिता च (माता और पिता)

१० त्वदाचारः=तव आचारः (तेरा वर्ताव)

११ दानधर्मतपःशौचं=दानं च धर्मः च तपः च शौचं च (दान धर्म तप और शौच)

१२ पितृपैतामहं=पितृपितामहानां इदं (पिता पितामहों के संबंधी)

१३ राजर्षियातः=राजर्षिभिः यातः (राजर्षि जिससे गये)

१४ पितृलोकस्थः=पितृलोके तिष्ठति (पितृलोकमें रहनेवाला)

पाठ ३

नकारान्त नामोंमें " नामन्" (नाम) शब्दके रूप इस प्रकार होते हैं—

नकारान्तो नपुंसकलिंगो नामन् शब्दः ।

१ नाम	नामनी, नाम्नी	नामानि
सं० नामन्, नाम	,, ,,	,,
२ नाम	,, ,,	,,
३ नाम्ना	नामभ्याम्	नामभिः
४ नाम्ने	,,	नामभ्यः
५ नाम्नः	,,	,,
६ ,,	नाम्नोः	नाम्नाम्
७ नाम्नि, नामनि	,,	नामसु

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दोंके रूप होते हैं—

व्योमन्=आकाश
लोमन्=बाल, केश
हेमन्=सुवर्ण

धामन्=स्थान, घर
सामन्=सामवेदका मंत्र

१ अग्नौ हेम्नः शुद्धिः भवति=अग्निमें सोनेकी शुद्धता होती है।
२ व्योम्नि वायुः संचरति=आकाशमें वायु संचार करता है।
३ स पंडितः साम्नः गायने प्रवीणः=वह पंडित सामके गानमें प्रवीण है।
४ हेम्ना सह मौक्तिकं अपि देहि=सोनेके साथ मोती भी दे।

(स)षकारान्तो नपुंसकलिंगो धनुष्(स्) शब्दः।

१ धनुः	धनुषी	धनूंषि
सं० ,,	,,	,,
२ ,,	,,	,,
३ धनुषा	धनुर्भ्याम्	धनुर्भिः
४ धनुषे	,,	धनुर्भ्यः
५ धनुषः	,,	,,
६ ,,	धनुषोः	धनुषाम्
७ धनुषि	,,	धनुःषु

इसी रीतिसे निम्नलिखित शब्दोंके रूप होते हैं—यहां यह स्मरण रहे कि यहां स् अथवा ष् अंत वाले शब्दोंके रूपों की समानता ही है।

यजुस्=यजुर्वेद मंत्र
वपुस्=शरीर
जनुस=जन्म
चक्षुस्=आंख
हविस्=हविर्द्रव्य
आयुस्=आयुष्य

१ चक्षुर्भ्यां प्राणिनः पश्यन्ति=(दो) आंखोंसे प्राणी देखते हैं।
२ हविषा अग्निं वर्धय=हविर्द्रव्यसे अग्निको बढा।

३ आयुषे वर्चसे बलाय च यतस्व=आयु तेज और बलके लिये यत्न कर ।

४ यजुषां विज्ञानेन नरः कर्ममार्गस्य ज्ञाता भवति=यजुर्वेद मंत्रोंके ज्ञानसे मनुष्य कर्ममार्गका ज्ञाता होता है ।

सकारान्तो नपुंसकलिंगः पयस् शब्दः ।

१ पयः	पयसी	पयांसि
सं० ,,	,,	,,
२ ,,	,,	,,
३ पयसा	पयोभ्याम्	पयोभिः
४ पयसे	,,	पयोभ्यः
५ पयसः	,,	,,
६ ,,	पयसोः	पयसाम्
७ पयसि	,,	पयःसु

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दोंके रूप होते हैं—

वासस्=वस्त्र, कपडा
यशस्=यश
ओजस्=शारीरिक बल
मनस्=मन
रक्षस्=राक्षस
यादस्=जलचर प्राणी
छंदस्=वेद

शिरस्=शिर
रहस्=एकान्तवास
अंभस्=जल
चेतस्=चित्त
एनस्=पाप
अंहस्=पाप
सदस्=सभा

१ स वाससा शरीरं आच्छादयति=वह वस्त्रसे शरीर आच्छादित करता है।

२ यशसा तेजसा च वर्धस्व=यश और तेजसे बढ।

३ तव शरीरस्य ओजः इदानीं कुत्र अस्ति ?=तेरे शरीरकी शक्ति अब कहां है ?

४ मनः सत्येन शुध्यति=मन सत्यसे शुद्ध होता है।

५ रक्षसां पतिः रावणः आसीत्=राक्षसोंका राजा रावण था।

६ यादांसि जलजन्तवः भवन्ति=जलके प्राणी जलजन्तु होते हैं।

७ ब्राह्मणेन छंदसां अध्ययनं कर्तव्यम्=ब्राह्मणने वेदोंका अध्ययन करना चाहिये।

८ शिरसा इदानीं यत् धारयसि तत् शुष्कं एव काष्ठं अस्ति=सिरसे अब जिसका तू धारण करता है वह सूखा ही काष्ठ है।

९ तौ रहसि किमपि वदतः=वे (दो) एकान्तमें कुछभी बोलते हैं।

१० अंभसां निधिः समुद्रः भवति=जलका खजाना समुद्र है।

११ चेतसा नरः चिंतनं करोति=चित्तसे मनुष्य चिंतन करता है।

१२ सदसि सर्वे सभासदाः आगताः=सभामें सब सभासद आगये हैं।

पाठ ४

१ दशरथः सबाष्पं अतिनिःश्वस्य पुनः सुमन्त्रं आह—हे सूत ! चतुर्विधबला चमूः क्षिप्रं प्रतिविधीयताम् रामस्य अनुयात्रार्थं इति=दशरथ आंसुओंसे भर कर बडा श्वास छोडकर फिर सुमंत्रसे बोले—हे सूत ! चतुर्विध सेना शीघ्र तैयार कर रामके साथ जानेके लिये।

२ तत् श्रुत्वा रामः उवाच—त्यक्तभोगसंगस्य वने वन्येन जीवतः मे किं कार्यं अनुयात्रेण ? चीराणि एव अनुयन्तु मे । खनित्रं समानयत, गच्छत इति ।=वह सुन कर राम बोले—भोगसंगको छोडकर वनमें उत्पन्न हुए पदार्थोंसे जीवित रहनेवाले मेरे लिये क्या करना है साथ जानेवालों से ? वल्कल ही मेरे साथ जावें । कुदार लाओ, जाओ ।

३ निर्लज्जा कैकेयी स्वयं चीराणि आहृत्य रामं परिधत्स्व इति प्रोवाच । सः अपि, अवक्षिप्य सूक्ष्मवस्त्रं मुनिवस्त्राणि अधारयत् । तथा च लक्ष्मणः । सीता कौशेयवासिनी लज्जिता तस्थौ । ततः एकं चीरं आदाय पाणिना कंठे कृत्वा धर्मज्ञा भर्तारं अपृच्छत् । कथं नु बध्नाति चीरं इति=निर्लज्ज कैकेयी स्वयं वल्कल लाकर रामसे पहनो करके बोली । वह भी, फेंककर बारीक वस्त्र मुनियोंके वस्त्रोंको धारण करने लगा । वैसाही लक्ष्मणने किया । सीता रेशमी वस्त्र पहिनी हुई लज्जित होकर ठहरी । वहांसे एक वल्कल हाथसे उठाकर कंठमें धरके धर्म जाननेवाली अपने पतिसे पूछने लगी कि कैसे भला बांधते हैं वल्कल ?

४ राम स्वयं सीतायाः चीरं बध्नन्तं प्रेक्ष्य अन्तःपुरचराः नार्यः नेत्रजं वारि मुमुचुः । ऊचुश्च रामम् । इयं कल्याणी सीता तापसवत् वने वस्तुं नार्हति । पुत्र ! नः याचनां शृणु । तिष्ठतु अत्रैव सीता । सबाष्पः तु गुरुः वसिष्ठः सीतां निवार्य कैकेयीं अब्रवीत्=राम स्वयं सीताका वल्कल बांध रहा है यह देखकर अंतःपुरनिवासिनी स्त्रियां नेत्रके आंसु बहाने लगीं । बोलीं और

रामको। यह कल्याणी सीता तापसों के समान वनमें रहने योग्य नहीं है। हे पुत्र ! हमारी प्रार्थना सुन। रहे यहांही सीता। आंसुओंसे भरा हुआ गुरु वासिष्ठ सीताका निवारण कर कैकेयीसे बोले।

५ न गन्तव्यं वने देव्या सीतया। सर्वेषां दारसंग्रहवर्तिनां आत्मा हि दाराः। अतः इयं रामस्य आत्मा सीता अत्र मेदिनीं पालयिष्यति। अथ च यदि वैदेही वनं यास्यति वयं अपि तां अनुयास्यामः। ततः त्वं एका दुर्वृत्ता शाधि शून्यां वसुधाम्। न तत् भविता राष्ट्रं यत्र रामः भूपतिः न। वनं एव राष्ट्रं भविता यत्र रामः निवत्स्यति। अतः व्यपनीय चीरं स्नुषायै उत्तमानि आभरणानि वस्त्राणि च देहि।=नहीं जाना चाहिये वनको सीता देवीने। सब कुटुंबियों का आत्मा धर्मपत्नी है। इस लिये यह राम की आत्मा सीता यहां भूमि का पालन करेगी। अब यदि सीता वनको जावेगी तो हम भी उसके पीछे जांयगे। पश्चात् तू अकेली दुराचारिणी शासन करो शून्य पृथ्वीका। नहीं वह होगा राष्ट्र जहां राम राजा नहीं है। वन ही राष्ट्र होगा जहां राम रहेगा। इस लिये वल्कल हटाकर बहू के लिये उत्तम आभूषण और वस्त्र दो।

६ राजा दशरथः कैकेयीं अब्रवीत्—सत्यं वसिष्ठः गुरुः आह। हे अधमे ! वैदेह्याः कः अपराधः त्वया दृष्टः ? एवं ब्रुवन्तं पितरं रामः अब्रवीत्। सिद्धः अस्मि वनवासाय इति=राजा दशरथ कैकेयीसे बोले— सत्य वसिष्ठ गुरुने कहा। हे नीचे ! सीताका कौनसा अपराध तूने देखा ? ऐसा बोलनेपर पितासे रामने कहा—कि वनवासके लिये मैं सिद्ध हूं।

७ मुनिवेषधरं रामं समीक्ष्य सह भार्याभिः राजा विगत-चेतनः बभूव । मुहूर्तात् तु संज्ञां प्रतिलभ्य सुमंत्रं अब्रवीत्–त्वं हयोत्तमैः रथं संयोज्य आयाहि । प्रापय महाभागं रामं इतः जन-पदात् परम् ।= मुनिका वेष धारण किये हुए रामको देख कर स्त्रियोंके साथ राजा मूर्च्छित हुआ । घडीभरके पश्चात् जागृत होकर सुमंत्रसे बोला–तू उत्तम घोडे रथको जोत कर आओ । पहुंचाओ महाभाग्यवान रामको इस राज्यसे बाहर ।

८ राज्ञः वचनं आदाय सुमन्त्रः शीघ्रं रथं योजयित्वा तत्र आगतः । सीतारामलक्ष्मणाः राजानं प्रदक्षिणीचक्रुः । रामः जननीं च अभ्यवादयत् । लक्ष्मणः सुमित्रायाः चरणौ जग्राह ।= राजाका भाषण लेकर सुमंत्र शीघ्र रथ जोडकर वहां आया । सीता, राम और लक्ष्मणने राजाको प्रदक्षिणा की । रामने माताको प्रणाम किया । लक्ष्मण ने सुमित्राके चरण पकडे ।

पाठ ५

अब इस पाठमें संख्यावाचक कुछ शब्दोंके रूप बताते हैं—

रेफान्तः पुल्लिंगः चतुर् शब्दः बहुवचनः ।

१	चत्वारः
सं०	”
२	चतुरः
३	चतुर्भिः
४	चतुर्भ्यः
५	”

६	चतुर्णाम्
७	चतुर्षु

इस शब्दका अर्थ "चार" ऐसा होनेसे इसका एकवचन और द्विवचन नहीं होता। परंतु इसके केवल बहुवचनके ही रूप होते हैं।

१ चत्वारः मनुष्याः तत्र गताः=चार मनुष्य वहां गये।

२ चतुर्भिः अश्वैः एष रथः अत्र आनीयते=चार घोडों द्वारा यह रथ यहां लाया जाता है।

३ चतुर्भ्यः ब्राह्मणेभ्यः धनं देहि=चार ब्राह्मणोंको धन दे।

४ चतुर्णां विप्राणां एष आश्रमः=चार ब्राह्मणोंका यह आश्रम है।

इसी शब्दके स्त्रीलिंगमें रूप देखिये—

रेफान्तश्चतुर् शब्दः।

१	चतस्रः
सं०	चतस्रः
२	,,
३	चतसृभिः
४	चतसृभ्यः
५	,,
६	चतसृणाम्
७	चतसृषु

१ चतसृषु पाठशालासु विद्यार्थिनः पठन्ति=चार पाठशालाओंमें विद्यार्थी पढते हैं।

२ चतस्रः स्त्रियः तत्र अधुना संति=चार स्त्रियांअब वहां हैं।

३ चतसृभिः कुमारिकाभिः पुष्पमाला निर्मीयते=चार कुमारिकाओं द्वारा फुलोंकी माला निर्माण की जाती है।

४ चतसृभ्यः देवताभ्यः अर्घ्यं यच्छ=चार देवताओंके लिये पूजा साहित्य दो।

५ चतसृणां युवतीनां एष गमनमार्गः=चार स्त्रियोंका यह जानेका मार्ग है।

उसी शब्दके नपुंसकलिंगमें रूप देखिये—

रेफान्तो नपुंसकलिंगः चतुर् शब्दो बहुचनः।

१	चत्वारि
२	"
३	चतुर्भिः
४	चतुर्भ्यः
५	"
६	चतुर्णाम्
७	चतुर्षु

१ मम चत्वारि मित्राणि संति=मेरे चार मित्र हैं।

२ चतुर्भिः फलैः त्वं किं करोषि ?=चार फलोंसे तू क्या करता है।

सूचना—' चतुर् ' शब्दके तीनों ' लिंगोंमें ' ये रूप हैं। पुंल्लिग शब्दके साथ पुल्लिंग तथा अन्य लिंगोंके शब्दोंके साथ अन्य

लिंगी रूप वर्तने चाहिये। पाठक इस पाठमें दिये वाक्योंसे इस बातका अनुभव करें और वाक्य बनानेका अभ्यास बढावें।

अब संख्यावाचक 'पञ्चन्' शब्दके रूप देखिये, यह शब्द तीनों लिंगोंमें समान ही है—

नान्तः पुल्लिंगो पञ्चन् शब्दो बहुवचनः।

१	पञ्च
सं०	"
२	"
३	पञ्चभिः
४	पञ्चभ्यः
५	"
६	पञ्चानाम्
७	पञ्चसु

इसी प्रकार " **नवन्** (नौ), **दशन्** (दस) " इन शब्दोंके रूप होते हैं। पुल्लिंग, स्त्रीलिंग, नपुंसकलिंगमें इनके रूप समानही हैं—

१ पंच पुरुषाः अत्र आगताः=पांच पुरुष यहां आये हैं।
२ पंच स्त्रियः तत्र न गताः=पांच स्त्रियां वहां नहीं गईं।
३ पंच फलानि मया भक्षितानि=पाच फल मैंने खाये।
४ नव फलानि स कुत्र नयति=नौ फल वह कहा ले जाता है।

अब " अष्टन् (आठ) " शब्दके रूप देखिये—

नान्त अष्टन् शब्दो बहुवचनः ।

१	अष्टौ, अष्ट
सं०	,, ,,
२	,, ,,
३	अष्टाभिः, अष्टभिः
४	अष्टाभ्यः, अष्टभ्यः
५	,, ,,
६	अष्टानां
७	अष्टासु, अष्टसु

इसके कई विभक्तियोंमें दो दो रूप होते हैं । यह शब्दभी तीनों लिंगोंमें समानही है—

१ **अष्टौ बालकाः अत्र क्रीडन्ति**=आठ बालक यहां खेलते हैं।

२ **अष्टानां कुमारिकाणां अद्य गानं भवति**=आठ लडकियों का आज गायन होता है ।

३ **अष्टसु पुस्तकेषु एषः श्लोकः दृश्यते**=आठ पुस्तकोंमें यह श्लोक दिखाई देता है ।

पाठ ६

१ ततः सीता हृष्टा रथं आरुरोह । भर्तारं अनुगच्छन्त्यै सीतायै वासांसि आभरणानि च संख्याय श्वशुरः दशरथः ददौ। भ्रातृभ्यां रामलक्ष्मणाभ्यां च आयुधानि कवचानि च ददौ । सर्वान् तान् आरूढान् दृष्ट्वा सुमंत्रः वायुवेगेन रथस्य अश्वान्

अचोदयत् ।=पश्चात् आनंदित सीता रथ पर चढी । पतिके साथ जानेवाली सीताको वस्त्र और आभूषण गिनकर श्वशुर दशरथने दिये। भाई रामलक्ष्मणोंके लिये आयुध और कवच भी देदिये । उन सबोंको रथपर चढे देखकर सुमंत्रने वायुवेगसे रथके घोडोंको चलाया ।

२ सबालवृद्धा सा अयोध्या पुरी एतेन परितप्ता । सर्वे जनाः रामं एव अभिदुद्रुवुः । सर्वे जनाः बाष्पपूर्णमुखाः पार्श्वतः पृष्ठतः च तस्थुः सुमंत्रं ऊचुः च । वाजिनां रश्मीन् संयच्छ । शनैः याहि । द्रक्ष्याम रामस्य मुखम् ।=बाल और वृद्धों सहित वह अयोध्या नगरी इससे दुःखी हुई । सब लोग रामके ही पास दौडे । सब जन आंसुओंसे भरे मुखसे युक्त होकर पीछे और आगे खडे रहे और सुमंत्रसे कहने लगे । घोडोंकी लगामें खींचो । आहिस्त जाओ । रामका मुख देखेंगे ।

३ आयसं नूनं हृदयं असंशयं राममातुः यतः रामे वनं याते न भिद्यते । कृतकृत्या हि वैदेही । अनुगता रामं छाया इव पतिं । अहो लक्ष्मण ! सिद्धार्थः त्वं । यत् परिचरिष्यासि भ्रातरं रामं । एवं वदन्तः आगतं बाष्पं सोढुं न शेकुः ।=लोहे का निश्चयसे हृदय संदेहरहित राममाताका है जिससे राम वनमें जाते हुए छिन्नभिन्न हुआ नहीं । कृतकृत्य सीता है जो साथ गई राम के छाया के समान पतिको । अहो लक्ष्मण ! तू कृतकृत्य है । जो सेवा करेगा भाई रामकी । इस प्रकार बोलते हुए आये हुए आंसु सहन न कर सके ।

४ राजा अपि स्त्रीभिः वृतः गृहात् बहिः आगतः अब्रवीत् च द्रक्ष्यामि पुत्रं इति । रामः सूतं वदति याहि इति । जनः वदति तिष्ठ इति । सूतः उभयं कर्तुं न अशकत् । नृपतिः तु रामं गतं दृष्ट्वा दुःखेन भूमौ निपपात ।=राजाभी स्त्रियोंसे घेरा हुआ घरसे बाहर आया और बोला कि पुत्र को देखूंगा । राम सूत से बोलता कि जाओ । लोक बोलते थे कि खडा रह । सारथी दोनों करने में समर्थ नहीं हुआ । राजा राम को गया हुआ देख भमि पर गिर गया ।

५ गते रामे सर्वे रुरुदुः । अमात्याः तु तदा तथा रुदंतीं कौसल्यां दशरथं च तथाविधं दृष्ट्वा ऊचुः । न एनं अनुव्रजेत् दूरं यं पुनः इच्छेत् शीघ्रं आयान्तं इति । निशम्य तद्वचः राजा सभार्यः व्यवास्थितः सुतं ईक्षमाणः । यावत् तु रजोरूपं अदृश्यत नैव तावत् आत्मचक्षुषी संजहार ।=राम जानेके पश्चात् सब रोने लगे । मंत्री तब वैसे रोती हुई कौसल्याको और दशरथ को वैसा देख कर बोले । नहीं उसके पीछे दूर तक जाना जिसके फिर शीघ्र आनेकी इच्छा हो । सुनकर वह भाषण राजा स्त्रियोंके साथ खडा रहा पुत्रको देखता हुआ । जब तक धूलिका रूप दिखाई देता था तबतक अपनी आंखें फिराई नहीं ।

६ यदा तु भूमिपः रामस्य रजः अपि न अपश्यत् तदा विषण्णः भूत्वा धरणीतले पपात । अथ मूर्छितं नराधिपं समुत्थाप्य शोककार्शिता कौसल्या दशरथं सान्त्वयामास । वसुधाधिपः सगद्गदं उवाच—राममातुः कौसल्याया गृहं मां नयन्तु ।

नाऽन्यत्र भविष्यति हृदयस्य आरामः ।=जब राजाको रामके रथकी धूलि भी न दिखाई दी तब खिन्न होकर भूमिपर गिरा। पश्चात् मूर्च्छित राजाको उठाकर दुःखी कौसल्या दशरथकी सांत्वना करने लगी। राजाने गद्गद होकर कहा कि—रामकी माता कौसल्या के घर मुझे ले जांय। नहीं दूसरे स्थानपर होगी हृदयकी शांति।

७ पुत्रद्वयविहीनं स्नुषया च वर्जितं भवनं नष्टचंद्रं इव अंबरं राजा अमन्यत। अर्धरात्रे च एव कौसल्यां अब्रवीत्। न पश्यामि त्वां। रामं एव अद्यापि मे दृष्टिः अनुगता। नव सा निवर्तते इति बहु विललाप ।=दो पुत्रोंसे रहित, बहुसे वर्जित घर चंद्र नष्ट हुए आकाशके समान राजाने माना। आधी रातमें ही कौसल्यासे बोला। नहीं देखता हूं तुझे। रामके ही अभीतक मेरी दृष्टी पीछे गई है। नहीं वह पछि हटती ऐसा बहुत रोने लगा।

८ रामः अपि रात्रिशेषेण महत् अंतरं जगाम। नदीं उत्तीर्य दक्षिणां दिशं अभिमुखः प्रायात्। गोमतीं तीर्त्वा किंचिद् दूरं गत्वा दिव्यां गंगां ददर्श। शृंगवेरपुरं आसाद्य रामः सूतं अब्रवीत्। अयं अत्र महान् इंगुदीवृक्षः इह एव अद्य वसामहे= राम भी शेषरात्रीसे बडी दूर गया। नदी उतर कर दक्षिणदिशाकी ओर मुख कर चला। गोमतीको तैर कर किंचित् दूर जाकर दिव्य गंगाको देखा। शृंगवेर नगरको प्राप्त होकर राम सूतसे बोला। यह यहां बडा इंगुदीवृक्ष है यहांही आज रहेंगे।

पाठ. ७

त्रिषु लिंगेषु समानोऽस्मद् शब्दः ।

१ अहं	आवां		वयम्
२ मां, मा	,,	नौ	अस्मान्, नः
३ मया	आवाभ्याम्		अस्माभिः
४ मह्यं, मे	,,	नौ	अस्मभ्यं, नः
५ मत्	,,		अस्मत्
६ मम, मे	आवयोः	नौ	अस्माकं, नः
७ मयि	,,		अस्मासु

"अस्मत्" शब्दका अर्थ "मैं" है। इस के सातों विभक्तियों के ये रूप हैं। इसका उपयोग पाठक करें—

१ अहं पठामि, आवां पठावः, वयं पठामः=मैं पढता हूं, हम (दोनों) पढते हैं, हम सब पढते हैं।

२ स मां फलं ददाति=वह मुझे फल देता है।

३ स आवां पुष्पाणि न ददाति=वह हम (दोनों) को फूल नहीं देता।

४ अस्मान् जलं देहि=हम (सब) को जल दो।

५ एतत् अस्माकं नगरं=यह हमारा नगर है।

६ अस्माभिः किं इदानीं कर्तव्यम्=हम (सब) ने क्या अब करना चाहिये।

पाठक इसी प्रकार इन रूपोंका उपयोग करें। अब "तू" अर्थ वाले "युष्मत" शब्दके रूप देखिये—

त्रिषु लिंगेषु समानो युष्मद् शब्दः ।

१ त्वं	युवाम्	यूयम्
२ त्वां, त्वा	„ वाम्	युष्मान, वः
३ त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
४ तुभ्यं, ते	युवाभ्यां, वां	युष्मभ्यं, वः
५ त्वत्	„	युष्मत्
६ तव, ते	युवयोः, वां	युष्माकं, वः
७ त्वयि	„	युष्मासु

पाठक इन दोनों शब्दोंके रूपोंमें यह स्मरण रखें कि द्वितीया, चतुर्थी और षष्ठीके रूपोंमें प्रत्येक में दो दो रूप हुए हैं ।

१ **त्वं अत्र आगच्छ, युवां कुत्र गच्छथः, यूयं अत्र न आगछथ**=तू यहां आ, तुम (दो) कहां जाते हैं, तुम (सब) यहां नहीं आते ।

२ **युष्माभिः किमर्थं एतत् पुस्तकं न पठितं ?**=तुम (सब) ने क्यों यह पुस्तक नहीं पढा ?

३ **युष्माकं आश्रमेषु श्वानः न सन्ति**=आपके आश्रमों में कुत्ते नहीं हैं ।

४ **त्वया अत्र न आगन्तव्यम्**=तूने यहां नहीं आना चाहिये।

अब " वह " अर्थ वाले " **तद्** " शब्दके रूप देखिये—

दकारान्तः पुल्लिंगस्तद् शब्दः ।

१ सः	तौ	ते
२ तं	,,	ता
३ तेन	ताभ्यां	तैः
४ तस्मै	,,	तेभ्यः
५ तस्मात्	,,	,,
६ तस्य	तयोः	तेषाम्
७ तस्मिन्	,,	तेषु

१ **सः गच्छति, तौ गच्छतः, ते गच्छन्ति**=वह जाता है, वे (दो) जाते हैं, वे (सब) जाते हैं ।

२ **तैः पुस्तकस्य पठनं कृतम्**=उन्होंने पुस्तकका पढना किया ।

३ **तेषां मनसि इदानीं किं वर्तते ?**=उन (सब) ` मनमें अब क्या है ?

४ **तस्मिन् त्वयि किं वीर्यं अस्ति ?**=उस तुझमें कौनसा पराक्रम है ?

५ **ताभ्यां हि इदं सर्वं व्याप्तम्**=उन दोनोंने यह सब व्याप्त है ।

उसी "तद्" शब्दके स्त्रीलिंगमें रूप निम्नप्रकार होते हैं–

१ सा	ते	ताः
२ तां	,,	,,
३ तया	ताभ्यां	ताभिः
४ तस्यै	,,	ताभ्यः
५ तस्याः	,,	,,

६ तस्याः	तयोः	तासां
७ तस्यां	"	तासु

यहां पाठक तुलना करके देखें कि "तत्" शब्दके पुल्लिंगके रूपोंमें और स्त्रीलिंगके रूपोंमें किस प्रकार भिन्नता है—

१ सा युवती किं करोति=वह स्त्री क्या करती है ?

२ ते कुमारिके किं कुरुतः=वे (दो) कुमारिकाएं क्या करती हैं ?

३ ताः स्त्रियः किं पठन्ति ?=वे (सब) स्त्रियां क्या पढती हैं ?

४ तासु स्त्रीषु धैर्यं भवति=उन (सब) स्त्रियोंमें धैर्य होता है।

५ तासां नारीणां नामानि कथय=उन (सब) स्त्रियों के नाम कह।

६ ताभिः एष मार्गः दर्शितः=उन्होंने यह मार्ग बताया है।

७ तयोः रूपं वर्णनीयं अस्ति=उन (दो) का रूप प्रशंसनीय है।

उसी 'तद्' शब्दके नपुंसकलिंगी रूप निम्नप्रकार होते हैं—

१ तत्	ते	तानि
२ "	"	"
३ तेन	ताभ्याम्	तैः
४ यस्मै	"	तेभ्यः
५ तस्मात्	"	"
६ तस्य	तयोः	तेषाम्
७ तस्मिन्	"	तेषु

पाठक विचारपूर्वक देखेंगे तो उनको पता लग जायगा कि तृतीया

से आगेके रूप पुल्लिंगके रूपोंके समानही हैं। प्रथमा और द्वितीयाके रूपोंमें ही विशेषता है।

१ तत् फलं पक्वं अस्ति=वह फल पका है।

२ ते फले पक्वे स्तः=(दो) फल पके हैं।

३ तानि फलानि पक्वानि सन्ति=वे (सब) फल पके हैं।

४ तस्मात् स्थानात् अहं इदानीं एव अत्र आगतः=उस स्थानसे मैं अबही यहां आया।

पाठ ८

पूर्व दो पाठोंमें जो रामायण की कथा दी है उसीका सरल संधियुक्त संस्कृत इस पाठमें दिया जाता है—

दशरथः सबाष्पमतिनिश्वस्य पुनः सुमंत्रमाह—हे सूत ! चतुर्विधबला चमूः क्षिप्रं प्रतिविधीयतां रामस्यानुयात्रार्थमिति।

तच्छ्रुत्वा राम उवाच—त्यक्तभोगसंगस्य वने वन्येन जीवतो मे किं कार्यमनुयात्रेण ? चीराण्येवानुयन्तु मे। खनित्रं समानयत, गच्छतेति।

निर्लज्जा कैकेयी स्वयं चीराण्याहृत्य रामं परिधत्स्वेति प्रावाच। सोऽप्यवाक्षिप्य सूक्ष्मवस्त्रं मुनिवस्त्राण्यधारयत्। तथा च लक्ष्मणः। सीता कौशेयवासिनी लज्जिता तस्थौ। ततः एकं चीरमादाय पाणिना कंठे कृत्वा धर्मज्ञा भर्तारमपृच्छत्। कथं बध्नामि चीरमिति।

रामं स्वयं सीतायाश्चीरं बध्नन्तं प्रेक्ष्यान्तःपुरचरा नार्यो नेत्रजं वारि मुमुचुः। ऊचुश्च रामम्। इयं कल्याणी सीता तापसवद्वने वस्तुं नार्हति।

पुत्र ! नो याचनां शृणु। तिष्ठत्वत्रैव सीता। सबाष्पस्तु गुरुर्वसिष्ठः सीतां निवार्य कैकेयीमब्रवीत्।

न गंतव्यं वने देव्या सीतया। सर्वेषां दारसंग्रहवर्तिनामात्मा हि दाराः। अत इयं रामस्यात्मा सीतात्र मेदिनीं पालयिष्यति। अथ च यदि वैदेही वनं यास्यति वयमपि तामनुयास्यामः। ततस्त्वमेका दुर्वृत्ता शाधि शून्यां वसुधाम्। न तद्भविता राष्ट्रं यत्र रामो भूपतिर्न। वनमेव राष्ट्रं भविता यत्र रामो निवत्स्यति। अतो व्यपनीय चीरं स्नुषाया उत्तमान्याभरणानि वस्त्राणि च देहि।

राजा दशरथः कैकेयीमब्रवीत्—सत्यं वसिष्ठो गुरुराह। हे अधमे ! वैदेह्याः कोऽपराधस्त्वया दृष्टः ? एवं ब्रुवन्तं पितरं रामोऽब्रवीत्। सिद्धोऽस्मि वनवासायेति।

मुनिवेषधरं रामं समीक्ष्य सह भार्याभी राजा विगतचेतनो बभूव। मुहूर्तात्तु संज्ञां प्रतिलभ्य सुमंत्रमब्रवीत्। त्वं हयोत्तमै रथं योज्यायाहि। प्रापय महाभागं राममितो जनपदात्परम्

राज्ञो वचनमादाय सुमंत्रः शीघ्रं रथं योजयित्वा तत्रागतः। सीतारामलक्ष्मणा राजानं प्रदक्षिणीचक्रुः। रामो जननीं चाभ्यवादयत्। लक्ष्मणः सुमित्रायाश्चरणौ जग्राह।

इस पाठमें यदि कोई कठिनता हो तो पूर्वपाठ में देखिये। वहां येही वाक्य पदच्छेदपूर्वक तथा अर्थ के साथ दिये हैं।

(२)

ततः सीता हृष्टा रथमारुरोह। भर्तारमनुगच्छन्त्यै सीतायै वासांस्याभरणानि च सख्याय श्वशुरो दशरथो ददौ। भ्रातृभ्यां रामलक्ष्मणाभ्यां चायुधानि कवचानि च ददौ। सर्वास्तानारूढान्दृष्ट्वा सुमन्त्रो वायुवेगेन रथस्याश्वानचोदयत्।

सबालवृद्धा साऽयोध्यापुर्येतेन परितप्ता। सर्वे जना राममेवाभिदुद्रुवुः। सर्वे जना बाष्पपूर्णमुखाः पार्श्वतः पृष्ठतश्च तस्थुः सुमंत्रमूचुश्च। वाजिनां रश्मीन्संयच्छ शनैर्याहि। द्रक्ष्याम रामस्य मुखम्।

आयसं नूनं हृदयमसंशयं राममातुर्यतो रामे वनं याते न भिद्यते। कृतकृत्या हि वैदेही। अनुगता रामं छायेव पतिम्। अहो लक्ष्मण ! सिद्धार्थस्त्वम्। यत्परिचरिष्यसि भ्रातरं रामम्। एवं वदन्त आगतं बाष्पं सोढुं न शेकुः।

राजाऽपि स्त्रीभिर्वृतो गृहाद्बहिरागतोऽब्रवीच्च द्रक्ष्यामि पुत्रमिति। रामः सूतं वदति याहीति। जनो वदति तिष्ठेति। सूत उभयं कर्तुं नाऽशकत्। नृपतिस्तु रामं गतं दृष्ट्वा दुःखेन भूमौ निपपात।

गते रामे सर्वे रुरुदुः। अमात्यास्तु तदा तथा रुदन्तीं कौसल्यां दशरथं च तथाविधं दृष्ट्वोचुः। नैनमनुव्रजेद्दूरं यं पुनरिच्छेच्छीघ्रमायान्तामिति। निशम्य तद्वचो राजा सभार्यो व्यव-

स्थितः सुतमीक्षमाणः। यावत्तु रजोरूपमदृश्यत नैव तावदात्मचक्षुषी संजहार।

यदा तु भूमिपो रामस्य रजोऽपि नापश्यत् तदा विषण्णो भूत्वा धरणीतले पपात। अथ मूर्च्छितं नराधिपं समुत्थाप्य शोककर्शिता कौसल्या दशरथं सान्त्वयामास। वसुधाधिपः सगद्गदमुवाच—राममातुः कौसल्याया गृहं मां नयंतु। नान्यत्र भविष्यति हृदयस्यारामः।

पुत्रद्वयविहीनं स्नुषया च वर्जितं भवनं नष्टचंद्रमिवांबरं राजाऽमन्यत। अर्धरात्रे चैव कौसल्यामब्रवीत्। न पश्यामि त्वाम्। राममेवाद्यापि मे दृष्टिरनुगता। नैव सा निवर्तते। इति बहु विललाप।

रामोऽपि रात्रिशेषेण महदन्तरं जगाम। नदीमुत्तीर्य दक्षिणां दिशमभिमुखः प्रायात्। गोमतीं तीर्त्वा किंचिद्दूरं गत्वा दिव्यां गंगां ददर्श। शृंगवरपुरमासाद्य रामः सूतमब्रवीत्। अयमत्र महानिंगुदीवृक्ष इहैवाद्य वसामहे।

पाठक इस पाठका उत्तम अध्ययन करें। इस पाठको वारंवार पढें और संधियुक्त वाक्य वारंवार पढ कर ही समझनेका यत्न करें। प्रयत्न कर भी समझमें न आया तो यह समझिये कि पूर्व पाठ ठीक नहीं हुआ। इसलिये पुनः पूर्व पाठ देखिये।

पाठ ९

"सर्व" शब्दके पुल्लिंगी रूप निम्नप्रकार होते हैं—

१ सर्वः	सर्वौ	सर्वे
२ सव	"	सर्वान्
३ सर्वेण	सर्वाभ्यां	सर्वैः
४ सर्वस्मै, सर्वाय	"	सर्वेभ्यः
५ सर्वस्मात्, सर्वात्	"	"
६ सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
७ सर्वस्मिन्	"	सर्वेषु

१ सर्वे मनुष्याः कथं जीवंति ?=सब मनुष्य कैसे जीते ह । ?
२ सर्वेषां पशूनां मध्य कः श्रेष्ठः ?=सब पशुओंमें कौन श्रेष्ठ ?
३ सर्वेषु पुस्तकेषु का विद्या भवति=सब पुस्तकों में कौनसी विद्या होती है ।

अब "सर्व" शब्दके स्त्रीलिंगी रूप देखिये—

१ सर्वा	सर्वे	सर्वाः
२ सर्वां	"	"
३ सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
४ सर्वस्यै	"	सर्वाभ्यः
५ सर्वस्याः	"	"
६ "	सर्वयोः	सर्वासाम्
७ सर्वस्यां	"	सर्वासु

१ सर्वासु दिक्षु वायुः वाति=सब दिशाओंमें वायु बहता है।

२ सर्वाभिः स्त्रीभिः वस्त्राणि प्रक्षालितानि=सब स्त्रियोंने वस्त्र धोये।

३ सर्वासां नारीणां आभूषणानि कुत्र संति=सब स्त्रियोंके आभूषण कहां हैं।

अब "**सर्व**" शब्दके नपुंसकलिंगी रूप देखिये—

१ सर्वं	**सर्वे**	**सर्वाणि**
२ "	"	"

शेष रूप पुल्लिंगके रूपोंके समान होते हैं—

१ सर्वाणि पुस्तकानि अत्र आनय=सब पुस्तक यहां ला।

२ मह्यं सर्वाणि फलानि देहि=मेरे लिये सब फल दो।

अब " **यद् (जो)** " इस शब्दके पुल्लिंगमें रूप देखिये—

१ यः	**यौ**	**ये**
२ यं	"	**यान्**
३ येन	**याभ्यां**	**यैः**
४ यस्मै	"	**येभ्यः**
५ यस्मात्	"	"
६ यस्य	**ययोः**	**येषाम्**
७ यास्मिन्	"	**येषु**

१ यः पुरुषः तत्र अस्ति स एव तव भ्राता अस्ति= जो पुरुष वहां है वही तेरा भाई है।

२ येषां रत्नानां दर्शनं त्वया कृतं तानि एव एतानि सन्ति=जिन रत्नोंका दर्शन तूने किया था वेही ये रत्न हैं।

३ यस्मात् कोशात् वस्त्रं उद्धृतं तस्मिन् एव पुनः तत् स्थापय=जिस कोशसे वस्त्र उठाया था उसीमें फिर वह रख।

४ येभ्यः ब्राह्मणेभ्यः त्वं द्रव्यं दातुं इच्छसि तेभ्य एव देहि=जिन ब्राह्मणोंको तू धन देना चाहता है उनकोही दे।

उसी "यत्" (जो) शब्द के स्त्रीलिंगमें ये रूप होते हैं—

१ या	ये	याः
२ यां	"	"
३ यया	याभ्यां	याभिः
४ यस्यै	"	याभ्यः
५ यस्याः	"	"
६ "	ययोः	यासां
७ यस्यां	"	यासु

१ यासां राजा वरुणः अस्ति ता एव एताः आपः=जिनका राजा वरुण है वे ही ये जल हैं।

२ यस्यै पुत्रिकायै दुग्धं दीयते सा एव एषा=जिस लडकीके लिये दूध दिया जाता है वही यह है।

उसी "यत्" शब्द के नपुसंकलिंगी रूप ये हैं—

१ यत् यानि ये

२ " " " (शेष रूप पुल्लिग के समान हैं)

१ यानि पुस्तकानि त्वया न पठितानि तानि मया पठितानि=जो पुस्तक तूने नहीं पढे वेही मैंने पढे हैं ।

२ यत् ज्ञानं त्वया संपादितं तत् मह्यं कथय=जो ज्ञान तूने संपादन किया वह मुझे कह ।

तकारान्तः पुल्लिंगो भवत् शब्दः ।

१ भवान्	भवन्तौ	भवन्तः
सं. हे भवन्	,,	,,
२ भवन्तं	,,	भवतः
३ भवता	भवद्भ्यां	भवद्भिः
४ भवते	,,	भवद्भ्यः
५ भवतः	,,	,,
६ ,,	भवतोः	भवताम्
७ भवति	,,	भवत्सु

इसी प्रकार निम्नलिखित शब्दोंके रूप होते हैं–

द्विषत्=शत्रु	पश्यत्=देखनेवाला
पचत्=पकानेवाला	अर्हत्=योग्य
गच्छत्=जानेवाला	तिष्ठत्=ठहरनेवाला

१ भवान् कुत्र गच्छति ?=आप कहां जाते हैं ।

२ भवद्भिः किं कृतं ?=आपने क्या किया ?

३ भवतां किं नामधेयं ?=आपका नाम क्या ?

४ पचद्भ्यः धान्यं देहि=पकानेवालोंको धान्य दो ।

पाठ १०

भीमसेनस्तु तद्वाक्यं श्रुत्वा तस्य महात्मनः ।
प्रत्युवाच हनूमन्तं प्रहृष्टेनान्तरात्मना ॥ १२ ॥

म. भारत वन. अ १५१

अन्वयः— भीमसेनः तु तस्य महात्मनः तत् वाक्यं श्रुत्वा प्रहृष्टेन अंतरात्मना हनूमन्तं प्रत्युवाच ।

अर्थः—भीमसेन तो उस महात्माका वह वाक्य सुनकर आनंदित अंतरात्मासे हनूमानसे बोला ।

कृतमेव त्वया सर्वं मम वानरपुंगव ।
स्वस्ति तेऽस्तु महाबाहो कामये त्वां प्रसीद मे॥१३॥

संस्कृत टीका—हे वानरपुंगव ! हे वानरश्रेष्ठ ! मम सर्वं कार्यं त्वया कृतं एव । हे महाबाहो ! ते स्वस्ति अस्तु । कामये त्वां, मे प्रसीद । प्रसन्नः भव ।

अर्थ—हे वानरोंमें श्रेष्ठ ! मेरा सब कार्य तूने किया ही है । हे बडे बाहुवाले ! तेरा कल्याण हो । चाहता हूं तेरेसे कि मेरे पर प्रसन्न हो जाओ ।

सनाथाः पांडवाः सर्वे त्वया नाथेन वीर्यवन् ।
तवैव तेजसा सर्वान्विजेष्यामो वयं परान् ॥ १४ ॥

अन्वयः—हे वीर्यवन् ! त्वया नाथेन सर्वे पांडवाः सनाथाः । वयं सर्वान् परान् तवैव तेजसा विजेष्यामः ।

अर्थ—हे वीर्ययुक्त ! तुझ नाथसे सब पांडव सनाथ हुए हैं । हम सब शत्रुओंको तेरेही तेजसे जीतेंगे ।

एवमुक्तस्तु हनुमान्भीमसेनमभाषत ।
भ्रातृत्वात्सौहृदाच्चैव करिष्यामि प्रियं तव ॥१५॥

अन्वयः—एवं उक्तः तु हनुमान् भीमसेनं अभाषत । भ्रातृत्वात् सौहृदात् च एव तव प्रियं करिष्यामि ।

अर्थ—इस प्रकार कहा हुआ हनुमान भमिसेनसे बोला । भाई-पनसे और मित्र होनेसे ही तेरा प्रिय कार्य मैं करूंगा ।

चमूं विगाह्य शत्रूणां परशक्तिसमाकुलाम् ।
यदा सिंहरवं वीर करिष्यसि महाबल ॥ १६ ॥

अन्वयः—परशक्तिसमाकुलां शत्रूणां चमूं विगाह्य, हे महाबल वीर ! यदा सिंहरवं करिष्यसि ।

अर्थ—परशक्तिसे व्याकुल शत्रुसैन्यमें घुस कर, हे महाबाहु वीर ! जब तू सिंहनाद करोगे ।

तदाऽहं बृंहयिष्यामि स्वरवेण रवं तव ।
विजयस्य ध्वजस्थश्च नादान्मोक्ष्यामि दारुणान्॥१७॥

अन्वयः—तदा अहं स्वरवेण तव रवं बृंहयिष्यामि। विजयस्य ध्वजस्थः च दारुणान् नादान् मोक्ष्यामि ।

अर्थ—तब मैं अपने शब्द से तेरे शब्दको बढाऊंगा । (विजयस्य) अर्जुन के ध्वजपर रहकर बडे शब्द करूंगा ।

शत्रूणां ये प्राणहराः सुखं येन हनिष्यथ ।
एवमाभाष्य हनूमांस्तदा पांडवनंदनम् ॥ १८ ॥
मार्गमाख्याय भीमाय तत्रैवान्तरधीयत ॥ १९ ॥

म. भारत वन. अ. १५१

अन्वयः—ये (नादाः) शत्रूणां प्राणहराः । येन सुखं हनिष्यथ। हनूमान् तदा पांडवनंदनं एवं आभाष्य, भीमं मार्गं आख्याय, तत्र एव अंतरधीयत ।

अर्थ—जो (शब्द) शत्रुओं के प्राण हरण करने वाले हैं । जिससे तू सुखसे शत्रुओंका हनन करेगा । हनूमान तब पांडव कुमार को ऐसा कहकर, भीम को मार्ग बताकर, वहां ही अंतर्धान हो गये।

अर्जुन उवाच ।

ततोऽहं स्तूयमनास्तु तत्र तत्र महर्षिभिः ।
अपश्यमुदधिं भीममपां पतिमथाऽव्ययम् ॥ १ ॥

म. भा. वन अ. १६९

अन्वयः—ततः अहं ऋषिभिः तत्र तत्र स्तूयमानः तु अपां पतिं अव्ययं भीमं उदधिं अथ अपश्यम् ।

अर्थ—पश्चात् मैं ऋषियों द्वारा सर्वत्र प्रशंसित होकर जलके स्वामी अव्यय भयानक समुद्रको नंतर देखा ।

फेनवत्यः प्रकीर्णाश्च संहताश्च समुत्थिताः ।
ऊर्मयश्चात्र दृश्यन्ते वल्गन्त इव पर्वताः ॥ २ ॥

अन्वयः—फेनवत्यः प्रकीर्णाः च संहताः च समुत्थिताः ऊर्मयः अत्र पर्वताः वल्गन्त इव दृश्यन्ते ।

अर्थ—फेनसे युक्त, एक दूसरेमें मिली हुई, परस्पर टकरानेवाली, बडी उठनेवाली तरंगे वलगना करनेवाले पर्वतोंके समान दिखाई देती हैं।

नावः सहस्रशस्तत्र रत्नपूर्णाः समंततः ।
तिमिंगिलाः कच्छपाश्च तथा तिमितिमिंगिलाः॥३॥

अन्वयः—तत्र समंततः रत्नपूर्णाः सहस्रशः नावः । तथा तिमिंगिलाः कच्छपाः तिमितिमिंगिलाः दृश्यन्ते ।

अर्थ—वहां चारों ओर रत्नोंसे परिपूर्ण सहस्रों नौकाएं थीं, और बडी मछली, कच्छप और मगरमच्छ दीखते हैं ।

पाठक इन श्लोकोंको अच्छी प्रकार पढें और स्वयं समझनेका यत्न करें । अर्थ न देखते हुए ही श्लोकोंका तात्पर्य समझनेका यत्न करें ।

पाठ ११

मकारान्तः पुल्लिंगः किम् शब्दः ।

१ कः	कौ	के
२ कं	,,	कान्
३ केन	काभ्यां	कैः
४ कस्मै	,,	केभ्यः
५ कस्मात्	,,	,,
६ कस्य	कयोः	केषाम्
७ कस्मिन्	,,	केषु

१ तव कस्मिन् अंगे रोगः समुद्भूतः ?=तेरे किस अंगमें रोग हुआ है ?

२ केषां क्षत्रियाणां एतानि शस्त्राणि ?=किन क्षत्रियों के ये शस्त्र हैं ?

३ केषु केषु गृहेषु मनुष्याः वसन्ति ?=किन किन मकानोंमें मनुष्य वसते हैं ?

४ कस्यचित् किमपि न हरणीयं=किसका कुछ भी नहीं हरण करना योग्य है ।

उसी " किम् " शब्दके स्त्रीलिंगी रूप ये हैं—

१ का	के	काः
२ कां	,,	,,
३ कया	काभ्यां	काभिः
४ कस्यै	काभ्यां	काभ्यः
५ कस्याः	,,	,,
६ ,,	कयोः	कासाम्
७ कस्यां	,,	कासु

१ कासु वापीषु जलं न विद्यते ?=किन बावलियोंमें जल नहीं है ?

२ कासां कन्यकानां एष शब्दः ?=किन कन्याओंका वह शब्द है ?

३ काभिः कथाभिः त्वया स्वमतं प्रतिपादितं ?=किन कथाओंसे तूने अपना मत प्रतिपादन किया ?

उसी " किम् " शब्द के नपुंसकलिंगी रूप निम्नप्रकार होते हैं—

१ किम्	के	कानि
२ ,,	,,	,,

शेष रूप पुलिंग के समानही होते हैं—

१ कानि पुस्तकानि त्वया पठितानि=कौनसे पुस्तक तूने पढे ?

२ के फले त्वया भक्षिते=कौनसे (दो) फल तूने खाये ?

३ किं निमित्तं त्वं तत्र न गच्छसि=किस कारण तू वहां नहीं जाता है ?

४ कानि कानि दैवतानि त्वं पूजयसि ?=कौन कौनसे दैवत तू पूजता है ?

मकारान्तः पुल्लिंग इदम् शब्दः ।

(इदं=यह)

१ अयं	इमौ	इमे
२ इमं, एनं	इमौ, एनौ	इमान्, एनान्
३ अनेन, एनेन	आभ्याम्	एभिः
४ अस्मै	,,	एभ्यः
५ अस्मात्	,,	,,
६ अस्य	अनयोः, एनयोः	एषाम्
७ अस्मिन्	,, ,,	एषु

१ अयं पुरुषः अत्र किं करोति=यह पुरुष यहां क्या करता है ?

२ इमौ बालकौ अत्र पठतः=ये (दो) बालक यहां पढते हैं ।

३ अस्मात् नगरात् त्वं किं नयसि ?=इस नगरसे तू क्या लेगा ?

४ एषां शत्रूणां शिरांसि छेदयामि=इन शत्रुओंके सिर छेदता हूं ।

उसी " इदं " (यह) शब्दके स्त्रीलिंगके रूप देखिये—

१ इयम्	इमे	इमाः
२ इमाम्, एनाम्	,, एने	,, एनाः

३ अनया, एनया	आभ्याम्	आभिः
४ अस्यै	,,	आभ्यः
५ अस्याः	,,	,,
६ ,,	अनयो, एनयोः	आसाम्
७ अस्यां	,, ,,	आसु

१ इमाः शिक्षया संपन्नाः स्त्रियः=ये शिक्षासे संपन्न स्त्रिया हैं।

२ आसां विवाहः श्वः भविष्यति=इनका विवाह कल होगा।

३ आसु स्त्रीषु विश्वासः कर्तव्यः=इन स्त्रियोंमें विश्वास करना योग्य है।

४ इयं नारी पतिगृहं गच्छतु=यह स्त्री पतिके घर जावे।

५ अस्यै नूतनं वस्त्रं देहि=इसके लिये नया वस्त्र दे।

६ आभ्यां अन्नं पाचितं=इन (दो स्त्रियोंनें) अन्न पकाया।

उसी इदं शब्दके नपुंसकलिंगी रूप ये हैं—

१ इदं	इमे	इमानि
२ इदं एनं	,, एने	,, एनानि
३ अनेन, एनेन	आभ्याम्	एभिः

शेष विभक्तियोंके रूप पुल्लिंगके समानही होते हैं।

१ इदं स्थानं मया प्राप्तं=यह स्थान मैंने प्राप्त किया।

२ इमानि फलानि त्वं भक्षय=ये फल तू खा।

३ इदं नगरं कस्य राज्ञः ?=यह नगर किस राजाका ?

पाठ १२

सकारान्तः पुल्लिंगो अदस् शब्दः ।

(अदस्=वह)

१ असौ	अमू	अमी
२ अमुं	अमू	अमून्
३ अमुना	अमूभ्यां	अमीभिः
४ अमुष्मै	"	अमीभ्यः
५ अमुष्मात्	"	"
६ अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
७ अमुष्मिन्	"	अमीषु

१ असौ पुरुषः धार्मिकः अस्ति=वह पुरुष धार्मिक है ।
२ अमीषां चित्तानि क्रूराणि सन्ति=उनके चित्त क्रूर हैं ।
३ अमुष्मिन् लोके सुखं भवतु=उस लोकमें सुख होवे ।
४ अमीभ्यः बालकेभ्यः पयः देहि=उन बालकोंके लिये दूध दे ।
५ अमुष्मात् लोकात् त्वं आगतः=उस लोकसे तू आगया ।

उसी " अदस् " शब्द के स्त्रीलिंगी रूप—

१ असौ	अमू	अमूः
२ अमूम्	"	"
३ अमुया	अमूभ्यां	अमूभिः
४ अमुष्यै	"	अमूभ्यः
५ अमुष्याः	"	"
६ "	अमुयोः	अमूषाम्
७ अमुष्याम्	"	अमूषु

पूर्व रूपोंमें और इन रूपोंमें जो भिन्नता है उसका ध्यान पाठक अवश्य रखें ।

१ अमूषां स्त्रीणां एतत् धनं=उन स्त्रियोंका यह धन ।

२ अमुष्याः वापिकायाः एतत् जलं=उस कूएका यह जल ।

३ अमूषु मालासु सुगंधयुक्तानि पुष्पाणि न सन्ति=उन मालाओंमें सुगंधयुक्त फूल नहीं हैं ।

४ अमूः नद्यः शुष्काः संजाताः=वे नदियां सूखीं होगई हैं ।

उसी " अदस् " शब्दके नपुंसकलिंगी रूप ये हैं—

१ अदः	अमू	अमूनि
२ ,,	,,	,,
३ अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः

शेष रूप पुल्लिंगके समान होते हैं ।

१ अमूनि पुष्पाणि अत्र मूषकेन भक्षितानि=वे फूल यहां चूहेने खाये ।

२ अदः तव स्थानं=वह तेरा स्थान ।

दकारान्तः पुल्लिंग एतद् शब्दः ।

(एतत्=यह)

१	एषः	एतौ	एते
२	एतं, एनं	एतौ, एनौ	एतान्, एनान्
३	एतेन, एनेन	एताभ्यां	एतैः
४	एतस्मै	,,	एतेभ्यः
५	एतस्मात्	,,	,,
६	एतस्य	एतयोः, एनयोः	एतेषां

७ एतस्मिन्   एतयोः, एनयोः   एतेषु:

१ एते राजानः युद्धाय गच्छन्ति=ये राजे युद्धके लिये जाते हैं।

२ एतस्मात् स्थानात् त्वं शस्त्राणि नय=इस स्थानसे तू शस्त्र ले जा।

३ एतेभ्यः ग्रामेभ्यः शूराः पुरुषाः एकीभूताः=इन गांवोंसे शूर पुरुष एक होगये।

४ एतेषां पुस्तकानां पृष्ठानि केन कृत्तानि ?=इन पुस्तकोंके पृष्ट किसने काटे ?

उसी "एतद्" शब्द के स्त्रीलिंगीरूप--

१	एषा	एते	एताः
२	एताम्, एनाम्	एते, एने	एताः, एनाः
३	एतया, एनया	एताभ्यां	एताभिः
४	एतस्यै	"	एताभ्यः
५	एतस्याः	"	"
६	"	एतयोः, एनयोः	एतासाम्
७	एतस्यां	"	एतासु

१ एतासु ओषधीषु रसः न विद्यते=इन औषधियोंमें रस नहीं है।

२ एतासां मर्कटीनां नर्तनं अद्य भविष्यति=इन बंदरियों का नाच आज होगा।

३ एताभिः स्त्रीभिः गायनं न कृतं=इन स्त्रियोंने गायन नहीं किया।

उसी "एतत्" शब्दके नपुंसकलिंगी रूप ये हैं—

१ एतत् एते एतानि

२ " " "

शेषरूप पुल्लिंगके समानही होते हैं।

१ **एतानि पात्राणि घृतेन पूरय**=ये बर्तन घीसे पूर्ण करो।

२ **एतत् जलं शुद्धं न वर्तते**=यह जल शुद्ध नहीं है।

३ **एते अंगुलीयके कस्य स्तः**=ये (दो) अंगुठियां किसका हैं?

इसी प्रकार "**सर्वनामों**" के रूप होते हैं। पाठक इनका उपयोग करके वाक्य बना सकते हैं। संस्कृतमें स्थान स्थानपर इनके प्रयोग आते हैं उनको देखतेही स्मरण होना चाहिये कि इस शब्दका इस विभक्तिका यह रूप है।

पाठ १३

सनत्कुमार उवाच।

ब्रह्म क्षत्रेण सहितं क्षत्रं च ब्रह्मणा सह।
संयुक्तौ दहतः शत्रून्वनानीवाऽग्निमारुतौ ॥ २५ ॥

महाभारत वन. अ. १८५

संस्कृत टीका—क्षत्रेण क्षत्रियवर्णेन सहित ब्रह्म सहितः ब्राह्मणवर्णः, तथा च ब्रह्मणा ब्राह्मणवर्णेन सह क्षत्रं क्षत्रिय-वर्णः यदा भवति तदा द्वौ अपि संयुक्तौ शत्रून् दहतः अमि-त्रान् दहन्तौ। यथा अग्निमारुतौ अग्निः च मारुतः च अग्नि-

मारुतौ अग्निवायू वनानि अरण्यानि दहतः तद्वत् ब्राह्मण-क्षत्रियौ मिलित्वा शत्रून् दहतः।

अर्थ—ब्राह्मण क्षत्रियके, साथ और क्षत्रिय ब्राह्मणके साथ, मिल-कर शत्रुओंको जलाते हैं जैसे अग्नि और वायु वनोंको जलाते हैं।

वैशम्पायन उवाच।

धृतराष्ट्राभ्यनुज्ञाताः कृष्णया सह पाडवाः।
रेमिरे खाडवप्रस्थे प्राप्तराज्याः परंतपाः ॥ ५ ॥

म. भा. आदि. अ. २१०

संस्कृत टीका—धृतराष्ट्राभ्यनुज्ञाताः धृतराष्ट्रेण अभ्यनुज्ञाताः राज्ञा धृतराष्ट्रेण आज्ञापिताः पांडवाः पंडुपुत्राः धर्मराजादयः कुंती-पुत्राः कृष्णया द्रौपद्या सह, प्राप्तराज्याः प्राप्तं लब्धं राज्यं यैः ते प्राप्त-राज्याः लब्धराष्ट्राः परंतपाः परं श्रेष्ठं तपः येषां ते पांडवाः खांडवप्रस्थे देशविशेषे रेमिरे हर्षिताः भूत्वा राज्यं चक्रुः।

अर्थ—धृतराष्ट्र से आज्ञा प्राप्त होनेसे राज्य प्राप्त कर द्रौपदीके साथ श्रेष्ठ तप करनेवाले सब पांडव खांडवप्रस्थ में रमने लगे।

प्राप्य राज्यं महातेजाः सत्यसन्धो युधिष्ठिरः।
पालयामास धर्मेण पृथिवीं भ्रातृभिः सह ॥ ९ ॥

संस्कृत टीका—महातेजाः महत् तेजः यस्य सः बृहत्तेजाः सत्यसंधः सत्यप्रतिज्ञः युधिष्ठिरः धर्मराजा भ्रातृभिः भीमार्जुना-दिभिः सह राज्यं प्राप्य धर्मेण धर्मानुकूलेन राज्यशासनेन पृथिवीं भूमिं राज्यं पालयामास पालितवान्।

अर्थ——बडे तेजवाला और सत्य-प्रतिज्ञा करनेवाला धर्मराज भाईयों के साथ राज्य प्राप्त कर धर्मानुकूल पृथ्वीका पालन करने लगा।

जितारयो महाप्राज्ञाः सत्यधर्मपरायणाः।
मुदं परमिकां प्राप्तास्तत्रोषुः पांडुनंदनाः ॥ ७ ॥

संस्कृत टीका——जितारयः जिताः विजिताः पराजिताः अरयः शत्रवः यैः ते जितारयः पराजितशत्रवः महाप्राज्ञाः महाज्ञानिनः सत्यधर्मपरायणाः सत्यश्च असौ धर्मश्च सत्यधर्मः सत्यधर्म-पालने परायणाः पराकाष्ठां गताः पांडुनंदनाः पंडोः पुत्राः परमिकां मुदं प्राप्ताः अतीव हर्षिताः तत्र खांडवप्रस्थे एव ऊषुः निवासं चक्रुः।

अर्थ—शत्रुओंका पराजय करनेवाले बड़े बुद्धिवान तथा सत्य-धर्मके पालन करनेवाले पांडव अति हर्षसे वहां रहने लगे।

कुर्वाणाः पौरकार्याणि सर्वाणि पुरुषर्षभाः।
आसांचक्रुर्महार्हेषु पार्थिवेष्वासनेष च ॥ ८ ॥

संस्कृत टीका—पुरुषर्षभाः पुरुषेषु श्रेष्ठाः पांडवाः सर्वाणि अखिलानि पौरकार्याणि पौराणां नगरनिवासिनां जनानां कार्याणि कर्माणि तेषां हितार्थं करणीयानि कर्माणि कुर्वाणाः कुर्वन्तः ते पांडवाः महार्हेषु श्रेष्ठेषु पार्थिवेषु आसनेषु आसां-चक्रुः उपविष्टाः।

अर्थ—मनुष्योंमें श्रेष्ठ पांडव नागरिकोंके सब कार्य करते हुए बडे मूल्यवान आसनोंपर बैठने लगे।

अथ तेषूपविष्टेषु सर्वेष्वेव महात्मसु ।
नारदस्त्वथ देवर्षिराजगाम यदृच्छया ॥ ९ ॥

संस्कृत टीका—अथ अनंतरं किंचित् कालात् ऊर्ध्वं सर्वेषु तेषु महात्मसु पांडवेषु आसनेषु उपविष्टेषु यदृच्छया अथ देवर्षिः नारदः आजगाम आगतः ।

अर्थ—कुछ समय जानेके पश्चात् वे सब आसनों पर बैठे थे इतनेमें यदृच्छासे देव ऋषि नारद आगये ।

आसनं रुचिरं तस्मै प्रददौ स्वं युधिष्ठिरः ।
देवर्षेरुपविष्टस्य स्वयमर्घ्यं यथाविधि ॥ १० ॥

संस्कृतटीका—तस्मै नारदाय स्वं स्वकीयं रुचिरं सुंदरं आसनं युधिष्ठिरः धर्मराजः प्रददौ । उपविष्टस्य देवर्षेः नारदस्य स्वयं यथाविधि विधिं अनतिक्रम्य यथा भवति तथा अर्घ्यं पूजां च प्रददौ ।

अर्थ—उस नारद के लिये अपना सुंदर आसन युधिष्ठिरने दिया और देवऋषि नारद बैठनेपर स्वयं यथायोग्य विधिके अनुसार उसकी पूजा की ।

पाठक इन श्लोकोंका उत्तम अभ्यास करें । जहांतक हो सके वहां तक अर्थ न देखते हुए ही श्लोकोंका अर्थ समझनेका यत्न करें । थोडा प्रयत्न करनेपर श्लोकोंका अर्थ सुगमतासे समझमें आ सकता है ।

स्वाध्यायके ग्रंथ ।

[१] यजुर्वेदका स्वाध्याय ।

(१) य. अ. ३० की व्याख्या । नरमेध ।
मनुष्योंकी सच्ची उन्नतिका सच्चा साधन । १)

(२) य. अ. ३२ की व्याख्या । सर्वमेध ।
" एक ईश्वरकी उपासना । " मू. ॥)

(३) य. अ. ३६ की व्याख्या । शांतिकरण ।
" सच्ची शांतिका सच्चा उपाय । " मू. ॥)

[२] देवता-परिचय-ग्रंथमाला ।

(१) रुद्र देवताका परिचय । मू. ॥)
(२) ऋग्वेदमें रुद्र देवता । मू. ॥=)
(३) ३३ देवताओंका विचार । मू. ≡)
(४) देवताविचार । मू. ≡)
(५) वैदिक अग्नि विद्या । मू. १॥)

[३] योग-साधन-माला ।

(१) संध्योपासना । मू. १॥)
(२) संध्याका अनुष्ठान । मू. ।)
(३) वैदिक-प्राण-विद्या । मू. १)
(४) ब्रह्मचर्य । मू. १।)
(५) योगसाधन की तैयारी । मू. १)
(६) योग के आसन । मू. २)
(७) सूर्यभेदन व्यायाम । मू. ।=)

[४] धर्म-शिक्षाके ग्रंथ ।

(१) बालकोंकी धर्मशिक्षा । प्रथमभाग ।	-)
(२) बालकोंकी धर्मशिक्षा । द्वितीयभाग ।	=)
(३) वैदिक पाठ माला । प्रथमपुस्तक ।	≡)

[५] स्वयंशिक्षकमाला ।

(१) वेदका स्वयंशिक्षक । प्रथमभाग ।	१॥)
(२) वेदका स्वयंशिक्षक । द्वितीय भाग ।	१॥)

[६] आगम-निबंध-माला ।

(१) वैदिक राज्य पद्धति ।	मू. ।-)
(२) मानवी आयुष्य ।	मू. ।)
(३) वैदिक सभ्यता ।	मू. ॥।)
(४) वैदिक चिकित्सा-शास्त्र ।	मू. ।)
(५) वैदिक स्वराज्यकी महिमा ।	मू. ॥)
(६) वैदिक सर्प-विद्या ।	मू. ॥)
(७) मृत्युको दूर करनेका उपाय ।	मू. ॥)
(८) वेदमें चर्खा ।	मू. ॥)
(९) शिव संकल्पका विजय ।	मू. ॥।)
(१०) वैदिक धर्मकी विशेषता ।	मू. ॥)
(११) तर्कसे वेदका अर्थ ।	मू. ॥)
(१२) वेदमें रोगजंतुशास्त्र ।	मू. ।≡)
(१३) ब्रह्मचर्यका विघ्न ।	मू. =)
(१४) वेदमें लोहेके कारखाने ।	मू. -)
(१५) वेदमें कृषिविद्या ।	मू. ≡)
(१६) वैदिक जलविद्या ।	मू. =)
(१७) आत्मशक्ति का विकास ।	मू. ।-)

मंत्री-स्वाध्याय-मंडल,

औंध, (जि. सातारा).

अंक १२

संस्कृत-पाठ-माला।

(संस्कृत भाषाका अध्ययन करनेका सुगम उपाय)

द्वादश भाग।

लेखक और प्रकाशक.

श्रीपाद दामोदर सातवळेकर

स्वाध्याय मंडल, औंध (जि. सातारा)

प्रथमवार १०००

संवत १९८२, शके १८४७. सन १९२६

मूल्य ।-) पांच आने।

वैदिक धर्म के ग्रंथ।

[१] यजुर्वेद का स्वाध्याय।

(१) नरमेध। मू. १)
(२) एक ईश्वर उपासना। मू. ॥)
(३) शांतिका सच्चा उपाय। मू. ॥)

[२] देवता परिचय ग्रंथमाला।

(१) रुद्र देवताका परिचय। मू. ॥)
(२) ऋग्वेद में रुद्र देवता। मू. ॥=)
(३) ३३ देवताओं का विचार। मू० ≡)
(४) देवता विचार। मू० ≡)
(५) वैदिक अग्निविद्या। मू० १॥)

[३] योग साधन माला।

(१) संध्योपासना। मू० १॥)
(२) संध्याका अनुष्ठान। मू० ॥)
(३) वैदिक प्राण विद्या। मू० १)

अंक १२

संस्कृत-पाठ-माला।

(संस्कृत भाषाका अध्ययन करनेका सुगम उपाय)

द्वादश भाग।

लेखक और प्रकाशक.
श्रीपाद दामोदर सातवळेकर
स्वाध्याय मंडल, औंध (जि. सातारा)

प्रथमवार १०००

संवत् १९८२, शके १८४७, सन १९२६

मूल्य ।-) पांच आने।

समास विचार ।

संस्कृत भाषामें समासोंका प्रयोग स्थान स्थानपर होता है। इस लिये संस्कृत भाषाका अध्ययन करने वाले हरएक जिज्ञासु-को समासोंके साथ परिचय करना आवश्यक है। इस पुस्तक में अत्यंत सुगम रीतिसे सब प्रकारके समासों के साथ पाठकोंका परिचय कराया है। इस लिये इस पुस्तक के अध्ययन से पाठक उत्तम प्रकार से समासों के साथ परिचित हो सकते हैं। आशा है कि इसका उत्तम अध्ययन करके पाठक संस्कृत भाषाके मंदिरमें प्रविष्ट हो जांयगे।

स्वाध्यायमंडल, औंध (जि० सातारा) २९ । ६।२८

लेखक
श्रीपाद दामोदर सातवळेकर

ॐ

संस्कृत पाठ माला ।

द्वादश भाग ।

पाठ १

समास प्रकरणम् ।

संस्कृत भाषामें समासोंका प्रयोग बहुत होता है । इन समासोंके उदाहरण ये हैं:—

समास	मूल वाक्य	अर्थ
१ सूर्यकिरणः	(सूर्यस्य किरणः) =	सूर्यका किरण ।
२ वृक्षमूलम्	(वृक्षस्य मूलम्) =	वृक्षका मूल ।
३ तद्रूपम्	(तस्य रूपम्) =	उसका रूप ।

इन उदाहरणोंमें पाठक ध्यानसे देखेंगे तो उनको पता लग जायगा कि वाक्योंका ही संक्षिप्त रूप समास होता है। " सूर्यस्य किरणः " इतना विस्तृत वाक्य बोलनेकी अपेक्षा "सूर्यकिरण" इतना कहने मात्रसे ही संस्कृत में कार्य होता है । समासों द्वारा यह सुविधा होती है । ये समास छः प्रकारके हैं–

१ द्वंद्व, ३ द्विगु, ३ तत्पुरुष, ४ कर्मधारय, ५ बहुव्रीहि, और ६ अव्ययीभाव ।

❀

ये छः प्रकारके समास हैं। अब इनका विवरण देखिये-

१ द्वंद्व समास ।

संस्कृत भाषामें द्वंद्व समासके दो भेद प्रचलित हैं। १ इतरे-तरयोग - द्वंद्व समास और २ समाहार-द्वंद्व समास ।

इतरेतरयोगका अर्थ यह है कि अन्यान्योंका संयोग। इसके उदाहरण देखिये।

१ रामकृष्णौ —(रामश्च कृष्णश्च)— राम और कृष्ण
२ रामलक्ष्मणभरतशत्रुघ्नाः — (रामश्च लक्ष्मणश्च भरतश्च शत्रुघ्नश्च) — राम लक्ष्मण भरत और शत्रुघ्न ।
३ स्त्रीपुरुषौ — (स्त्रीश्च पुरुषश्च) – स्त्री और पुरुष।
४ हरिहरौ -(हरिश्च हरश्च) — हरि और हर।
५ इंद्रासोमौ — (इंद्रश्च सोमश्च) — इंद्र और सोम।
६ मातापितरौ- (माता च पिता च) - माता और पिता
७ शीतोष्णे — (शीतं च उष्णं च) - शीत और उष्ण।

यहां पाठक देख सकते हैं कि दो पदार्थोंका जहां संबंध होता है वहां द्विवचन और तीन तथा तीनसे आधिक पदार्थों के संबंध के समय बहुवचन बनता है। यह द्वंद्व समास बहुत सुगम है और वारंवार प्रयोगमें आता है। अब इसके वाक्य देखिये-

संस्कृत वाक्य।

तव मातापितरौ कुत्र गतौ? २ मम मातापितरौ गृहं गतौ। ३ रामलक्ष्मणभरतशत्रुघ्नाः इदानीं किं कुर्वन्ति ? ४ रामलक्ष्मणभरतशत्रुघ्नाः इदानीं वनं गच्छन्ति। ५ गृहस्थाश्रमे स्त्रीपुरुषयोः संबंधः भवति।

भाषा वाक्य।

१ तेरी माता पिता कहां गयीं ? २ मेरी माता पिता घरको गयीं। ३ राम लक्ष्मण भरत और शत्रुघ्न अब क्या करते हैं ? ४ राम लक्ष्मण भरत और शत्रुघ्न अब वनको जाते हैं। ५ गृहस्थाश्रममें स्त्रीपुरुषों का संबंध होता है।

द्वंद्व समासके दूसरे प्रकारका नाम "समाहार द्वंद्व" है इसमें संग्रह अथवा इकट्ठा होनेका भाव रहता है और इसका प्रयोग एकवचनमें नपुंसकलिंगमें ही होता है। इसके उदाहरण ये हैं-

१ पाणिपादमुखम्-(पाणी च पादौ च मुखं च) = हाथ, पांव और मुख। इनका समुदाय।
२ गवाश्वं - (गावश्च अश्वाश्च) = गौएं और घोडे।
३ दासीदासं - (दास्यश्च दासाश्च) = दासियां और दास।
४ शंखपटहं - (शंखश्च पटहश्च) = शंख और ढोल।
५ गंगाशोणं - (गंगा च शोणश्च)=गंगानदी और शोणनद।

इस रीतिसे यह समुदाय अर्थमें नपुंसक लिंगमें एक वचनमें समास बनता है।

"च" शब्दका अर्थ "और" है। इस अर्थका संक्षेप इस द्वंद्व समासमें होता है और इस चकारको हटानेसे यह समास बनता है। इतना ही इस विषयमें ध्यानमें धरना चाहिये देखिये—

मूल वाक्य	भाषामें अर्थ	द्वंद्व समास
रामश्च रावणश्च =	(राम और रावण) =	रामरावणौ।
शिवश्च केशवश्च =	(शिव और केशव) =	शिवकेशवौ।
व्याघ्रश्च सिंहश्च =	(व्याघ्र और सिंह) =	व्याघ्रसिंहौ।

पाठक इस प्रकार द्वंद्व समासका प्रयोग कर सकते हैं। क्यों कि यह सबसे सुगम समास है। समझनेके लिये और करनेके लिये भी इसमें सुगमता है। तथा और देखियेः—

बालश्च वृद्धश्च = बालवृद्धौ।

कोकिलश्च मयूरश्च = कोकिलमयूरौ।

व्याघ्रश्च वराहश्च महिषश्च - व्याघ्रवराहमहिषाः।

कूपश्च तडागश्च = कूपतडागौ।

वटश्च आम्रश्च = वटाम्रौ।

वटश्च आम्रश्च पिप्पलश्च = वटाम्रपिप्पलौ।

ब्राह्मणश्च क्षत्रियश्च = ब्राह्मणक्षत्रियौ।

पाठ २

द्विगु – समास ।

जिस समासमें संख्यावाचक शब्द प्रथम स्थानमें होता है प्रायः उसका नाम द्विगु समास है । इस समासका साधारण लक्षण यही है, इस लिये यह समास पहचानना अति सुगम है और इसका बनाना भी सुगम है ।

इस समासके दो भेद हैं – १ एकवद्भावी द्विगुसमास और २ अनेकवद्भावी द्विगु समास ।

एकवद्भावी द्विगुसमास ।

१ त्रिशृंगं =(त्रयाणां शृंगाणां समाहारः)=तीन सींगोंका समूह।
२ पंचगवं =(पंचानां गवां समाहारः)=पांच गौओंका समूह।
३ पंचमूली=(पंचानां मूलानां समाहारः)=पांच मूलोंका समूह।
४ सप्तफली=(सप्तानां फलानां समाहारः)=सात फलोंका समूह।
५ अष्टाध्यायी=(अष्टानां अध्यायानां समाहारः) – आठ अध्यायों का समूह ।

अनेकवद्भावी द्विगुसमास ।

१ सप्तर्षयः = (सप्त च ते ऋषयश्च) = सात ऋषि ।
२ चतुर्दिशाः = (चतस्रः च ता दिशः) = चार दिशाएं ।
३ त्रिलोकाः = (त्रयः च ते लोकाः) = तीन लोक ।

इस प्रकारके ये द्विगु समास हैं और ये अत्यंत सुगम हैं । जिनके प्रारंभमें संख्यावाचक शब्द है उनको द्विगु समास

समझना और उसको पूर्वोक्त प्रकार खोलना चाहिये।

वाचनपाठः।

१ अभियाय च तं इंगुदीवृक्षं सभार्यः सलक्ष्मणः रामः रथात् अवातरत्। तत्र गुहः नाम निषादराजः तस्य सखा आसीत्। सः अपि रामं आगतं श्रुत्वा अमात्यैः वृद्धैः च परिवृतः तत्र रामं उपगतः। चीरवस्त्रधारी रामः सायंसंध्यां तत्र उपास्य लक्ष्मणेन आनीतं केवलं जलं एव भोजनार्थं आददे। वृक्षं आश्रित्य तत्रैव लक्ष्मणः तस्थौ। धनुर्धरः गुहः अपि सूतेन सह तत्रैव स्थितः। प्रभातायां शर्वर्यां रामः उवाच-"तराम जाह्नवीं" इति। रामलक्ष्मणौ सीतया सह गंगां जग्मतुः। तं प्राञ्जलिः सूतः धर्मज्ञं रामं उवाच- "किं अहं इदानीं करवाणि" इति। रामः तं प्रत्युवाच "राजानं अभिवाद्य ब्रूयाः। न अहं न च लक्ष्मणः अनुशोचति वनवासम्। चतुर्दशवर्षेषु निवृत्तेषु नः सर्वान् पुनरागतान् द्रक्ष्यसे" इति।

जाकर उस इंगुदी वृक्षके पास पत्नीके साथ तथा लक्ष्मण के साथ राम रथसे उतर गया। वहां गुह नामक निषादोंका राजा उसका मित्र था। वह भी राम आया सुन कर मंत्रियों और वृद्धोंसे घेरा हुआ वहां रामके पास गया। वल्कल धारी रामने सायंसंध्या की वहां उपासना करके लक्ष्मणने लाया

हुआ केवल जलही भोजनके लिये लिया। वृक्ष का आश्रय करके वहां ही लक्ष्मण खडा रहा। धनुर्धारी गुह भी सूत के साथ वहां ही रहा। प्रभात काल होते ही राम बोला कि "पार होंगे गंगाके"। राम लक्ष्मण सीताके साथ वहां गंगाके पास गये। हाथ जोड सूत धर्म जानने वाले राम से बोला कि "क्या मैं अब करूं" रामने उसे उत्तर दिया-राजाको प्रणाम करके बोल कि न मैं और न लक्ष्मण वनवास का शोक करते हैं। चौदह वर्ष व्यतीत होनेपर हम सब को पुनः आये देखोगे॥

२ "हे सुमंत्र! राजानं मातरं कैकेयीं अन्याश्च देवीः पुनः पुनरुक्त्वा, अथ कौसल्यां सीताया मम लक्ष्मणस्य च वचनात् आरोग्यं पादाभिवंदनं च ब्रूहि। कथय च। नाभि भविष्यति त्वां दुःखं अस्मत्संतापजम्। भरतश्च अपि वक्तव्यः यथा राजनि वर्तसे तथा सर्वासु मातृषु अविशेषतः वर्तेथाः।" एवं सूतं पुनः पुनः सांत्वयित्वा पश्चात् गुहं वचनं अब्रवीत्— "हे गुह! इदानीं सजने वने मे वासः न योग्यः। अतः आनय न्यग्रोधक्षीरं। इति। गुहः च राजपुत्राय तत् क्षिप्रं क्षीरं उपाहरत्। रामः अपि तेन जटाः अकरोत्। नदीतीरे स्थितां नावं दृष्ट्वा तत्र पूर्वं सीतां आरोप्य ततः स्वयं सलक्ष्मणः आरुरोह। ततः सा शुभा नौका शीघ्रं सलिलं अत्यगात्। अन्यं तीरं संप्राप्य

ते सर्वे नावं हित्वा प्रातिष्ठन्त । रामः तदा लक्ष्मणं आह– सौमित्रे ! त्वं अग्रतः गच्छ, सीता त्वां अनु गच्छतु । अहं सीतां अनुपालयन् पृष्ठतः गच्छामि। अस्माभिः अन्योऽन्यस्य रक्षा कर्तव्या । वनवासस्य दुःखं वैदेही अद्य वेत्स्यति ।

हे सुमंत्र ! राजासे, मातासे, कैकेयीसे, तथा अन्य देवियोंसे पुनः पुनः पूछकर और कौसल्याको सीताके मेरे तथा लक्ष्मण के वचनसे कुशल पूछकर चरणवंदन कह । और कह । नहीं अधिक होगा तुझे दुःख हमारे कारण । भरतसे भी कह कि जैसा राजाके साथ बर्ताव करता है वैसा ही विशेषता छोडकर सब माताओंसे बर्ताव कर । इस प्रकार सूतको पुनः पुनः शांत कर पश्चात् गुहसे भाषण बोला--हे गुह ! अब मनुष्योंसे युक्त वन में रहना मेरे लिये योग्य नहीं । मनुष्य रहित वनमें ही वास अवश्य करना है । इस लिये बडका दूध लाओ । गुहने राजपुत्र के लिये शीघ्रही (बडका) दूध ला दिया । रामने भी उससे जटाएं कीं । नदी तीरपर ठहरी नांव देखकर वहां पहले सीताको चढाकर पश्चात् स्वयं लक्ष्मणके साथ चढ लिया। पश्चात् वह उत्तम नौका शीघ्रही जलमें जाने लगी। दूसरे पारको प्राप्त हो कर वे सब नौका को छोडकर चलने लगे। राम तब लक्ष्मण से बोला-हे लक्ष्मण! तू आगे जा, सीता तेरे पीछे जावे । मैं सीताका पीछे से

पालन करता हुआ पीछे से चलूंगा। हमने एक दूसरेकी रक्षा करनी है। वनवास का दुःख सीता आज जानेगी।

३ रामः तां रात्रीं भरद्वाजाश्रमे सुखं अवसत। प्रातः उत्थाय महर्षिं अभिवाद्य तौ अग्रे जग्मतुः। महर्षिश्च तेषां स्वस्त्ययनं चकार। तान् राज्ञः औरसान् पुत्रान् प्रस्थितान् प्रेक्ष्य चित्रकूटस्य रम्यं पंथानं आदिश्य, महर्षिः न्यवर्तत्। कालिंदीं नदीं आसाद्य सद्यः नितीर्षवः चिंतां आपेदिरे। ततः तौ रामलक्ष्मणौ काष्ठसंघाटं सुमहाप्लवं चक्रतुः। लक्ष्मणः सीतायाः सुखं आसनं चकार। तत्र रामः लज्जमानां तां सीतां प्लवं प्रथमं अभ्यारोपयत्। पश्चात् स्वयं लक्ष्मणेन सह आरुह्य, प्लवं उत्सृज्य, अग्रे अगच्छत्।

राम उस रात्रीके समय भरद्वाजके आश्रम में सुख से रहा। प्रातः उठकर महर्षिको प्रणाम कर वे (दो) आगे चलने लगे। महर्षिने भी उनका (स्वस्त्ययन) शुभ गमन होनेकी प्रार्थना की। उन राजाके औरस पुत्रोंको जाते देख, चित्रकूट का रमणीय मार्ग बता कर महर्षि लौट आये। कालिंदी नदी को प्राप्त हो तत्काल तैरने की इच्छा करनेवाले चिंताको प्राप्त हुए। पश्चात् वे राम लक्ष्मण लकडीयोंको जोड बडा बेडा करने लगे। लक्ष्मणने सीता के लिये सुखकारक आसन बनाया। वहां रामने लज्जा करनेवाली उस सीताको पहले चढाया।

पश्चात् स्वयं लक्ष्मण के साथ चढकर, बेडा छोड, आगे चले।

समास।

१ सभार्यः– भार्यया सहितः। २ सलक्ष्मणः– लक्ष्मणेन सहितः। ३ निषादराजः– निषादानां राजा। ४ चीरवस्त्रधारी– चीरं च वस्त्रं च चीरवस्त्रे, चीरवस्त्रे धारयति इति चीरवस्त्रधारी। ५ धनुर्धरः– धनुः धारयति इति। ६ रामलक्ष्मणौ–रामश्च लक्ष्मणश्च। ७ वनवासः– वने वासः। ८ चतुर्दशवर्षाणि –चतुर्दश च तानि वर्षाणि च। ९ पादाभिवंदनं– पादयोः अभिवंदनम्। १० अस्मत्संतापजं– अस्माकं संतापः अस्मत्संतापः, अस्मत्संतापात् जातम्। ११ सजनं--जनेन सहितं। १२ निर्जनं– निर्गतः जनः यस्मात्। १३ राजपुत्रः– राज्ञः पुत्रः। १४ नदीतीरं— नद्याः तीरं। १५ भरद्वाजाश्रमः— भरद्वाजस्य आश्रमः।

द्वंद्वसमास = रामलक्ष्मणौ, चीरवस्त्रे।
द्विगु ,, = चतुर्दशवर्षाणि।

इसी रीतिसे निम्न समासोंको खोलनेका यत्न कीजिये –

१ सपुत्रः। समित्रः। सवस्त्रः। सनेत्रः। सजलः।
२ मनुष्यराजः। पशुपतिः। वनचरराजः। नक्षत्रेशः।
३ शस्त्रधारी। अग्निधारी। वस्त्रधारी। कुशधारी।
४ गृहवासः। जलनिवासः। कूपवासः। वृक्षनिवासः।

पाठ ३

तत्पुरुष समास ।

तत्पुरुष समासके आठ प्रकार हैं । १ प्रथमातत्पुरुष । २ द्वितीयातत्पुरुष । ३ तृतीयातत्पुरुष । ४ चतुर्थीतत्पुरुष । ५ पंचमीतत्पुरुष । ६ षष्ठीतत्पुरुष । ७ सप्तमीतत्पुरुष । ८ नञ्तत्पुरुष ।

इनके उदाहरण देखिये—

१ प्रथमातत्पुरुषः ।

१ मध्याह्नः —(मध्यः अह्नः)— मध्य दिन ।
२ मध्यरात्रः —(मध्यः रात्रेः) – मध्य रात्री ।
३ प्राप्तजीविकः--(प्राप्तः जीविकां) –जीविकाको प्राप्त ।

२ द्वितीयातत्पुरुष ।

१ ग्रामगतः— (ग्रामं गतः) ग्रामको गया हुआ ।
२ सुखप्राप्तः —(सुखं प्राप्तः)–सुखको प्राप्त ।
३ दुःखातीत —(दुःखं अतीतः) दुःख से परे ।

३ तृतीयातत्पुरुषः ।

१ मातृसदृशः– (मात्रा सदृशः)-- माताके सदृश ।
२ पितृसमः -- (पित्रा समः)--पिताके समान ।
३ गुडसंमिश्रितः--(गुडेन संमिश्रितः)गुडसे मिश्रित ।
४ शस्त्राच्छिन्नः– (शस्त्रेण छिन्नः) शस्त्रसे छिन्नभिन्न ।

४ चतुर्थीतत्पुरुषः ।

१ यूपदारु – (यूपाय दारु) – यूपके लिये लकडी ।
२ मुद्रिकासुवर्ण–(मुद्रिकायै सुवर्ण)–अंगुठीके लिये सुवर्ण ।
३ भूतबलिः – (भूतेभ्यः बलिः) – प्राणियोंके लिये अन्न।

५ पंचमीतत्पुरुषः ।

१ सिंहभयं — (सिंहात् भयं) — सिंहसे डर ।
२ स्वर्गभ्रष्टः— (स्वर्गात् भ्रष्टः) — स्वर्गसे भ्रष्ट ।
३ दुःखमुक्तः-- (दुःखात् मुक्तः) — दुःखसे मुक्त ।

६ षष्ठीतत्पुरुषः ।

१ राजपुरुषः — (राज्ञः पुरुषः) – राजाका पुरुष ।
२ वृक्षमूलं – (वृक्षस्य मूलं) – वृक्षका मूल ।
३ पृथिवीपतिः— (पृथिव्याः पतिः) – पृथ्वीका स्वामी ।
४ धर्मग्रंथः – (धर्मस्य ग्रंथः) — धर्मका ग्रंथ ।
५ देवपूजकः — (देवस्य पूजकः) – देवका पूजक ।

७ सप्तमीतत्पुरुषः ।

१ व्यवहारधूर्तः – (व्यवहारे धूर्तः) – व्यवहारमें धूर्त ।
२ विद्याप्रवीणः – (विद्यायां प्रवीणः) – विद्यामें प्रवीण ।
३ कलानिपुणः – (कलासु निपुणः) – कलाओंमें निपुण ।
४ वाक्पटुः — (वाचि पटुः) — भाषणमें प्रवीण ।

८ नञ्तत्पुरुषः ।

१ अब्राह्मणः – (न ब्राह्मणः) – ब्राह्मणसे भिन्न ।

२ अविद्वान् – (न विद्वान्) – विद्वानसे अन्य ।

३ अशक्तः – (न शक्तः) – समर्थ नहीं ऐसा ।

पाठक इतने तत्पुरुष समासों के रूप देख कर जान सकते हैं कि प्रथमा द्वितीया आदि विभक्तियोंके प्रत्यय समास खोलनेके समय लग जानेके कारण ही उक्त समासों को प्रथमा तत्पुरुष, द्वितीया तत्पुरुष आदि नाम प्राप्त हुए हैं।

नञ्तत्पुरुषके समय नकारका अर्थ बताने वाला अकार समासके प्रारंभमें लगता है।

इतनी बातें ध्यानमें धरनेसे पाठक तत्पुरुष समासको पहचान सकते हैं। अब थोडा पाठ पढिये—

वाचनपाठः ।

रामः सीतां अब्रवीत् -वैदेहि ! सर्वान् नगान् पुष्पितान् पश्य । नरैः अनुपसेवितान् फलपुष्पैः च अवनतान् बिल्वान भल्लातकान् पश्य। नूनं अत्र वयं शक्ष्याम आजीवितुम्। एष कोकिलः कूजति। शिखी तं प्रतिकूजति । पश्य इमं रम्यं चित्रकूटं यस्य काननेषु रंस्यामहे । इति । रम्यं चित्रकूटं आसाद्य तत्र वाल्मीकं अभिवाद्य उपविविशुः ।महर्षिः तान् पूज-

यामास। ततः रामः लक्ष्मणं अब्रवीत,लक्ष्मण ! रुचिरं आवसथं कुरुष्व इति। लक्ष्मणः अपि पर्णशालां चक्रे। रामः स्नात्वा देवयजनं अकरोत्। विवेश च पर्णशालां। रम्यं चित्रकूटं, माल्यवतीं नदीं च आसाद्य राघवः ननन्द। पुरविप्रवासस्य दुःखं जहौ च।

राम सीतासे बोला—हे सीते! सब पर्वत पुष्पयुक्त हुए देख। मनुष्योंद्वारा असेवित होनेसे फलों और फूलोंसे नमे हुए बिल्व और भिलावे देख। निश्चय से यहां हम आजीविका के लिये समर्थ होंगे। यह कोकिल शब्द करता है। मोर उसे जबाब देता है। देख इस रमणीय चित्रकूट को जिसके जंगलोंमें (हम) रममाण होंगे। ऐसा। रमणीय चित्रकूट को प्राप्त होकर वहां वाल्मीकि ऋषिको प्रणाम कर (वे)बैठ गये। महर्षिने उनकी पूजा की। तब राम लक्ष्मण से बोला, हे लक्ष्मण ! उत्तम घर बना। लक्ष्मणने भी पर्णशाला बनाई रामने स्नान कर देवोंका यज्ञ किया। और प्रवेश किया पर्णशालामें ! रमणीय चित्रकूट और माल्यवती नदी को प्राप्त होकर राम आनंदित हुआ। और नगर से बाहर होने का दुःख दूर फेंक दिया।

समास।

१ अनुपसेवितः– न उपसेवितः। २ फलपुष्पे– फलं च पुष्पं च।

पाठ ४

अथ सुमंत्रः दुर्मना भूत्वा, निरानंदां अयोध्यां प्रययौ। आभिधावन्तः सहस्रशः नराःसुमंत्रं अभ्यद्रवन् पृच्छन्तः च"क्व राम "इति। सीतारामलक्ष्मणाः गंगापारं गताः इति विज्ञाय च "हा राम, हा राम" इति विचुक्रुशुः। स वातायनगतानां स्त्रीणां च परिदेवनां शुश्राव। राजवेश्म प्रविश्य आतुरं राजानं अपश्यत्। यथोक्तं रामवचनं राजानं प्रणिपत्य प्रत्यवेदयत्। राजा तु तत् श्रुत्वा मूर्च्छितः भूत्वा भूमौ न्यपतत्। सर्वं अंतःपुरं तदा आविद्धम्। रामे वनं प्रव्राजिते अथ षष्ठीं रजनीं अर्धरात्रे राजा पुनः पूर्वं कृतं दुष्कृतं अस्मरत्। कौसल्यां च अब्रवीत्। देवि! यदा त्वं अनूढा अभवः अहं च युवराजः। तदा प्रावृट् समयः प्राप्तः। अतिसुखे तस्मिन् काले सरयूं नदीं अहं अन्वगाम्। यद् अहं रात्रौ निपाने अभ्यागतं महिषं गजं मृगं वा हन्तुं लभेय इति। अंधकारे तु तदा वारणस्य इव जले नर्दतः घोषं अश्रौषम्। ततः गजप्रेप्सुः दीप्तं शरं उद्धृत्य अपातयम्। तदा कस्य अपि व्यक्ता वाक् प्रादुरासीत् "कथं मद्विधस्य ऋषेः वधः विधीयते। न अहं मम जीवितक्षयं अनुशोचामि। अपि तु

मातरं च पितरं च अनुशोचामि ।"श्रुत्वा तां करुणां वाचं व्यथितस्य मे कराभ्यां सशरं चापं भुवि अपतत्। दुर्मनाः तं देशं गत्वा तत्र इषुणा हतं तापसं अपश्यम् । स तापसः मां उवाच । "मम पितुः अयं आश्रमः, इतः स्थानात् एकपदी एव केवलम् । त्वं तत्र गच्छ तं प्रसादय च । संकुपितः सः त्वां न शपेत । मां च विशल्यं कुरु।"ततः अहं बाणं उदहरम् । स तपोधनः सद्यः प्राणान् जहौ । अहं अपि यथा आख्यातं जलपूर्णं घटं आदाय आश्रमपथं गतः । तत्र अहं अपश्यं तस्य वृद्धौ अंधौ च पितरौ। मम पदशब्दं श्रुत्वा एव मुनिः अभाषत, " किं पुत्र चिरयसि ? आनय क्षिप्रं पानीयम् । कथं न अभिभाषसे? " इति । तदा मया तस्य पुत्रस्य मरणं निवेदितम्। असौ तदा उवाच माम्। " नय नौ तं एव देशं तथाविधं पुत्रं द्रष्टुं इच्छावः।" तत अहं एकः सभार्यं मुनिं तत्र नीत्वा पुत्रं अस्पर्शयम् । तौ पुत्रं स्पृष्ट्वा अस्य शरीरे निपेततुः। स मुनिः शोकसंतप्तः तदा मां आह-"हे राजन् ! मे शापात् त्वं एवं पुत्रशोकेनैव कालं गमिष्यासि ।" एवं मां शापं दत्त्वा तत् मिथुनं स्वर्गं अगात्। अद्य तत् पापं मया इदानीं स्मृतम् । तस्य पापकर्मणः एव अयं विपाकः ।

अब सुमंत्र दुःखी होकर आनंद रहित अयोध्याको चला। दौडते हुए सहस्रों मनुष्य सुमंत्रके पास दौडे और पूछने लगे कि "कहां हैं राम ?" ऐसा। सीता राम और लक्ष्मण गंगाके पार गये ऐसा जान कर "हा राम हा राम" ऐसा रोने लगे। उसने खिडकियों में गई स्त्रियोंका भी रोना सुना। राज घरमें प्रविष्ट हो दुखी राजाको देखा। जैसा कहा था (वैसा) रामका भाषण राजासे प्रणाम कर कहा। राजा तो उसे सुन भूमिपर गिरा। सब अंतःपुर तब दुखी हुआ। राम वनको भेजजानेपर छठी रात्रीको अर्धरात्रीके समय फिर पूर्व-समय किया हुआ दुष्कर्म स्मरण किया। और कौसल्यासे बोला। हे देवि ! जब तू अविवाहित थी और मैं युवराज था। तब वर्षाकाल प्राप्त हुआ था। अति सुखदायक उस कालमें सरयू नदीपर मैं गया। (इसलिये) कि मैं रात्रीके समय पानी पीने के लिये आये हुए भैंसे, हाथी या हिरन को मारने के लिये प्राप्त करूं। अंधकारमें तो तब हाथी के जैसा जलमें शब्द का आवाज सुना। तब हाथी की इच्छा करनेवाले (मैंने) तेज बाण उठाकर छोड दिया। तब किसकी भी स्पष्ट वाणी मैंने सुन ली। "कैसे मेरे जैसे ऋषिका वध किया-जाता है। नहीं मैं अपने जीवित के नाशके लिये शोक करता हूं, परंतु माता और पिताके लिये शोक करता हूं।" सुन कर वह करुणामयी वाणी, दुखी हुए मेरे हाथोंसे बाण सहित

धनुष्य भूमिमें गिरगया। दुखी बन उस देशको जा वहां बाण से ताडित तापसीको देखा। वह तापस मुझसे बोला– "मेरे पिताका यह आश्रम इस स्थानसे एक कदम ही केवल है। तू वहां जा और उसे प्रसन्न कर। क्रोधित होनेपर वह तुझे शाप न दे। मुझे शल्यरहित कर" तब मैंने (उसके शरीरसे) बाण निकाला। उस तपस्वीने उसीक्षण प्राण छोड दिये। मैंने भी जैसा कहा था जल का घडा लेकर आश्रमके मार्गसे गया। तब मैंने देखा उसके दोनों अंधे माता पिताको। मेरे पांव-का शब्द सुनकर ही मुनिने भाषण किया–" क्यों पुत्र! देरी करता है? ला जलदी पानी। कैसे नहीं बोलते हो?" ऐसा। तब मैंने उसके पुत्रका मरण सुनाया। वह तब बोला मुझसे "ले जा हम (दोनों को उसी देश) को, वैसे पुत्र को देखनेकी इच्छा करते हैं।" तब मैं अकेलेने पत्नीके समेत मुनिको वहां लेकर पुत्रसे स्पर्श कराया। वे (दोनों) पुत्रसे स्पर्श कराकर इसके शरीरमें गिरे। वह मुनि शोकसे संतप्त तब मुझे बोला- "हे राजा! मेरे शापसे तू इसी प्रकार पुत्र शोकसे मृत्युको प्राप्त करेगा।" इस प्रकार मुझे शाप देकर वह जोडा स्वर्ग को गया। आज उस पापको मैंने अब स्मरण किया। उस पापकर्म का ही यह परिणाम है।"

समास ।

द्वन्द्व समास — सीतारामलक्ष्मणाः (सीता च रामश्च लक्ष्मणश्च)

तत्पुरुष — [नञ्तत्पुरुष] = १ अयोध्या (न योध्या) २ अनूढा (न ऊढा) ॥ [तृतीया तत्पुरुष] = १ शोकसंतप्तः (शोकेन संतप्तः) ॥ [षष्ठीतत्पुरुष] = १ गंगापारः । (गंगायाः पारः) । २ राजवेश्म (राज्ञः वेश्म) । ३ रामवचनं (रामस्य वचनं) । ४ जीवितक्षयः (जीवितस्य क्षयः) ॥ ५ पदशब्दः (पादयोः शब्दः) । ६ पुत्रशोकः (पुत्रस्य शोकः) ॥ [सप्तमीतत्पुरुष] = १ वातायनगता (वातायने गता)

१ पर्णशाला – पर्णानां शाला । २ देवयजनं– देवानां यजनं ।
३ पुरविप्रवासः- पुरात् वि-प्रवासः ।

निम्न लिखित समासोंको खोलने का यत्न कीजिये–

द्वंद्वसमास – फलपुष्पे ।
नञ्तत्पुरुष – असेवितः ।
तृतीयातत्पुरुष–हरिकृतः ।
चतुर्थीतत्पुरुष–जनहितम् ।
पंचमीतत्पुरुष – नगरविप्रवासः ।
षष्ठीतत्पुरुष – पत्रशाला । देवयजनं ।

पाठ ५

बहुव्रीहि समास ।

बहुव्रीहि समास के मुख्य सात भेद हैं ॥ १ द्विपद बहुव्रीहि २ बहुपदबहुव्रीहिः, ३ संख्योत्तरपद बहुव्रीहिः, ४ संख्योभयपद बहुव्रीहिः, ५ सहपूर्वपद बहुव्रीहिः, ६ व्यतीहारलक्षणो बहुव्रीहिः, ७ दिगंतराललक्षणो बहुव्रीहिः ।

द्विपद बहुव्रीहि के भी फिर छः भेद हैं। इनके उदाहरण ये हैं—

१ द्वितीया बहुव्रीहिः ।

१ प्राप्तोदकः = प्राप्तं उदकं यं सः प्राप्तोदकः (ग्रामः) = जिसे उदक प्राप्त हुआ है ऐसा ग्राम ।

२ आरूढवानरः = आरूढः वानरः यं (वृक्षं) स आरूढवानरः (वृक्षः) = जिसपर वानर चढा है वह वृक्ष।

२ तृतीया बहुव्रीहिः ।

१ निर्जितकामः = निर्जितः कामः येन स निर्जितकामः (शंकरः) = काम पराजीत किया है जिसने वह ।

२ प्राप्तविद्यः = प्राप्ता विद्या येन । = प्राप्त की है विद्या जिसने ।

३ जितशत्रुः = जिताः शत्रवः येन । = पराजित किये हैं शत्रु जिसने ।

३ चतुर्थी बहुव्रीहिः।

१ उपनीतभोजनः = उपनीतं भोजन यस्मै। = पास रखा है भोजन जिसके लिये।

२ उपहृतधान्यः = उपहृतं धान्यं यस्मै। = लाया है धान्य जिसके लिये।

४ पंचमी बहुव्रीहिः।

१ निष्क्रांतजनः = निष्क्रांतः जनः यस्मात्। = चला गया है मनुष्यमात्र जहांसे (वह ग्राम)।

२ उद्धृतौदनं = उद्धृतः ओदनः यस्मात्। = उठा लिया है चावल जिससे (वह बर्तन)।

३ समाप्तजलः = समाप्तं जलं यस्मात्। = समाप्त हुआ है जल जिससे (ऐसा कूआ।

५ षष्ठी बहुव्रीहिः।

१ शुक्लपटः = शुक्लः पटः यस्य। = श्वेत है वस्त्र जिसका।

२ निलांबरः = नीलं अंबरं यस्य। = नीला है वस्त्र जिसका।

३ लंबकर्णः = लंबौ कर्णौ यस्य। = लंबे हैं कान जिसके (वह गधा)।

६ सप्तमी बहुव्रीहिः।

१ वीरपुरुषः = वीराः पुरुषाः यस्मिन्। = वीर हैं

पुरुष जिसके (ऐसा ग्राम)।

२ संचितजलं = संचितं जलं यस्मिन्। = इकट्ठा किया है जल जिसमें (ऐसा पात्र।)

३ बहुजनः = बहवः जनाः यस्मिन्। = बहुत हैं लोग जिसमें (ऐसा नगर।)

ये " द्विपद बहुव्रीहि " के उदाहरण हैं। बहुव्रीहि में विलक्षणता यह है कि जो पद उस समास में रहते हैं उनसे भिन्न ही अन्य पदार्थका बोध उन शब्दोंसे होता है। जैसा " पीतांबरः " शब्द है = (पीतं अंबरं यस्य) (पीतं) पीला है (अंबरं) वस्त्र जिस का वह पुरुष (कृष्ण, विष्णु आदि) पीतांबर शब्दसे बोधित होता है।

यह विशेषता पाठक स्मरण रखें और पूर्वोक्त समासों को पहचाननेका यत्न करें। अब अन्य बहुव्रीहियोंके उदाहरण यहां देते हैं -

बहुपद बहुव्रीहिः समासः।

पूर्वोक्त द्विपद बहुव्रीहि समासमें केवल दोही पद होते हैं। परंतु इसमें दो से अधिक पद होते हैं और इससे भी समास में दिखाई देनेवाले पदों द्वारा उनसे भिन्न अन्य पदार्थका ही बोध होता है। जैसा —

१ पराक्रमोपार्जितसंपत = पराक्रमेण उपार्जिता संपद् येन सः पराक्रमोपार्जितसंपद्। = पराक्रम द्वारा प्राप्त

की है संपत्ति जिसने वह (पराक्रमी शूर-पुरुष)।

२ बाहुबलनिर्जितशत्रुः = बाहुबलेन निर्जिताः शत्रवः येन सः बाहुबलनिर्जितशत्रुः । अपने बाहुबलसे पराजित किये हैं शत्रु जिसने वह (बली मनुष्य)।

३ अन्यायोपार्जितधनः ।=अन्यायेन उपार्जितं धनं येन सः अन्यायोपार्जितधनः । = अन्याय के मार्गसे प्राप्त किया है धन जिनसे वह (पापी मनुष्य)।

इसीप्रकार अन्यान्य उदाहरण पूर्ववत् ही समझने चाहिये। आशा है कि इस रीतिसे इस समासको पाठक पहचानलेगें। इसमें दो शब्दोंसे अधिक शब्द रहते हैं और सब शब्दोंद्वारा अन्यही पदार्थका बोध होता है।

संख्योत्तरपदबहुव्रीहिः समासः ।

इसमें दूसरा पद संख्यावाचक रहता है इसका उदाहरण देखिये –

१ उपदशाः = उप समीपे दशानां संति ये ते उपदशाः । = पास दस (पुरुषों) के हैं जो उनको उपदश कहते हैं।

इसीप्रकार " २ उपत्रिंश, ३ उपशत " आदि संख्योत्तर पद बहुव्रीहि समास होते हैं। इसके पश्चात् देखिये –

संख्योभयपंद बहुव्रीहिः ।

इसमें दोनों पद संख्यावाचक ही रहते हैं। जैसा –

१ द्वित्राः = द्वौ वा त्रयो वा = (दो वा तीन)

२ द्विदशाः = द्विरावृत्ता दश = (दोवार दस)

इस रीतिसे यह बहुव्रीहि समास होता है। इसके दोनों शब्द संख्या वाचक होते हैं। इसकारण इसकी पहचान अति सुगम है। अब देखिये –

सहपूर्वपद बहुव्रीहिः।

इस बहुव्रीहिमें "सह" साथ इस अर्थवाला शब्द प्रथम स्थानमें रहता है जैसा —

१ समूलः = मूलेन सह वर्तते इति समूलः = मूलके साथ रहनेवाला।

२ सपुत्रः = पुत्रेण सह वर्तते इति = लडकेके साथ रहता है जो।

३ सकेशः = केशैः सह भवति इति = बालोंके साथ होता है जो।

४ सखड्गः = खड्गेन सह अस्ति इति = तलवार के साथ होता है जो।

ये इस प्रकारके समास अतिसुगम हैं क्योंकि इनमें प्रारंभ में "स" या "सह" इस प्रकारके शब्द रहते हैं। अस्तु अब देखिये-

व्यतिहारलक्षणः बहुव्रीहिः।

इसमें उलट, पुलट, क्रम अथवा बदलेका भाव रहता है। इसके उदाहरण ये हैं –

१ केशाकेशि — केशेषु केशेषु गृहीत्वा इदं युद्धं प्रवृत्तं तत् केशाकेशि । — केशों को पकड पकडकर जो युद्ध होता है वह केशाकेशि है ।

२ दण्डादण्डि — दण्डैः दण्डैः प्रहृत्य इदं युद्धं प्रवृत्तं तत् दण्डादण्डि — लाठियों और सोटियोंसे प्रहार कर यह युद्ध हुआ, इसलिये उसका नाम दण्डादंडि है ।

अब एक बहुव्रीहि शेष है उसका नाम है –

दिगन्तराललक्षणः बहुव्रीहिः ।

इसमें दिशाओंका अवकाश बताया जाता है जैसा –

दक्षिणपूर्वा — दक्षिणस्याः पूर्वस्याश्च दिशोः यत् अंतरालं सा दक्षिणपूर्वा । — दक्षिण और पूर्व दिशाओं में जो अवकाश है उसका नाम " दक्षिणपूर्वा " है ।

ये सब समास सुगम हैं और पाठक यदि इस पाठका अभ्यास विचार और मनन पूर्वक करेंगे तो उनको बहुव्रीहि समासका ज्ञान इतने से ठीक प्रकार हो सकता है और उनको कोई कठिनता नहीं रहेगी ।

संस्कृत भाषामें बहुव्रीहि समासका उपयोग बहुत होता है । प्रयोग की दृष्टिसे तत्पुरुष समास और बहुव्रीहि समासही बहुत प्रयुक्त होते हैं । इस लिये पाठकोंको उचित है कि वे इनका उत्तम अध्ययन करें और संस्कृत भाषाके मन्दिरमें सुगमतासे प्रविष्ट हों ।

पाठ ६

इस पाठमें पूर्व पाठोंमें दी हुई रामायणकी कथा का संधियुक्त सरल संस्कृत दिया जाता है। यदि पाठकोंके पूर्व पाठ बन गये हों तो इस पाठके समझनेमें उनको कोई कठिनता नहीं रहेगी।

१

अभियाय च तमिंगुदीवृक्षं सभार्यः सलक्ष्मणो रामो रथादवातरत्। तत्र गुहो नाम निषादराजस्तस्य सखाऽऽसीत्। सोऽपि राममागतं श्रुत्वाऽमात्यैर्वृद्धैश्च परिवृतस्तत्र राममुपगतः। चीरवस्त्रधारी रामः सायं-संध्यां तत्रोपास्य लक्ष्मणेनाऽऽनीतं केवलं जलमेव भोजनार्थमाददे। वृक्षमाश्रित्य तत्रैव लक्ष्मणस्तस्थौ। धनुर्धरो गुहोऽपि सूतेन सह तत्रैव स्थितः। प्रभातायां शर्वर्यां राम उवाच — "तराम जान्हवीं" इति। रामलक्ष्मणौ सीतया सह गंगां जग्मतुः। प्राञ्जलिः सूतो धर्मज्ञं राममुवाच — "किमहमिदानीं करवाणि" इति। रामस्तं प्रत्युवाच—"राजानमभिवाद्य ब्रूयाः। नाऽहं न च लक्ष्मणोऽनुशोचति वनवासम्। चतुर्दशवर्षेषु निवृत्तेषु नः सर्वान् पुनरागतान्द्रक्ष्यसे" इति॥

" हे सुमंत्र ! राजानं मातरं कैकेयीमन्याश्च देवीः पुनः पुनरुक्त्वा, अथ कौसल्यां सीताया मम लक्ष्मणस्य च वचनादारोग्यं पादाऽभिवंदनं च ब्रूहि॥ कथय च। नाभिभविष्यति त्वां दुःखमस्मत्संतापजम्। भरतश्चाऽपि वक्तव्यो " यथा राजनि वर्तसे तथा सर्वासु मातृष्वविशेषतो वर्तेथाः । " एवं सूतं पुनः पुनः सांत्वयित्वा पश्चाद्गुहं वचनमब्रवीत्-"हे गुह ! इदानीं सजने वने मे वासो न योग्यः। निर्जने वने वासोऽवश्यं कर्तव्यः। अत आनय न्यग्रोधक्षीरम् " इति । गुहश्च राजपुत्राय तत् क्षिप्रं क्षीरमुपाहरत् । रामोऽपि तेन जटा अकरोत् । नदीतीरे स्थितां नावं दृष्ट्वा तत्र पूर्वं सीतामारोप्य ततः स्वयं सलक्ष्मण आरुरोह । ततः सा शुभा नौका शीघ्रं सलिलमत्यगात्। अन्यं तीरं संप्राप्य ते सर्वे नावं हित्वा प्रातिष्ठन्त। रामस्तदा लक्ष्मणमाह-"सौमित्रे! त्वमग्रतो गच्छ,सीता त्वामनुगच्छतु। अहं सीतामनुपालयन् पृष्ठतो गच्छामि । अस्माभिरन्योऽन्यस्य रक्षा कर्तव्या । वनवासस्य दुःखं वैदेह्यद्य वेत्स्यति । "

रामस्तां रात्रीं भरद्वाजाश्रमे सुखमवसत् । प्रातरुत्थाय महर्षिमभिवाद्य तावग्रे जग्मतुः। महर्षिश्च तेषां स्वस्त्ययनं चकार । तान्राज्ञ औरसान्पुत्रान्प्र-

स्थितान्प्रेक्ष्य, चित्रकूटस्य रम्यं पंथानमादिश्य. महर्षिन्यवर्तत। कालिंदीं नदीमासाद्य सद्यस्तितीर्षवश्चिंतामापेदिरे । ततस्तौ रामलक्ष्मणौ काष्ठसंघाटं सुमहाप्लवं चक्रतुः। लक्ष्मणः सीतायाः सुखमासनं चकार। तत्र रामो लज्जमानां तां सीतां प्लवं प्रथममध्यारोपयत । पश्चात्स्वयं लक्ष्मणेन सहारुह्य, प्लवमुत्सृज्य, अग्रेऽगच्छत् ।

२

रामः सीतामब्रवीत् " वैदेहि ! सर्वान्नगान्पुष्पितान्पश्य । नरैरनुपसेवितान्फलपुष्पैश्चाऽवनतान्बिल्वान्भल्लातकान्पश्य। नूनमत्र वयं शक्ष्यामाजीवितुम्। एष कोकिलः कूजति। शिखी तं प्रति कूजति। पश्येमं रम्यं चित्रकूटं यस्य काननेषु रंस्यामहे।" इति। रम्यं चित्रकूटमासाद्य तत्र वाल्मीकमभिवाद्योपविविशुः। महर्षिस्तान्पूजयामास। ततो रामो लक्ष्मणमब्रवीत् " लक्ष्मण ! रुचिरमावसथं कुरुष्वेति।" लक्ष्मणोऽपि पर्णशालां चक्रे। रामः स्नात्वा देवयजनमकरोद्विवेश च पर्णशालाम् । रम्यं चित्रकूटं, माल्यवतीं नदीं चासाद्य राघवो ननन्द। पुरविप्रवासस्य दुःखं जहौ च ।

३

अथ सुमंत्रो दुर्मना भूत्वा, निरानंदामयोध्यां प्रययौ। अभिधावन्तः सहस्रशो नराः सुमंत्रमभ्यद्रवन्पृच्छन्तश्च " क्व राम " इति। सीतारामलक्ष्मणा गंगापारं गता इति विज्ञाय च " हा राम हा राम " इति विचुक्रुशुः। स वातायनगतानां स्त्रीणां च परिदेवनां शुश्राव। राजवेश्म प्रविश्याऽऽतुरं राजानमपश्यत्। यथोक्तं रामवचनं राजानं प्रणिपत्य प्रत्यवेदयत्। राजा तु तच्छ्रुत्वा मूर्छितो भूत्वा भूमौ न्यपतत्। सर्वमंतःपुरं तदाऽऽविद्धम्। रामे वनं प्रव्राजितेऽथ षष्ठीं रजनीं अर्धरात्रे राजा पुनः पूर्वं कृतं दुष्कृतमस्मरत्। कौसल्यां चाऽब्रवीत्। देवि! यदा त्वमनूढाऽभवोऽहं च युवराजः। तदा प्रावृट्समयः प्राप्तः। अतिसुखे तस्मिन्काले सरयूं नदीमहमन्वगाम्। यदहं रात्रौ निपानेऽभ्यागतं महिषं गजं मृगं वा हन्तुं लभेयेति। अंधकारे तु तदा वारणस्येव जले नर्दतो घोषमश्रौषम्। ततो गजप्रेप्सुर्दीप्तं शरमुद्धृत्याऽपातयम्। तदा कस्यापि व्यक्ता वाक्प्रादुरासीत्- " कथं मद्विधस्यर्षेर्वधो विधीयते। नाऽहं मम जीवितक्षयमनुशोचामि। अपि तु मातरं च पितरं चाऽनुशोचामि। " श्रुत्वा तां करुणां वाचं

व्यथितस्य मे कराभ्यां सशरं चापं भुव्यपतत्। दुर्मनास्तं देशं गत्वा तत्रेषुणा हतं तापसमपश्यम्। स तापसो मामुवाच-"मम पितुरयमाश्रम; इतस्थानादेकपद्येव केवलम्। त्वं तत्र गच्छ तं प्रसादय च। संकुपितः स त्वां न शपेत्। मां च विशल्यं कुरु" ततोऽहं बाणमुदहरम्। स तपोधनः सद्यःप्राणाञ्जहौ। अहमपि यथाख्यातं जलपूर्णं घटमादायाऽऽश्रमपथं गतः। तत्राहमपश्यं तस्य वृद्धावन्धौ च पितरौ। मम पदशब्दं श्रुत्वैव मुनिरभाषत,-" किं पुत्र! चिरयसि? आनय क्षिप्रं पानीयम्। कथं नाभिभाषसे। इति।" तदा मया तस्य पुत्रस्य मरणं निवेदितम्। असौ तदोवाच माम्। "नय नौ तमेव देशं तथाविधं पुत्रं द्रष्टुमिच्छावः।" ततोऽहमेकः सभार्यं मुनिं तत्र नीत्वा पुत्रमस्पर्शयम्। तौ पुत्रं स्पृष्ट्वाऽस्य शरीरे निपेततुः। स मुनिः शोकसंतप्तस्तदा मामाह—"हे राजन्! मे शापात्त्वमेवं पुत्रशोकेनैव कालं गमिष्यसि।" एवं मां शापं दत्त्वा तन्मिथुनं स्वर्गमगात्। अद्य तत्पापं मयेदानीं स्मृतम्। तस्य पापकर्मण एवाऽयं विपाकः॥

पाठक इसका अभ्यास विशेष रीतिसे करें और कोई कठिनता उत्पन्न हुई तो पूर्वपाठ देखें।

पाठ ७

कर्मधारयसमासः।

कर्मधारय समासके सात भेद हैं इनके नाम और उदाहरण यहां देते हैं-

१ विशेषणपूर्वपद-कर्मधारयः।

इस में पहिला शब्द विशेषण होता है और दूसरा पद विशेष्य होता है जैसा—

१ कृष्णसर्पः— (कृष्णश्च असौ सर्पश्च)= काला सांप
२ नीलवस्त्रं — (नीलं च तत् वस्त्रं च)= नीला वस्त्र।
३ उष्णजलं — (उष्णं च तत् जलं च)= गर्म जल।
४ शीतोदकं—(शीतं च तत् उदकं च)= शीत जल।

इस में क्रमशः "कृष्ण, नील, उष्ण, शीत" ये शब्द गुणबोधक होनेसे विशेषण हैं और ये क्रमशः "सर्प, वस्त्र, जल, उदक" इन शब्दोंके गुण बता रहे हैं इसलिये ये विशेष्य हैं। इस प्रकार इस समास को पहचानना अति सुगम है।

२ विशेष्यपूर्वपद-कर्मधारयः।

पूर्वोक्त समास के विरुद्ध अवस्था इसमें होती है। इस में विशेष्य प्रथम होता है और विशेषण आगे रहता है अर्थात् पहिला शब्द विशेष्य और दूसरा विशेषण होता है। और

विशेषणका शब्द पहिले शब्दकी निंदा करनेके लिये प्रयुक्त हुआ होता है जैसा—

१ वीरभीतः = (वीरश्चासौ भीतश्च) =वीर होकर घबडाया हुआ।

२ धनेशार्थहीनः = (धनेशश्च असौ अर्थहीनश्च) धनेश होकर द्रव्यहीन।

ये इसके उदाहरण हैं। इसमें दूसरे शब्दद्वारा पहिले की निंदा हुई है।

२ विशेषणोभयपद-कर्मधारयः।

इसमें दोनों शब्द विशेषण ही होते हैं जैसा-

१ शीतोष्णं (शीतं च तत् उष्णं च) = शीत और उष्ण।
२ कृष्णशुक्लः=(कृष्णश्च असौ शुक्लश्च)= काला और श्वेत।

इस प्रकार के इस समासके उदाहरण हैं। इसमें सब शब्द विशेषणरूप होनेसे इसकी पहचान सुगम है।

४ उपमानपूर्वपद-कर्मधारयः।

इसमें उपमा दर्शानेवाला शब्द प्रथम स्थानमें होता है। इसके उदाहरण ये हैं—

१ शंखपांडुरः— (शंखवत् पांडुरः)= शंखके समान श्वेत।
२ घनश्यामः— (घन इव श्यामः)= मेघके समान श्याम।
३ मेघश्यामः— (मेघ इव श्यामः) = ,, ,, ,,

इसमें पहिला शब्द उपमा दर्शक है।

५ उपमानोत्तरपद-कर्मधारयः ।

इसमें उपमा दर्शक शब्द दूसरे स्थानमें रहता है जैसे—

१ पुरुषव्याघ्रः-(पुरुषः व्याघ्र इव)=वाघके समान पुरुष ।
२ नरसिंहः— (नरः सिंह इव) = सिंहके समान नर ।

इस प्रकारके समासोंमें उपमा दर्शक शब्द दूसरे स्थानमें रहते हैं । यहां पाठक पूर्व समास के साथ इसका भेद देखें और उसका स्मरण रखें ।

६ संभावनापूर्वपद-कर्मधारयः ।

इसके उदाहरण ये हैं—

१ गुणबुद्धिः —(गुण इति बुद्धिः) = गुण जैसी बुद्धि ।
२ पुत्रग्रहणं -(पुत्र इति ग्रहणं) = पुत्र करके ग्रहण करना ।

७ अवधारणापूर्वपद-कर्मधारयः ।

इसके ये उदाहरण हैं-

१ विद्याधनं -(विद्या एव धनं) = विद्या ही धन है ।
२ सुहृद्बन्धुः = (सुहृत् एव बंधुः) = मित्र ही भाई है।

इतने उदारण और इतने भेद देखने से पाठकोंके समझमें यह बात आगई होगी कि अर्थके अनुसार ही समास बनते हैं। और अर्थके अनुसारही समासों की पहचान होती है । यदि किसी को यह ज्ञान नहीं है कि "विद्याधन" का अर्थ क्या है तो वह उस समासको जानही नहीं सकेगा। अर्थात् संस्कृत भाषा के अंदर जैसा जैसा पाठकोंका प्रवेश होता जायगा, वैसा वैसा

उनको समासोंका अधिकाधिक बोध होता जायगा । पाठक यहां स्मरण रखें की यह बात एक दूसरेके आश्रयपर निर्भर है अर्थात् समासोंका ज्ञान होनेसे अर्थज्ञान हो जाता है और अर्थज्ञान होने से भी समासों के खोलने की विधि ज्ञात हो सकती है ।

अब इस पाठमें निम्न लिखित श्लोक पढिये—

स्कंद उवाच ।

मातरो हि भवत्यो मे भवतीनामहं सुतः ।
उच्यतां यन्मया कार्यं भवतीनामथेप्सितम् ॥१५॥

म. भारत. वन. अ. २३०

अन्वयः— हि भवत्यः मे मातरः, अहं भवतीनां सुतः। भवतीनां यथेप्सितं मया यत् कार्यं उच्यताम्।

अर्थ — क्यों कि आप मेरी माताएं हैं, मैं आपका पुत्र हूं । आपको (ईप्सितं) इष्ट जो कार्य मुझे करना हो वह कहिये ।

इन्द्रो दधाति भूतानां बलं तेजः प्रजाः सुखम् ।
तुष्टः प्रयच्छति तथा सर्वान्कामान्सुरेश्वरः ॥ ९ ॥

म. भारत. वन. अ. २२९ ।

अन्वयः — इन्द्रः भूतानां बलं तेजः प्रजाः सुखम् दधाति। तथा सुरेश्वरः तुष्टः सर्वान् कामान् प्रयच्छति।

अर्थः— इन्द्र भूतमात्रके लिये बल, तेज, संतान, सुख धारण करता है, तथा वही सुरोंका ईश्वर इन्द्र संतुष्ट हुआ तो सब मनोरथों को देता है।

ब्रह्म क्षत्रेण संसृष्टं क्षत्रं च ब्रह्मणा सह।
उदीर्णौ दहतः शत्रून्वनानीवाग्निमारुतौ ॥ १० ॥
म० भा० वन० २६

अन्वयः— ब्रह्म क्षत्रेण संसृष्टं, क्षत्रं च ब्रह्मणा सह संमिलितं, उदीर्णौ शत्रून् दहतः, अग्निमारुतौ वनानि इव।

अर्थ— (ब्रह्म) ब्राह्मण लोग (क्षत्रेण) क्षत्रिय लोगोंके साथ मिले हुए, तथा क्षत्रिय लोग ब्राह्मणोंके साथ संमिलित हुए तो, ये दोनों (उदीर्णौ) प्रकाशित होकर शत्रुओंको ऐसे जलाते हैं, जैसे अग्नि और वायु मिलकर वनोंको जलाते हैं।

यहां अग्नि शब्द ब्राह्मणका तेज और वायु शब्द क्षत्रियके बलका द्योतक है। वेदमंत्रोंमें अग्नि देवताके मंत्रोंसे ब्राह्मणोंका वर्णन तथा वायुदेवताके मंत्रोंसे क्षत्रियोंका वर्णन हुआ है। इस विषयका अनुसंधान पाठक यहां करें।

समास।

षष्ठीतत्पुरुष – सुरेश्वरः (सुराणां ईश्वरः) – देवोंका राजा

पाठ ८

अव्ययीभावसमासः ।

अव्ययी भाव समास के दो भेद हैं, एक का नाम (१) नामपूर्वपद अव्ययीभाव समास है और (२) दूसरे को अ-व्ययपूर्वपद अव्ययीभाव समास कहते हैं । इनके उदाहरण ये हैं—

(१) नामपूर्वपद-अव्ययीभाव-समासः ।

इस समासमें पहिला पद नाम होता है और दूसरा अव्यय होता है । देखिये-

१ फलप्रति -(फलस्य मात्रा) = फलका अंश ।

२ शाकप्रति-(शाकस्य मात्रा) साक का प्रमाण ।

इन समासों में पहिला पद " फल अथवा शाक" ये नाम हैं इस लिये इन समासोंका यह नाम है ।

(२) अव्ययपूर्वपद-अव्ययीभाव-समासः ।

इस समासमें पहिला पद अव्यय होता है और दूसरा नाम होता है । इसके उदाहरण ये हैं-

१ उपकुंभं -(कुंभस्य समीपे वर्तते इति) कुंभके पास रहता है ।

२ यथाक्रमं- (क्रमं अनतिक्रम्य वर्तते इति) = क्रमको न छोड कर रहता है ।

३ अनुवनं – (वनस्य समीपं इति)= बनके पास रहता है।

यह समास भाषामें बहुत ही प्रचलित है और स्थान स्थान में इसका प्रयोग होता है। पहचानने के लिये यह अत्यंत सुगम है। किंचितसा ध्यान पाठक देंगे तो उनको इसकी पहचान हो सकती है।

अब इस पाठमें निम्न लिखित श्लोकों का अभ्यास कीजिये—

वैशम्पायन उवाच।

निहते राक्षसे तस्मिन्पुनर्नारायणाश्रमम्।
अभ्येत्य राजा कौन्तेयो निवासमकरोत्प्रभुः ॥१॥

म. भा. वन. अ. १५८

संस्कृत टीका — तस्मिन् राक्षसे असुरे निहते निःशेषेण हते, पुनः पश्चात् कौन्तेयः कुंतीनंदनः प्रभुः राजा युधिष्ठिरः नारायणाश्रमं नारायणस्य आश्रमं प्रति अभ्येत्य आगत्य तत्रैव निवासं वास्तव्यं अकरोत्।

स समानीय तान्सर्वान्भ्रातृनित्यब्रवीद्वचः।
द्रौपद्या सहितान्काले संस्मरन्भ्रातरं जयम् ॥ २ ॥

स तान् सर्वान् निखिलान् भ्रातृन् द्रौपद्या सहितान् द्रौपद्या युक्तान् बंधून् समानीय सम्यक् आनीय काले समये भ्रातरं जयं विजयं अर्जुनं संस्मरन् इति वचः अब्रवीत्।

समाश्चतस्रोऽभिगताः शिवेन चरतां वने ।
कृतोद्देशः स बीभत्सुः पंचमीमभितः समाम्॥३॥

शिवेन सुखेन वने चरतां विचरतां अस्माकं चतस्रः समाः अभिगताः चत्वारि वर्षाणि व्यतीतानि । सः बीभत्सुः अर्जुनः पंचमीं समां पंचमं संवत्सरं वर्षं अभितः सर्वतः कृतोद्देशः कृतः उद्देशः येन सः अस्ति। पंचमे वर्षे आगमिष्यामि इति अर्जुनेन उक्तं अस्ति इति आशयः ।

प्राप्य पर्वतराजानं श्वेतं शिखरिणां वरम् ।
पुष्पितैर्द्रुमषण्डैश्च मत्तकोकिलषट्पदैः ॥ ४ ॥
मयूरैश्चातकैश्चापि नित्योत्सवविभूषितम् ।
व्याघ्रैर्वराहैर्महिषैर्गवयैर्हरिणैस्तथा ॥ ५ ॥
श्वापदैर्व्यालरूपैश्च रुरुभिश्च निषेवितम् ।
फुल्लैः सहस्रपत्रैश्च शतपत्रैस्तथोत्पलैः ॥ ६ ॥
प्रफुल्लैः कमलैश्चैव तथा नीलोत्पलैरपि ।
महापुण्यं पवित्रं च सुरासुरनिषेवितम् ॥ ७ ॥
तत्रापि च कृतोद्देशः समागमदिदृक्षुभिः ।
कृतश्च समयस्तेन पार्थेनाऽमिततेजसा ॥ ८ ॥
पंचवर्षाणि वत्स्यामि विद्यार्थीति पुरा मयि ।
अत्र गांडीवधन्वानमवाप्तास्त्रमरिंदमम् ॥ ९ ॥
देवलोकादिमं लोकं द्रक्ष्यामः पुनरागतम् ।

इत्युक्त्वा ब्राह्मणान्सर्वानामन्त्रयत पांडवः ॥१०॥
म० भा० वन० अ० १५८

पुष्पितैः द्रुमषण्डैः द्रुमाणां वृक्षाणां षण्डैः खंडैः, मत्तकोकिलषट्पदैः मत्तैः कोकिलैः षट्पदैः भ्रमरैः, मयूरैः चातकैः एतैः पक्षिभिः नित्योत्सवविभूषितम् नित्योत्सव इव विभूषितं शोभितं, व्याघ्रैः वराहैः सूकरैः महिषैः गवयैः हरिणैः तथा अन्यैः व्यालरूपैः भयानकैः श्वापदैः पशुभिः रुरुभिः रुरुनामकैः मृगविशेषैः निषेवितं निःशेषेण यथा भवति तथा सेवितं, फुल्लैः उत्फुल्लैः प्रफुल्लैः सहस्रपत्रैः शतपत्रैः उत्पलैः कमलैः प्रफुल्लैः कमलैः च तथा एव नीलोत्पलैः नीलकमलैः युक्तं, सुरासुरनिषेवितम् सुरैः असुरैः च निषेवितं, पवित्रं शुद्धं, महापुण्यं अतिपुण्यकरं, शिखरिणां शिखरयुक्तानां पर्वतानां वरं श्रेष्ठं, श्वेतं शुभ्रं,पर्वतराजानं पर्वतानां राजानं हिमाचलं प्राप्य, समागमदिदृक्षुभिः समागमं द्रष्टुं इच्छद्भिः, तत्र अपि कृतोद्देशः कृतवासः अर्जुनस्य समागमं दिदृक्षुभिः अस्माभिः अत्र एव वासः कर्त्तव्यः। तेन अमिततेजसा अपरिमिततेजसा पार्थेन पृथापुत्रेण अर्जुनेन पुरा मयि समयः निश्चयः कृतः यतः विद्यार्थी भूत्वा पंच वर्षाणि वत्स्यामि इति। अत्र एव देवलोकाद् इमं भूलोकं पुनः आगतं अरिन्दमं शत्रुनाशनं अवाप्तास्त्रं प्राप्तास्त्रं गांडीवधन्वानं अर्जुनं द्रक्ष्यामः। इति उक्त्वा पांडवः धर्मराजः सर्वान् ब्राह्मणान् आमंत्रयत स्वसमीपं आमन्त्रितवान्।

तत्पुरुषसमासाः ।

१ पर्वतराजा = पर्वतानां राजा । २ सुरासुरनिषेवितः = सुरासुरैः निषेवितः। ३ देवलोकः = देवानां लोकः। ४ द्रुमषंडाः =द्रुमाणां षंडाः ।

द्विगुसमासः ।

१ पंचवर्षाणि = पंच च तानि वर्षाणि ।

द्वंद्वसमासौ ।

१ कोकिलषट्पदाः = कोकिलाश्च षट्पदाश्च ।

२ सुरासुराः = सुराश्च असुराश्च ।

बहुव्रीहिसमासाः ।

१ कृतोद्देशः=कृतः उद्देशः येन।२ अमिततेजाः=अमितं तेजः यस्य । ३ अवाप्तास्त्रं = अवाप्तानि अस्त्राणि येन । ४ शतपत्रं =शतानि पत्राणि यस्य। ५ सहस्रपत्रं = सहस्राणि पत्राणि यस्य।

कर्मधारयसमासौ ।

१ मत्तकोकिलषट्पदाः = मत्ताः च ते कोकिलषट्पदाः ।
२ नीलोत्पलं = नीलं च तत् उत्पलं च ।

पाठक इन समासोंका उत्तम अभ्यास करें। स्वयं इस प्रकार इन समासोंको खोलनेका यत्न करें। समास किस रीतिसे बनते हैं और किस रीतिसे खोले जाते हैं इस बातका सूक्ष्मरीतिसे विचार करके पाठक इस समास प्रकरणका अध्ययन करेंगे तो उनको आगे जाकर कोई कठिनता नहीं होगी ।

पाठ ९

१ एकशेषसमासः ।

कई समास ऐसे हैं कि जिनके शब्दोंमेंसे एकही शब्द अव-शिष्ट रहता है। इसका नाम एकशेष समास है। इसके उदाहरण ये हैं—

१ हंसौ = (हंसी च हंसश्च) = हंसी और हंस पक्षी।
२ भ्रातरौ = (भ्राता च स्वसा च) = भाई और बहिन।
३ पुत्रौ = (पुत्रश्च दुहिता च) = पुत्र और पुत्री
४ पितरौ = (माता च पिता च) = माता और पिता।

इस प्रकारके प्रयोग संस्कृत में बहुत आते हैं। संस्कृत पुस्तकें पढतें पढते पाठक इसके साथ परिचित हो सकते हैं। ये समास बहुत सुगम हैं और इनमें किसी प्रकार भी कठिनता नहीं है।

२ अलुक्समासः।

पाठकोंने यह ध्यानसे देखा होगा कि इस समयतक जितने समास दिये गये हैं उनमें समास के अंदर के विभक्ति प्रत्यय का लोप हुआ है जैसा " सूर्यस्य किरणः " इस के " स्य " प्रत्ययका लोप होकर " सूर्यकिरणः" ऐसा समास बनता है। ऐसाही हरएक प्रकारके समासमें होता है, अर्थात् समास बनने के लिये बीचके प्रत्ययोंका लोप होना आवश्यक ही है।

परंतु अब ऐसे समास दिये जाते हैं कि जिनके मध्यके प्रत्यय का लोप नहीं होता। इसके उदाहरण अब देखिये—

१ दिविजः = (दिवि जातः) = द्युलोकमें उत्पन्न ।
२ युधिष्ठिरः = (युधि स्थिरः) = युद्धमें स्थिर।
३ शरदिजः = (शरदि जायते) = शरद् ऋतुमें उत्पन्न
४ मातरिश्वः = (मातरि श्वियते) = माताके अंदर रहता है।
५ जनुषान्धः = (जनुषा अन्धः) = जन्मसे अंध।
६ दूरादागतः = (दूरात् आगतः) = दूरसे आया।

यद्यपि इनके मध्यके विभक्ति प्रत्यय जैसेके वैसे रहते हैं तथापि इनको समासही कहते हैं। पाठक इस समास की इस विशेषताका स्मरण रखें। अब तद्धितवृत्ति का स्वरूप बताते हैं।

३ तद्धितवृत्तिः।

इसको वास्तविक तद्धित प्रत्ययांत शब्दही कहना योग्य है और इसी लिये इनकी गणना पूर्वोक्त मुख्य समासोंमें नहीं की जाती है। गौण दृष्टिसे ही इनको समास भी कहते हैं इनके उदाहरण ये हैं—

१ गुणवान् = (गुणः अस्य अस्ति) = गुण जिसके पास है।
२ धनवान् = (धनं अस्यास्ति) = धन ,, ,, ,,
३ धनी = (,, ,,) = ,, ,, ,, ,,
४ श्रद्धालुः = (श्रद्धा अस्य आस्ति) श्रद्धा ,, ,, ,,

५ दाशरथिः =(दशरथस्य अपत्यं) = दशरथका पुत्र ।
६ आरुणिः = (अरुणस्य ,,) = अरुणका ,,
७ वैनतेयः = (विनतायाः,,) = विनताका ,,
८ पटुतरः –(अतिशयेन पटुः) – अति प्रवीण ।
९ यशस्वी –(यशः अस्य अस्ति) - यश जिसका है
१० तुंदिलः -(प्रशस्तं तुंदं अस्य अस्ति) - बडे पेट वाला ।
११ पटुता -- (पटोः भावः पटुता) -- पटुत्व, प्रवीणता ।
१२ शैत्यं -- (शीतस्य भावः) -- शीतता ।
१३ मार्दवं -- (मृदोः भावः) -- मृदुता ।
१४ कौशलं -- (कुशलस्य भावः) – कुशलता ।
१५ नैपुण्यं -- (निपुणस्य भावः)- निपुणता ।

इस प्रकारके तद्धितवृत्तिके सैंकडों शब्द संस्कृतमें प्रयुक्त होते हैं इस लिये इनका अभ्यास करना अत्यावश्यक है । इसी प्रकार " उपपदवृत्ति " के भी बहुत प्रयोग होते हैं ।

उपपदवृत्तिः ।

इसमें मूल शब्दके साथ क्रियाका रूप विशेष प्रकारसे बनकर लगता है जैसे---

१ धनदः -- (धनं ददाति) -- धन देनेवाला ।
२ जलदः -- (जलं ददाति) -- जल ,, ,, ।
३ जन्मदः -- (जन्म ,,) -- जन्म ,, ,, ।

४ भूपः -- (भुवं पाति) -- भूमिका पालनेवाला ।
५ भूपालः--(भुवं पालयति) -- ,, ,, ।
६ कुंभकारः -- (कुंभं करोति) -- घडा बनानेवाला. ।
७ शस्त्रकृत् -- (शस्त्रं करोति) -- शस्त्र बनानेवाला.
८ वेदाध्यायी --(वेदं अधीते) - - वेदका अध्ययन करनेवाला।
९ भूभृत्--(भुवं बिभर्ति)--भूमिका धारण पोषण करनेवाला।

ये उपपद वृत्तिके रूप संस्कृतमें सहस्रशः प्रयुक्त होते हैं, इस लिये इनका अभ्यास आवश्यक है। आगे इन रूपोंके वारंवार देखनेसे पाठक इनको पहचान सकनेकी योग्यता प्राप्त कर सकते हैं।

५ कृद्वृत्तिः ।

जिस प्रकार पूर्व स्थानमें "तद्धितवृत्ति" वाले शब्द दिये हैं, उसी प्रकार "कृद्वृत्ति" वाले शब्दभी संस्कृतमें अनंत हैं, उनके कुछ उदाहरण यह दिये जाते हैं-- ।

१ कर्ता --(करोति इति) = करनेवाला ।
२ भर्ता --(बिभर्तीति) = भरण पोषण करने वाला।
३ हर्ता --(हरतीति) = हरण करनेवाला ।
४ गच्छत् --(गच्छतीति) = जानेवाला।
५ कुर्वन् --(करोतीति) = करनेवाला।
६ पश्यन् --(पश्यतीति) = देखनेवाला।

७ भोक्तव्यः –(भोक्तुं योग्यः) भोगने योग्य।
८ कर्तव्यः –(कर्तुं योग्यः) = करने योग्य।
९ दातव्यः –(दातुं योग्यः) = देने योग्य।
१० जिगमिषा–(गन्तुं इच्छा) = जानेकी इच्छा।
११ विवक्षा– (वक्तुं इच्छा) = बोलनेकी "
१२ पिपासा–(पातुं इच्छा) = पीनेकी "
१३ बुभुक्षा– (भोक्तुं इच्छा)-भोगनेकी इच्छा।
१४ अलंकरिष्णुः –(अलंकर्तुं इच्छुः)– अलंकार पहननेकी इच्छा करनेवाला.
१५ देयं – (दातुं योग्यं)–देने योग्य।
१६ लेख्यं – (लिखितुं योग्यं) –लिखने योग्य।
१७ गतवान्– (अगमत् इति)– गया हुआ।
१८ भृत्यः – (भर्तुं योग्यः)–भरण करने योग्य।
१९ स्तुत्यः– (स्तोतुं ,,)– स्तुति करने योग्य।
२० सुकरः – (सुखेन कर्तुं योग्यः)-सुखसे करने योग्य।
२१ दुर्लभः – (दुःखेन लब्धुं ,,)–दुःखसे प्राप्त करने योग्य
२२ दुर्दानं – (,, दातुं ,,)– ,, देने योग्य।
२३ ग्राही – (गृह्णातीति ग्राही) – जो ग्रहण करता है।
२४ तितीर्षुः– (तर्तुं इच्छुः) —पार जानेकी इच्छा वाला।
२५ चिकीर्षुः–(कर्तुं इच्छुः) –करनेकी इच्छा वाला।
पाठक इस प्रकार इन रूपोंका विचार समजलें।

पाठ १०

वैशम्पायन उवाच ।

ततो रजन्यां व्युष्टायां धर्मराजं युधिष्ठिरम् ।
भ्रातृभिः सहितः सर्वैरवंदत धनंजयः ॥१॥

म० भारत वन० अ० १६६

" ततः तत्पश्चात्, रजन्यां व्युष्टायां रात्र्यां गतायां, सर्वैः निखिलैः भ्रातृभिः बंधुभिः सहितः धनंजयः विजयः अर्जुनः, युधिष्ठिरं धर्मराजं, अवंदत वंदनं कृतवान् । "

एतस्मिन्नेव काले तु सर्ववादित्रनिःस्वनः ।
बभूव तुमुलः शब्दस्त्वंतरिक्षे दिवौकसाम् ॥ २ ॥

"एतस्मिन् एव काले अस्मिन् एव समये, तु अंतरिक्षे दिवौकसां देवतानां सर्ववादित्रनिः स्वनःसर्वेषां वादित्राणां शब्दः, तुमुलः महान्,बभूव अभवत् ।

रथनेमिस्वनश्चैव घण्टाशब्दश्च भारत ।
पृथग्व्यालमृगाणां च पक्षिणामिव सर्वशः ॥ ३ ॥

" हे भारत ! रथनेमिस्वनः रथस्य नाभिशब्दः चैव, तथाऽत्र घंटाशब्दः च घंटानां शब्दः च व्यालमृगाणां व्याघ्रमृगादीनां पक्षिणां इव च शब्दः सर्वशः बभूव । "

४ ब्रह्मचर्य। मूल्य १।)
५ योग साधन की तैयारी। मू० १)
६ योग के आसन। मूल्य २)
७ सूर्य भेदन व्यायाम। मूल्य ॥)

(४) धर्म शिक्षाके ग्रंथ।

(१) बालकोंकी धर्मशिक्षा। प्रथमभाग। मू०-)
(२) " " " द्वितीय " मू०=)
(३) वैदिकपाठमाला। मू०≡)

(५) स्वयं शिक्षक माला।

(१) वेदका स्वयं शिक्षक। प्रथमभाग। मू० १॥)
(२) " " " द्वितीय भाग। मू० १॥)

संस्कृत पाठ माला।

संस्कृत सीखनेकी सुगम रीति।

२४ भागोंका मूल्य ६) रु. और १२ भागोंका मूल्य ३॥) रु.

(६) आगम निबंध माला।

मुद्रक — श्रीपाद दामोदर सातवळेकर स्वाध्याय मंडल
भारतमुद्रणालय औंध (जि. सातारा)